रक्षा बलों में आरक्षण की मांग कर राहुल गांधी फैलाना चाहते हैं अराजकता : राजनाथ - 7

केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने कहा- एफटीए में डेयरी और एमएसएमई के हितों पर ध्यान - 10

न्यूयॉर्क का मेयर बनते ही ममदानी ने ट्रंप को आव्रजन के मुद्दे पर दी चुनौती- 11

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चौथे टी-20 मैच में गिल की निगाह बड़े स्कोर पर- 12

आज का मौसम

28.0⁰ अधिकतम तापमान

13.0⁰ न्यूनतम तापमान

सूर्योदय 06.27

सूर्यास्त 05.24

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार

बरेली

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

लखनऊ बरेली कानपुर मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रतिपदा 02:55 उपरांत द्वितीया विक्रम संवत 2082

गुरुवार, 6 नवंबर 2025, वर्ष 6, अंक 347, पृष्ठ 12+4 ■ मूल्य 6 रुपये

नई दिल्ली में विश्व कप विजेता भारतीय महिला टीम और ट्रॉफी के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी। ● एजेंसी

चैंपियन बेटियों से मिले प्रधानमंत्री

तीन हार के कठिन दौर से गुजरने के बाद दृढ़ता और शानदार वापसी के लिए सराहा

नई दिल्ली, एजेंसी

● खिलाड़ियों ने टूर्नामेंट के दौरान अपने अनुभवों को प्रधानमंत्री के साथ किया साझा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को विश्व कप विजेता भारतीय महिला क्रिकेट टीम से अपने निवास पर मुलाकात की। उन्होंने विश्व कप में लगातार तीन हार के कठिन दौर से गुजरने के बाद दृढ़ता और शानदार वापसी के लिए खिलाड़ियों की तारीफ भी की।

प्रधानमंत्री मोदी ने लगातार हार के बाद सोशल मीडिया पर हुई ट्रोलिंग के बारे में भी खिलाड़ियों से बात की और इतिहास रचने के लिए उनकी सराहना भी की। कप्तान हरमनप्रीत ने 2017 में ट्रॉफी के बिना मोदी से हुई मुलाकात को भी याद किया। उन्होंने कहा कि उम्मीद है कि अब वे और सफलता अर्जित करके आगे भी मिलते रहना चाहेंगे। उपकप्तान स्मृति मंधाना ने कहा कि प्रधानमंत्री ने उन्हें प्रेरित किया है और उन सभी के लिए प्रेरणास्रोत रहे हैं। भारत ने नवी मुंबई में खेले गए फाइनल में दक्षिण अफ्रीका को 52 रन से हराकर पहली बार आईसीसी खिताब जीता है। बातचीत के दौरान दीप्ति शर्मा ने प्रधानमंत्री को बताया कि वह 2017 से उनसे मिलने का इंतजार कर रही थी। प्रधानमंत्री ने उनके इंस्टाग्राम बायोडाटा पर जय श्रीराम और उनके हाथ पर हनुमान जी के टैटू का जिक्र किया तो दीप्ति ने मुस्कुराकर कहा कि इससे उन्हें ताकत मिलती है।

कप्तान हरमनप्रीत ने मोदी से पूछा, वह हर समय वर्तमान में कैसे रह पाते हैं

हरमनप्रीत ने पूछा कि वह हर समय वर्तमान में कैसे रह पाते हैं , इस पर पीएम ने कहा कि यह उनके जीवन का हिस्सा और आदत बन गई है। उन्होंने टीम के यादगार पलों का भी जिक्र किया जिसमें इंग्लैंड के खिलाफ 2021 में हरलीन देयोल का शानदार कैच शामिल है। मोदी ने मजाकिया लहजे में फाइनल में अमनजोत के कैच का भी जिक्र किया जो दो बार संभलने के बाद तीसरी बार में लपका था। कहा कि कैच लपकने से पहले गेंद दिख रही होगी लेकिन बाद में ट्रॉफी दिख गई होगी।

ब्रीफ न्यूज

नेटवर्क समस्या से एअर इंडिया की चेक-इन प्रणाली प्रभावित

नई दिल्ली। दिल्ली तथा देश के कुछ अन्य हवाई अड्डों पर बुधवार को टाटा समूह की विमान सेवा कंपनी एअर इंडिया की चेक-इन प्रणाली प्रभावित होने से यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ा। एअरलाइंस ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर बताया कि तीसरे पक्ष द्वारा प्रबंधित कनेक्टिविटी नेटवर्क की समस्या के कारण कुछ हवाई अड्डों पर चेक-इन प्रणाली प्रभावित हुई है। इसके कारण एअर इंडिया समेत कुछ विमान सेवा कंपनियों की उड़ानों में देरी हो रही है। जिसे बाद में ठीक कर लिया गया।

सीमा विवाद को लेकर हिंसक झड़प, कई घायल

भुवनेश्वर। ओडिशा के खुर्दा जिले में दो गांवों के निवासियों के बीच बुधवार को सीमा विवाद को लेकर हुई हिंसक झड़प में कई लोग घायल हो गए और तीन से चार दुकानों में आगजनी की गई। पुलिस ने यह जानकारी दी। यह घटना धारा 163 के तहत निषेधाज्ञा हटाए जाने के कुछ दिन बाद हुई। इस मुद्दे पर पहले भी हिंसा हो चुकी थी, जिसके बाद इस क्षेत्र में निषेधाज्ञा लागू की गई थी।

धमकाया, अवैध कब्जा किया तो खैर नहीं

सीएम योगी की माफिया को चेतावनी, कब्जामुक्त कराई जमीन पर बनाए गए फ्लैट परिवारों को सौंपे

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

● मुख्यमंत्री ने लाभार्थी परिवारों से की मुलाकात, उन्हें गृह प्रवेश का सामान किया भेंट

लखनऊ में महिला को फ्लैट का आवंटन पत्र सौंपते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ। ● अमृत विचार

अमृत विचार: धमकाया, अवैध कब्जा किया तो लेने के देने पड़ जाएंगे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने माफिया और उनके गुर्गों को इस चेतावनी के साथ दुर्बल आय वर्ग के 72 परिवारों को दिए फ्लैट की चाबी सौंपी। कार्तिक पूर्णिमा के मौके पर मुख्यमंत्री ने लखनऊ में माफिया से मुक्त कराई गई भूमि पर सरदार वल्लभभाई पटेल आवासीय योजना का लोकार्पण किया। जियामऊ, डालीबाग स्थित एकता वन में आयोजित समारोह में सीएम ने दुर्बल आय वर्ग के परिवारों को फ्लैट के आवंटन पत्र वितरित किए।

इस दौरान सीएम योगी ने कहा कि यह केवल आवास वितरण नहीं, बल्कि संदेश है कि माफिया से छीनी गई भूमि पर गरीबों का आशियाना बनेगा। उन्होंने कहा कि यह उन लोगों के लिए चेतावनी है जो माफिया को शागिर्द बनाते हैं, उनकी कब्र पर फातिहा पढ़ते हैं, वे गरीबों का शोषण करवाते हैं। अब यूपी में ऐसा नहीं चलेगा। योगी ने कहा कि अगर कोई गरीबों की जमीन पर कब्जा करेगा, अगर कोई सार्वजनिक भूमि पर अवैध कब्जा करके समाज को डराने-धमकाने का काम करेगा, तो लेने के देने पड़ जाएंगे। यह सरकार जनता के अधिकारों की रक्षा के लिए पूरी दृढ़ता के साथ खड़ी है। उन्होंने कहा कि यही नए भारत और नए उत्तर प्रदेश की पहचान है, जहां विकास के साथ धर्म, संस्कृति और परंपरा का संगम है।

मुख्यमंत्री ने लाभार्थी परिवारों से मुलाकात की, उन्हें गृह प्रवेश का सामान भेंट किया, नन्हीं बच्चियों को गोद में लेकर दुलार किया और चॉकलेट बांटी। इस दौरान आवास परिसर में सीएम योगी ने वृक्षारोपण भी किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि 8000 आवेदनों में 5700 आवेदन योग्य लोगों का था, इसमें से 72 को पहले आवंटन मिला है। मुख्यमंत्री ने सभी 72 लाभार्थियों को आवास की सुविधा मिलने पर उन्हें और उनके परिवारों को बधाई देते हुए कहा कि इन लोगों को अब अपना सिर उठाकर सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अवसर मिला है। यह प्रधानमंत्री आवास योजना से कवर होगा तो यह और सस्ता व लाभकारी होगा।

सभी जिलों में खुलेगा सरदार वल्लभभाई पटेल इंप्लॉयमेंट सेंटर

मुख्यमंत्री ने बताया कि प्रदेश के सभी 75 जिलों में सरदार वल्लभभाई पटेल इंप्लॉयमेंट सेंटर खुलेगा। क्लस्टर विकसित कर युवाओं के लिए स्किल डेवलपमेंट कर उनके लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार उपलब्ध कराए जाएंगे। जिससे नौजवान रोजी-रोटी की तलाश में बाहर न जाएं। वहीं, राज्यसभा सांसद और उप्र. के पूर्व डीजीपी बृजलाल ने यहां कहा कि आज मुख्यमंत्री योगी के नेतृत्व में वह माफियागिरी समाप्त हो चुकी है। कुछ अपराधी मारे जा चुके हैं, कुछ जेल में हैं, कुछ प्रदेश छोड़ भाग गए हैं और कुछ अब माला जप रहे हैं। योगी सरकार में कानून राज स्थापित हुआ है, इसलिए आज निवेशक भी उत्तर प्रदेश पर भरोसा कर रहे हैं। कभी जहां रंगदारी और अपहरण उद्योग चलता था, वहीं आज 40 लाख करोड़ से अधिक का निवेश आ रहा है।

महादेव सट्टेबाजी एप मामले में फरार आरोपी का पता लगाए ईडी

नई दिल्ली, एजेंसी

● सुप्रीम कोर्ट ने गंभीर नाराजगी जताई, कहा- यह अदालत के विवेक को झकझोरता है

शीर्ष कोर्ट ने ईडी को महादेव सट्टेबाजी ऐप के सह-संस्थापक रवि उप्पल का पता लगाने और उसे गिरफ्तार करने का निर्देश दिया है। वह दुबई से भागकर किसी अज्ञात स्थान पर चला गया है। न्यायालय ने कहा कि सफेदपोश अपराध के आरोपियों के लिए अदालतों और जांच एजेंसियों को खिलौना बनाने नहीं दिया जा सकता है।

न्यायमूर्ति एमएम सुंदरेश और न्यायमूर्ति सतीश चंद्र शर्मा की पीठ ने आरोपी उप्पल के कानून से बचने पर गंभीर नाराजगी जताई और कहा, यह अदालत के विवेक को झकझोरता है, अब कुछ करना ही होगा। बताया जाता है कि भारत में प्रवर्तन एजेंसियों से बच रहा उप्पल दुबई से किसी अज्ञात स्थान पर भाग गया है, जिसकी वजह से संयुक्त अरब अमीरात प्राधिकारियों ने उसकी प्रत्यर्पण प्रक्रिया रोक दी। न्यायालय ने कहा, ऐसे अपराधियों के लिए अदालतें और एजेंसियां खिलौना नहीं हैं। ईडी उसे जल्द खोजे और गिरफ्तार करे। शीर्ष अदालत उप्पल की याचिका पर सुनवाई कर रही थी जिसमें उसने छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के 22 मार्च के आदेश को चुनौती दी है। उच्च न्यायालय ने उसे रायपुर की निचली अदालत में लंबित धन शोधन मामले की सुनवाई में शामिल होने का निर्देश दिया था। ईडी की ओर से पेश अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू ने न्यायालय को बताया कि उप्पल 2023 में दुबई में हिरासत में था लेकिन अब वहां से भाग निकला है।

बिहार : पहले चरण का मतदान आज, कई दिग्गज मैदान में

पटना, एजेंसी

● तेजस्वी, सम्राट व विजय सिन्हा समेत 1,314 उम्मीदवार

बिहार विधानसभा चुनाव के पहले चरण के लिए गुरुवार को 121 सीटों पर मतदान डाले जाएंगे। इस चरण में कुल 3.75 करोड़ मतदाता 1,314 उम्मीदवारों की चुनावी किस्मत का फैसला करेंगे।

बिहार संग्राम

इस चरण में विपक्षी 'इंडिया' गठबंधन के मुख्यमंत्री पद के चेहरे तेजस्वी यादव और भाजपा के उम्मीदवार एवं उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी और विजय कुमार सिन्हा के साथ-साथ 16 मंत्रियों की किस्मत भी दांव पर है। राजद के नेता तेजस्वी यादव राघोपुर सीट से लगातार तीसरी जीत दर्ज करने की कोशिश में हैं। उनके मुख्य प्रतिद्वंद्वी भाजपा के सतीश कुमार हैं, जिन्होंने 2010 में जदयू के टिकट पर तेजस्वी की मां और पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी को पराजित किया था। जन सुराज पार्टी के नेता प्रशांत किशोर ने तेजस्वी के खिलाफ चुनाव लड़ने का ऐलान किया था, लेकिन बाद में मैदान में उतरने से परहेज किया, उनकी पार्टी ने चंचल सिंह को उम्मीदवार बनाया।

ट्रेन की चपेट में आने से 6 महिलाएं कटीं

मिर्जापुर। मिर्जापुर में चुनार रेलवे स्टेशन पर बुधवार को ट्रेन की चपेट में आने से छह महिलाओं की मौत हो गई। रेलवे के उत्तर मध्य रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी शशिकांत त्रिपाठी ने बताया कि दुर्घटना सुबह करीब साढ़े नौ बजे हुई जब यात्री 13309 चौपन प्रयागराज पैसेंजर ट्रेन से पटरी वाली तरफ उतर गए। उन्होंने कहा कि इस दौरान वे सामने से आ रही 12311 नेताजी एक्सप्रेस ट्रेन की चपेट में आ गए। त्रिपाठी ने बताया कि ये लोग कार्तिक पूर्णिमा स्नान के लिए यहां आए थे।

● मिर्जापुर में ट्रैक पार कर गंगा स्नान करने जा रही थीं तभी हुआ हादसा

आस्था की डुबकी

अमरोहा : कार्तिक पूर्णिमा पर तिगरी गंगा में स्नान करने को उमड़े श्रद्धालु। यहां करीब 40 लाख श्रद्धालुओं के स्नान करने का अनुमान है। ● अमृत विचार

यूपी बोर्ड : परीक्षाएं 18 फरवरी से, पहला पेपर हिंदी का

लखनऊ। एशिया के सबसे बड़े शिक्षा बोर्ड के रूप में शामिल उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद (यूपी बोर्ड) ने वर्ष 2026 की हाईस्कूल (10वीं) और इंटरमीडिएट (12वीं) बोर्ड परीक्षाओं की तिथि बुधवार को घोषित कर दी है। परिषद की सचिव भावना सिंह के स्तर से जारी आदेश के अनुसार, आगामी वर्ष की परीक्षाएं 18 फरवरी 2026 से प्रारंभ होकर 12 मार्च 2026 तक चलेंगी।

माध्यमिक शिक्षा परिषद, प्रयागराज द्वारा जारी आदेश में बताया गया है कि हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट दोनों परीक्षाएं दो पालियों में आयोजित की जाएंगी। पहली पाली सुबह 8:30 बजे से 11:45 बजे तक और दूसरी पाली दोपहर 2:00 बजे से शाम 5:15 बजे तक होगी। हाईस्कूल (कक्षा 10) की परीक्षा का पहला प्रश्नपत्र हिंदी का होगा, जो 18 फरवरी को पहली पाली में आयोजित किया जाएगा। इंटरमीडिएट (कक्षा 12) की परीक्षा का आरंभ भी 18 फरवरी को सामान्य हिंदी विषय से होगा। (विस्तृत पेज-2)

राजेंद्रनगर के करीम पहुंचे माउंट एवरेस्ट बेस कैंप, बने बरेली के पहले पर्वतारोही

कार्यालय संवाददाता, बरेली

● समुद्र तल से 5,364 मीटर की ऊंचाई करीब 150 किलोमीटर लंबा ट्रैक 12 दिनों में पूरा किया

करीम खान।

अमृत विचार: शहर के राजेंद्र नगर निवासी करीम खान ने अपने अदम्य साहस और मन में दृढ़ संकल्प लेकर माउंट एवरेस्ट बेस कैंप तक पहुंचने का सपना पूरा किया है। उनकी उपलब्धि ने बरेली का नाम रोशन किया है। यह उपलब्धि हासिल करने के साथ करीम शहर के पहले पर्वतारोही बन गए हैं।

करीम खान ने समुद्र तल से 5,364 मीटर (17,598 फुट) की ऊंचाई तक का लगभग 150 किलोमीटर लंबा ट्रैक 12 दिनों में पूरा किया। इस कठिन अभियान के दौरान तापमान माइनस 15 डिग्री सेल्सियस तक गिरा और ऑक्सीजन का स्तर मात्र 50 प्रतिशत रह गया। पूरे अभियान में लगभग दो लाख रुपये का व्यय हुआ। करीम के साथ अभियान में कुल 13 सदस्य शामिल थे, लेकिन बरेली से वे अकेले और पहले प्रतिभागी रहे। इससे पूर्व वे भारत में स्थित केदारकांडा शिखर (12,500 फीट) की चढ़ाई भी कर चुके हैं। इधर, बुधवार की रात फोन पर हुई बातचीत में करीम खान ने बताया कि वर्ष 2018 में माउंट एवरेस्ट बेस कैंप तक पहुंचने का सपना देखा था, जिसे वह अब पूरा कर सके। करीम ने बताया कि यह अनुभव मेरे जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है। वह अभी काठमांडू में हैं और 10 नवंबर को बरेली पहुंचेंगे। उन्होंने बताया कि 25 अक्टूबर को यात्रा शुरू की जो बुधवार को पूरी हुई। हिमालयन सोशल जर्नी ट्रैकिंग प्राइवेट लिमिटेड काडमांडू ने करीम खान के नाम एडवेंचर सर्टिफिकेट भी बुधवार को जारी किया।

गर्व के पल

अमेरिका के कई राज्यों के प्रमुख शहरों में हुए मेयर पद के लिए चुनाव

भारतवंशियों का परचम, ममदानी बने न्यूयॉर्क के मेयर

● सिनसिनाटी शहर में आफताब पुरेवैल दूसरी बार मेयर बने

न्यूयॉर्क, एजेंसी

जोहरान ममदानी

आफताब पुरेवैल

गजाला हाशमी

अमेरिका के कई राज्यों के प्रमुख शहरों में मंगलवार को मेयर पद के लिए चुनाव हुए जिनमें लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और अपने पसंदीदा नेता को चुना लेकिन सबसे दिलचस्प मुकाबला न्यूयॉर्क सिटी के मेयर पद के लिए हुए चुनाव में देखने को मिला जिसमें भारतीय मूल के जोहरान ममदानी ने विजयी होकर इतिहास रच दिया। वह अमेरिका के सबसे बड़े शहर के मेयर पद पर आसीन होने वाले पहले दक्षिण एशियाई और मुस्लिम व्यक्ति बन गए हैं। वहीं, सिनसिनाटी शहर में आफताब पुरेवैल भी दूसरी बार मेयर चुने गए। वर्जीनिया में गजाला हाशमी लेफ्टिनेंट गवर्नर चुनी गईं।

ममदानी ने 9,48,202 वोट (50.6 प्रतिशत) प्राप्त कर न्यूयॉर्क सिटी के मेयर का चुनाव जीता, जिसमें 83 प्रतिशत वोट पड़े। वह कई महीनों से न्यूयॉर्क सिटी के मेयर चुनाव की दौड़ में सबसे आगे थे और मंगलवार को उन्होंने रिपब्लिकन उम्मीदवार कर्टिस स्लिवा तथा दिग्गज नेता एवं न्यूयॉर्क के पूर्व गवर्नर एंड्रयू कुओमो को हराया, जो निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ रहे थे। कुओमो को चुनाव की पूर्व संध्या पर ही अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का समर्थन प्राप्त हुआ था। कुओमो को 7,76,547 वोट (41.3 प्रतिशत) मिले जबकि स्लिवा को 1,37,030 वोट मिले। उनकी प्रचार टीम ने कहा था, जोहरान ममदानी न्यूयॉर्क के कामकाजी वर्ग के लोगों के लिए जीवनयापन की लागत कम करने के वास्ते मेयर पद का चुनाव लड़ रहे हैं।

युवा नेता ममदानी को युवाओं और कामकाजी वर्ग के न्यूयॉर्कवासियों के बीच भरपूर समर्थन मिला, जो देश में कठिन आर्थिक और राजनीतिक माहौल के बीच महंगाई और नौकरी की असुरक्षा के बोझ तले दबे हुए हैं। भारतीय मूल के ममदानी प्रसिद्ध फिल्म निर्माता मीरा नायर और कोलंबिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर महमूद ममदानी के पुत्र हैं। उनका जन्म युगांडा के कंपाला में हुआ था और सात साल की उम्र में वह अपने परिवार के साथ न्यूयॉर्क सिटी आ गए थे।

ममदानी 2018 में ही अमेरिकी नागरिक बने थे। ओहायो के सिनसिनाटी शहर के मेयर पद के लिए भी मंगलवार को चुनाव हुए जिनमें डेमोक्रेट आफताब पुरेवैल ने रिपब्लिकन उम्मीदवार कोरी बोमैन को शिकस्त दी और इस पद पर अपना वर्चस्व बरकरार रखा।

अमृत विचार

बरेली , गुरुवार,6 नवंबर 2025

देव दीपावली पर लाखों दीपों से जगमगाए गंगा घाट

राज्य ब्यूरो, लखनऊ/वाराणसी

अमृत विचार : देव दीपावली की शुरुआत बुधवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने काशी के नमो घाट पर पहला दीप जलाकर किया। उनके साथ पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह, राज्य मंत्री रविन्द्र जायसवाल, विधायक डॉ नीलकंठ तिवारी, जिला पंचायत अध्यक्ष पूनम मौर्य, महापौर अशोक तिवारी ने भी दीप प्रज्वलित कर मां गंगा को नमन किया। इसके बाद सभी विशिष्ट अतिथियों ने क्रूज़ पर सवार होकर मां गंगा की आरती के साथ घाटों पर सजी देव दीपावली के अद्भुत नज़ारे का अवलोकन किया। देव दीपावली पर बुधवार की शाम काशी के अर्धचंद्राकार गंगा घाटों पर जब शाश्वत ज्योति की लौ

काशी में नमो घाट पर देव दीपावली की विधिवत शुरुआत करते मुख्यमंत्री योगी, साथ में मंत्री जयवीर सिंह व अन्य।

प्रज्वलित हुई, तो पूरा शहर दिव्यता और भव्यता के अद्भुत संगम में डूब गया। मां गंगा की गोद से निकलती आस्था की सीढ़ियों पर जलते लाखों दीपों की रोशनी ने ऐसा दृश्य प्रस्तुत किया, मानो स्वर्ग स्वयं धरती पर उतर आया हो। गोधूलि बेला में उत्तरवाहिनी गंगा की लहरों पर जब दीपों की सुनहरी आभा झिलमिलाई, तो काशी की आत्मा एक बार फिर सनातन संस्कृति की उजास से आलोकित हो उठी।

- नमो घाट पर मुख्यमंत्री ने प्रज्ज्वलित किया पहला दीप
- क्रूज पर सवार होकर योगी ने देखी गंगा आरती

योगी सरकार द्वारा इस बार 10 लाख दीपों का लक्ष्य रखा गया था, लेकिन जन सहभागिता से यह संख्या बढ़कर 15 से 25 लाख दीपों तक पहुंच गई। इन दीपों में 1 लाख गाय के गोबर से निर्मित पर्यावरण अनुकूल दीप भी शामिल थे। घाटों, तालाबों, कुंडों और देवालयों पर दीपों की श्रृंखला ने काशी को सुनहरी माला की तरह सजा दिया। गंगा पार की रेत पर कोरियोग्राफ और सिंक्रोनाइज ग्रीन क्रैकर्स शो ने पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

यूपी बोर्ड परीक्षा 2026 का कार्यक्रम जारी

लखनऊ,एजेंसी

एशिया के सबसे बड़े शिक्षा बोर्ड के रूप में शामिल उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद (यूपी बोर्ड) ने वर्ष 2026 की हाईस्कूल (10वीं) और इंटरमीडिएट (12वीं) बोर्ड परीक्षाओं की तिथि बुधवार को घोषित कर दी है। परिषद की सचिव भावना सिंह के स्तर से जारी आदेश के अनुसार आगामी वर्ष की परीक्षाएं 18 फरवरी 2026 से प्रारंभ होकर 12 मार्च 2026 तक चलेंगी।

इस बार परीक्षा कार्यक्रम पहले से ही घोषित कर दिया गया है, ताकि विद्यालयों और विद्यार्थियों को तैयारी के लिए पर्याप्त समय मिल सके। माध्यमिक शिक्षा परिषद, प्रयागराज द्वारा जारी आदेश में बताया गया है कि हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट दोनों परीक्षाएं दो पालियों में आयोजित की जाएंगी। पहली पाली सुबह 8:30 बजे से 11:45 बजे तक और दूसरी पाली दोपहर 2:00 बजे से शाम 5:15 बजे तक होगी। हाईस्कूल (कक्षा 10) की परीक्षा का पहला प्रश्नपत्र हिंदी का होगा, जो 18 फरवरी को पहली पाली में आयोजित किया जाएगा।

इसके बाद 19 फरवरी को प्रारंभिक हिंदी तथा संस्कृत, 20 फरवरी को सामाजिक विज्ञान और 21 फरवरी को गृहविज्ञान एवं सिलाई जैसी विषयों की परीक्षाएं होंगी। गणित, विज्ञान, कला, संस्कृत, संगीत और कंप्यूटर जैसे विषयों की परीक्षाएं क्रमशः मार्च के पहले सप्ताह तक संपन्न होंगी। अंतिम परीक्षा 12 मार्च 2026 को निर्धारित की गई है।

इंटरमीडिएट (कक्षा 12) की परीक्षा का आरंभ भी 18 फरवरी को सामान्य हिंदी विषय से होगा। अगले दिन यानी 19 फरवरी को भौतिक विज्ञान, भूगोल, गृहविज्ञान आदि विषयों की परीक्षा होगी।

20 फरवरी को समाजशास्त्र एवं कृषि विज्ञान, 23 फरवरी को अंग्रेजी, 24 फरवरी को जीवविज्ञान और गणित की परीक्षाएं होंगी। इसके अलावा 27 और 28 फरवरी को अर्थशास्त्र, संगीत, कृषि एवं पशुपालन से संबंधित विषयों की परीक्षाएं आयोजित होंगी। मार्च के पहले सप्ताह में वाणिज्य, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, शिक्षाशास्त्र और कंप्यूटर जैसे विषयों की परीक्षाएं संपन्न होंगी। यूपी बोर्ड ने यह भी निर्देश दिए हैं कि सभी जिला विद्यालय निरीक्षक इस कार्यक्रम को अपने स्तर पर व्यापक रूप से प्रचारित करें और विद्यालयों को इसकी प्रति उपलब्ध कराएं।

गौरतलब है कि वर्ष 2025 में यूपी बोर्ड की परीक्षाएं फरवरी के अंतिम सप्ताह में शुरू हुई थीं, जबकि इस बार कार्यक्रम को एक सप्ताह पहले घोषित किया गया है। बोर्ड का कहना है कि समय से पहले कार्यक्रम घोषित करने का उद्देश्य परीक्षा प्रक्रिया को और अधिक सुव्यवस्थित और पारदर्शी बनाना है।

न्यूज ब्रीफ

टीवी चैनल के लिए सपा के 89 प्रवक्ता घोषित

अमृत विचार, लखनऊ : टीवी चैनल में समाजवादी पार्टी का पक्ष रखने के लिए सपा ने राजधानी लखनऊ के लिए 17 प्रवक्ताओं के साथ कुल 89 प्रवक्ताओं की घोषणा कर दी है। पार्टी हाई कमान द्वारा प्रवक्ताओं की सूची जिलेवार जारी की गयी है। पार्टी प्रवक्ता के अनुसार, बिहार चुनाव के अलावा आगामी चुनाव और राजनीतिक गतिविधियों पर चर्चा के लिए अधिकृत प्रवक्ता घोषित किए गए हैं।

बिजली कर्मियों का 14 को ध्यानाकर्षण प्रदर्शन

अमृत विचार, लखनऊ : यूपीपीसीएल प्रबंधन द्वारा उपकेंद्रों के परिचालन और अनुरक्षण कार्य में तैनात लगभग 25 हजार आउटसोर्स कर्मचारियों की छटनी के विरोध में बिजली कर्मचारियों में रोष बढ़ता जा रहा है। इस मुद्दे सहित कई अन्य लंबित समस्याओं को लेकर निविदा संविदा कर्मचारी संघ 14 नवम्बर को प्रदेशभर में ध्यानाकर्षण प्रदर्शन करेगा। राजधानी में यह कार्यक्रम मध्यांचल वितरण निगम के एमडी कार्यालय के सामने आयोजित होगा। संघ के प्रदेश महामंत्री देवेंद्र कुमार पांडेय ने कहा कि पावर कार्पोरेशन प्रबंधन ने 18 सितम्बर को जारी अपने ही आदेशों की अनदेखी की है। छटनी के बाद उपकेंद्रों के लिए कर्मचारियों की नई तैनाती से संबंधित मानक समिति की रिपोर्ट पांच माह बाद भी उपलब्ध नहीं कराई गई है। उन्होंने बताया कि 55 वर्ष की आयु का हवाला देकर कर्मचारियों को हटाना पूरी तरह मनमाना कदम है। उन्होंने आगे कहा कि मीटर रीडरों को प्रति बिल 16 रुपये भुगतान नहीं किया जा रहा है। वहीं, स्मार्ट मीटर लगाए जाने पर उन्हें अन्य कार्यों में समायोजित करने के बजाय हटाया जा रहा है।

मृदा कार्ड से सुधरेगी मिट्टी की सेहत

अमृत विचार, लखनऊ : रबी फसलों के लिए खेतों की मिट्टी की उर्वरा शक्ति परीक्षण कराकर बढ़ाई जाएगी। इससे किसान मिट्टी में पोषक तत्वों व अन्य होने वाली कमियों की जानकारी करके उसकी पूर्ति करेंगे। मिट्टी के कुल 4,800 नमूने परीक्षण कराने का लक्ष्य रखा है। इसमें प्रत्येक विकास खंड की छह ग्राम पंचायत चिह्नित की हैं। इन पंचायतों के अंतर्गत कुल 100 नमूने लिए जाएंगे। सहायक निदेशक मृदा परीक्षण/कल्चर लखनऊ मंडल डॉ. मनमोहन लाल ने बताया कि विशेष अभियान के तहत विभाग ने चिनहट विकास खंड में 100 फीसद नमूने ले लिए हैं। इन सभी का परीक्षण करके 15 दिन में रिपोर्ट कार्ड किसानों को वितरित करेंगे। किसान खेतों में डीएपी व एनपीके का अधिक इस्तेमाल करते हैं। इससे मिट्टी को नुकसान पहुंचता है और कीट मित्र मरने से उर्वरा शक्ति कमजोर हो जाती है। ऑर्गेनिक कार्बन व नाइट्रोजन कम है। इससे उपज कम होती है और लागत ज्यादा आती है। सभी किसान मिट्टी का परीक्षण जरूर कराएं।

जौनपुर में सड़क दुर्घटना में दो लोगों की मौत

जौनपुर, एजेंसी : वाराणसी-लखनऊ राजमार्ग पर मंगलवार देर रात हुई सड़क दुर्घटना में दो लोगों की मौत हो गई। दुर्घटना जफराबाद थाना क्षेत्र के महारूपुर गांव के पास हुई। पुलिस के अनुसार, सुल्तानपुर का निवासी रामचल (36) वाराणसी से वाहन में माल लादकर लखनऊ जा रहा था, इस दौरान आधी रात के आसपास चालक को झपकी आने पर वाहन अनियंत्रित हो गया जहां सामने से आ रहे ट्रक से उसकी टक्कर हो गई। टक्कर के बाद रामचल की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। उसका सहायक जहूर अहमद मलिक (40) सामने से वाहन आता देख अपने वाहन से कूद गया और सिर के बल गिरने से उसकी भी मौत हो गई।

पहले पशुओं का चारा खाया, अब आए तो गरीबों का राशन खा जाएंगे

बिहार की चुनावी जनसभा में मुख्यमंत्री योगी ने विपक्ष पर कसा तंज

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : उत्तर प्रदेश में तमाम व्यस्तताओं के बीच मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बुधवार को भी बिहार विधानसभा चुनाव में प्रचार करने पहुंचे। योगी ने वहां भाजपा के विकास कार्यों को गिनाया तो राजद-कांग्रेस गठबंधन पर करारा प्रहार भी किया। मुख्यमंत्री सूचना परिसर लखनऊ से साझा की गई जानकारी के मुताबिक, योगी ने वहां कहा कि कांग्रेस व राजद झूठे वायदे कर रहे हैं, पहले यह पशुओं का चारा खाए, अब अवसर दिया तो गरीबों का राशन खा जाएंगे। योगी ने अपील की कि कांग्रेस-राजद की घोषणा पर विश्वास न करना, क्योंकि जो राम का नहीं, वह हमारे किसी काम का नहीं। जो रामद्रोही है, वह हमारा भी विरोधी है। रामद्रोही रामराज्य नहीं ला सकता, वह जंगलराज ही लाएगा।

योगी के मुताबिक, बिहार में आज एनआईटी, आईआईएम, एम्स, इंजीनियरिंग कॉलेज, मेडिकल कॉलेज आदि की लंबी श्रृंखला है। बिहार का नौजवान दुनिया में फिर से अपनी मेधा

बिहार में आयोजित चुनावी सभा में संबोधित करते मुख्यमंत्री योगी।

- बोले, ठगी की दुकान खोलकर चुनाव के बहाने आपके बीच आए हैं महागठबंधन वाले

जंगलराज फिर नहीं आने देना है : योगी

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि कांग्रेस व राजद ने बिहार के नागरिकों के सामने पहचान, बहन-बेटियों, व्यापारियों व उद्यमियों के सामने सुरक्षा का संकट खड़ा किया था तो किसानों को आत्महत्या के लिए मजबूर कर दिया। आज जो लोग घोषणाएं कर रहे हैं, वह लोग महागठबंधन बनाकर ठगी की दुकान खोलकर चुनाव के बहाने आपके बीच आए हैं, फिर से जंगलराज नहीं आने देना है।

की छाप छोड़ रहा है और बिहार के विकास में भी योगदान दे रहा है। 11 वर्ष में मोदी जी ने विकास व विरासत का सम्मान किया है। मुख्यमंत्री ने केंद्र सरकार की विकास योजनाओं को भी गिनाया।

योगी आदित्यनाथ ने कहा कि 2005 के पहले बिहार में अपराध, जातीय संघर्ष, माओवाद, नक्सलवाद था। यूपी-बिहार के नाम पर देश-दुनिया में सम्मान नहीं मिलता था। बिहार में लालू प्रसाद यादव के शासन में 60 से अधिक जातीय नरसंहार, 30 हजार से अधिक अपहरण हुए। व्यापारी, डॉक्टर, इंजीनियर, संभ्रांत व्यक्ति सुरक्षित नहीं थे। बिहार के 30-40 फीसदी लोगों की आबादी गोरखपुर व वाराणसी में है, क्योंकि उस समय जंगलराज था, लेकिन नीतीश बाबू के नेतृत्व में 20 वर्ष में सुशासन की सुदृढ़ नींव रखी गई। बिहार में रोड, रेल, एयर कनेक्टिविटी के साथ अब वाटरवे की कनेक्टिविटी बिहार से होते हुए यूपी को जोड़ रही है। किसानों के उत्पाद हों या बिहार का मखाना, जल मार्ग से दुनिया के बाजारों में पहुंचाया जा रहा है।

गुरु नानक देव के संदेश देश की सामाजिक व्यवस्था की नींव : योगी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बुधवार को सिख पंथ के संस्थापक एवं प्रथम गुरु श्री गुरु नानक देव जी महाराज के 556वें प्रकाश पर्व पर राजधानी लखनऊ के डीएवी कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए।

- 556वें प्रकाश पर्व पर सिख गुरुओं के सम्मान में मुख्यमंत्री ने शीश नवाया

इस दौरान उन्होंने सिख गुरुओं के सम्मान में अपना शीश नवाया और दर्शन किए। समारोह में कमेटी की ओर से मुख्यमंत्री का स्मृति चिन्ह और अंगवस्त्र भेंट कर स्वागत किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि गुरु नानक देव जी भारत के एक उच्च कोटि के आध्यात्मिक महापुरुष थे, जिन्होंने 500 वर्ष पहले समाज के संगठन, समानता और सेवा का जो संदेश दिया, वही आज भारत की सामाजिक व्यवस्था की नींव है।

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि उस काल में जब देश बाबर जैसे विदेशी आक्रांताओं की बर्बरता झेल रहा था, जब मंदिर तोड़े जा रहे थे, आस्था पर प्रहार हो रहे थे, तब भी गुरु नानक देव जी बिना भय, बिना दबाव समाज को मार्गदर्शन दे रहे थे। उन्होंने मिल-बांटकर खाने, गरीबों की मदद करने और एकजुट समाज बनाने का संदेश दिया।

गुरु नानक देव जी महाराज के प्रकाश पर्व पर लखनऊ में आयोजित समारोह के दौरान मुख्यमंत्री योगी को स्मृति चिन्ह व अंगवस्त्र भेंट करते सिख समुदाय के लोग।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर समाज में एकता और धर्म की मजबूती का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि आज जब कुछ क्षेत्रों में धर्मांतरण जैसी गतिविधियां दिखाई देती हैं, तो हमें सिख पंथ की मूल भावना- एकता, संगठन और सेवा को और सशक्त करना होगा।

मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि हम मजबूत रहेंगे, तो हर कोई हमारी आस्था का सम्मान करेगा। सिख गुरुओं और महापुरुषों का बलिदान हमारे लिए प्रेरणा है। कार्यक्रम के अंत में मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों को प्रकाश पर्व की हार्दिक बधाई दी।

बिहार में भाजपा को 30 सालों की सरकार का हिसाब देना है : अखिलेश

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा कि पूरे बिहार में इंडिया गठबंधन के पक्ष में बदलाव की बयार चल रही है। पूरा देश बिहार की तरफ देख रहा है। बिहार की जनता ने हमेशा देश को संदेश देने का काम किया है। बिहार में सरकार बदलेगी। इंडिया गठबंधन की सरकार बनेगी। तेजस्वी यादव मुख्यमंत्री बनेंगे। नयी सरकार में नौजवानों को नौकरी और रोजगार मिलेगा।

सपा प्रमुख ने बुधवार को बिहार में इंडिया गठबंधन के प्रत्याशियों के पक्ष में चार चुनावी जनसभा को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि इस चुनाव में बिहार की जनता केंद्र की भाजपा सरकार के 10 साल और प्रदेश की एनडीए सरकार के 20 सालों का हिसाब देगी। बिहार में भाजपा को 30 सालों की सरकार का हिसाब देना है। भाजपा ने बिहार को महंगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और पलायन के अलावा कुछ नहीं दिया है। भाजपा ने बिहार के बजट की लूट की है। बिहार का बजट बिहार के विकास पर खर्च होना चाहिए। बिहार से भाजपा का बंडलराज खत्म करना है।

अखिलेश यादव ने कहा कि बिहार के चुनाव में जनता के बीच तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री बनने को लेकर उत्साह है। तेजस्वी यादव सामाजिक न्याय के राज की स्थापना करेंगे। सभी को नौकरी और रोजगार मिलेगा, सभी को सम्मान और न्याय मिलेगा। हर घर को 200 यूनिट बिजली मुफ्त देंगे।

बिहार में मायावती की एंट्री, चुनावी सभा आज

अमृत विचार, लखनऊ : बिहार विधानसभा चुनाव के प्रचार अभियान में अब बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की मुखिया और उप्र. की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती की भी एंट्री हो गई है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और सपा प्रमुख अखिलेश यादव के बाद अब मायावती भी बिहार के रण में उतरने जा रही हैं। बसपा प्रमुख गुरुवार को कैमूर जिले के भभुआ में चुनावी जनसभा को संबोधित करेंगी। यह सभा भभुआ हवाई अड्डे के समीप आयोजित की जाएगी, जिसमें पड़ोसी जिलों और आसपास के विधानसभा क्षेत्रों से भी बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं और समर्थकों के पहुंचने की संभावना है। बसपा इस बार बिहार विधानसभा चुनाव अकेले अपने दम पर लड़ रही है और लगभग सभी सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारे हैं। पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक और मायावती के भतीजे आकाश आनंद, राज्यसभा सांसद व राष्ट्रीय कोऑर्डिनेटर रामजी गौतम, तथा अनिल सिंह सहित कई वरिष्ठ नेता लगातार बिहार में प्रचार अभियान में जुटे हुए हैं। बसपा की इस सक्रियता से चुनावी माहौल में नया उत्साह और सियासी हलचल बढ़ गई है। मायावती की भभुआ रैली बसपा के लिए बिहार में नए राजनीतिक समीकरणों की दिशा तय कर सकती है।

श्रमिकों की बेटियों के विवाह पर मिलेंगे 85 हजार रुपये

प्रदेश सरकार ने बढ़ाई कन्या विवाह सहायता राशि, आवेदन प्रक्रिया ऑनलाइन और निशुल्क

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : प्रदेश सरकार ने निर्माण श्रमिकों के हित में बड़ा निर्णय लिया है। राज्य के भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड द्वारा संचालित कन्या विवाह सहायता योजना में आर्थिक सहायता राशि में बढ़ोतरी की गई है। अब सामान्य विवाह के लिए 65 हजार रुपये, अंतर्जातीय विवाह के लिए 75 हजार रुपये और सामूहिक विवाह के लिए 85 हजार रुपये प्रति जोड़े की आर्थिक सहायता दी जाएगी। इसके अतिरिक्त 15 हजार रुपये आयोजन के लिए अलग से

- सामान्य विवाह पर 65,000 अंतर्जातीय पर 75,000 व सामूहिक पर 85,000 की मदद

उपलब्ध कराया जाएगा।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का मानना है कि श्रमिक परिवार समाज की रीढ़ हैं। उनकी बेटियों के विवाह में आर्थिक सहयोग देना सरकार का मानवीय कर्तव्य है। सरकार का प्रयास है कि कोई भी श्रमिक बेटी बिना चिंता के अपने जीवन का नया अध्याय शुरू कर सके। इसी क्रम में सामूहिक विवाह कार्यक्रमों की संपूर्ण व्यवस्था श्रम विभाग एवं बोर्ड द्वारा की जाएगी, ताकि श्रमिक परिवारों को किसी

प्रकार की असुविधा न हो। विवाह आयोजन में सुरक्षा, आवास, परिवहन और भोजन की सभी व्यवस्थाएं विभाग द्वारा सुनिश्चित की जाएंगी।

बोर्ड की सचिव पूजा यादव ने बताया कि भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड का उद्देश्य हर पंजीकृत श्रमिक तक योजनाओं का लाभ पहुंचाना है। कन्या विवाह सहायता राशि में वृद्धि से श्रमिक परिवारों को सीधा और ठोस लाभ मिलेगा। वर्तमान में 1.88 करोड़ से अधिक श्रमिक बोर्ड में पंजीकृत हैं।

पंजीकृत श्रमिक मात्र 20 रुपये एकमुश्त पंजीकरण शुल्क और 20 रुपये वार्षिक अंशदान देकर योजनाओं के पात्र बन सकते हैं। आवेदन प्रक्रिया पूरी तरह ऑनलाइन एवं निःशुल्क है। श्रमिक www.upbocwboard.in वेबसाइट या जन सेवा केंद्रों के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं।

नर्सिंग कॉलेजों की खाली सीटों पर होगी सीधी भर्ती

अमृत विचार, लखनऊ : नर्सिंग कॉलेजों में जीएनएम पाठ्यक्रम में दाखिले के लिए कॉलेज प्रशासकों को छूट मिल गयी है। कॉमन इंट्रेंस परीक्षा और काउंसिलिंग के माध्यम से सभी सीटें फुल न होने के बाद चिकित्सा शिक्षा विभाग ने छूट दी है। उप्र. स्टेट मेडिकल फैकल्टी के रजिस्टार डॉ.अनुराग श्रीवास्तव ने बताया कि जो अथ्यर्थी इंट्रेंस परीक्षा दिए हैं और दाखिला नहीं पाए हैं, उन्हें पुनः मौका मिलेगा। मालूम हो कि प्रदेश में आठ सरकारी और 450 निजी नर्सिंग कॉलेज हैं। इनमें कुल 20648 सीटों में अभी तक 5082 सीटें रिक्त हैं।

आयोजन | सरदार पटेल 150वीं जयंती समारोह अभियान के तहत 10 से विधानसभा क्षेत्र स्तर पर शुरू होंगी पदयात्राएं

यात्रा समापन तक साथ रहेंगे भाजपा के 1000 कार्यकर्ता

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : भारतीय जनता पार्टी सरदार पटेल 150वीं जयंती समारोह अभियान के तहत 10 नवंबर से विधानसभा स्तर पर प्रारंभ होने वाली पदयात्राएं प्रत्येक विधानसभा में 8 किलोमीटर की यात्रा तय करते हुए शहर, गली, गांव तक पहुंचेगी। भाजपा के 1000 से अधिक कार्यकर्ता यात्रा प्रारंभ स्थान से लेकर समापन तक साथ रहेंगे। इसके साथ ही विभिन्न सामाजिक संगठन, व्यापारी संगठन, एनजीओ, मजदूर, किसान, अधिवक्ता, शिक्षक, युवा तथा महिलाओं सहित

- पार्टी पदाधिकारियों ने तैयारी को लेकर किया वर्चुअल संवाद

विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले संगठन भी पदयात्रा में साथ चलेंगे।

भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री सुनील बंसल ने प्रदेश भाजपा अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी और प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह के साथ प्रदेश, क्षेत्र एवं जिला टीम के साथ बुधवार को वर्चुअल संवाद किया। सरदार पटेल 150वीं जयंती समारोह अभियान के तहत 10 नवम्बर से विधानसभा स्तर क्षेत्र पर प्रारंभ होने वाली पदयात्राओं की तैयारियों की समीक्षा के साथ प्रभावी कार्यक्रमों की कार्ययोजना पर चर्चा हुई। सुनील बंसल ने कहा कि पद यात्राओं में प्रत्येक 2 किलोमीटर पर पड़ाव रहेगा। इस तरह पूरी यात्रा के दौरान कुल 4 पड़ाव होंगे। प्रथम पड़ाव पर पौधरोपण के कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। द्वितीय पड़ाव पर किसी खिलाड़ी, साहित्यकार, सामाजिक कार्यकर्ता, व्यापारी नेता, अभिनेता, अधिवक्ता जैसे किसी विशिष्ट व्यक्ति का उद्बोधन होगा। जबकि तृतीय पड़ाव पर गायन, नाटक सहित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से सरदार पटेल के योगदान का मंचन किया जाएगा।

पार्टी नेताओं के साथ वर्चुअल संवाद करते धर्मपाल सिंह, साथ में अन्य।

मतदाता पुनरीक्षण अभियान में मुस्तैदी से जुटें

अमृत विचार, लखनऊ : भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह ने बुधवार को मतदाता पुनरीक्षण अभियान की बैठक को सम्बोधित करते कहा कि प्रत्येक कार्यकर्ता पदाधिकारी तथा जनप्रतिनिधि को अभियान में मुस्तैदी से जुटना है और हर गांव, हर घर, हर व्यक्ति तक पहुंचकर सभी पात्र लोगों का नाम मतदाता सूची में जुड़वाना है। धर्मपाल सिंह बाराबंकी में मंडल अध्यक्षों एवं विधानसभा संयोजको को सम्बोधित कर रहे थे।

आयुष्मान के क्लेम में मरीज व डॉक्टर के फोटो भी लगेंगे

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण (एनएचए) द्वारा आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (आयुष्मान भारत योजना) को डिजिटली सुदृढ़ बना दिया गया है। अब क्लेम प्रस्तुत करते समय अस्पतालों को मरीज और डॉक्टर की तस्वीरें पोर्टल पर अपलोड करना अनिवार्य कर दिया गया है। एनआईएचए (नेशनल इन्फॉर्मेशन हेड क्वार्टर एजेंसी) और एसआईएलए (सिस्टम इन्फ्रास्ट्रक्चर एंड लॉजिस्टिक एजेन्सी) ने इसे तकनीकी रूप से सशक्त बनाया है। सुरक्षा के उपायों से इन पोर्टल्स में सेंधमारी आसान नहीं होगी।

उप्र. में योजना संचालन की नोडल एजेंसी (स्टेट एजेंसी फॉर कॉम्प्रिहेंसिव हेल्थ एंड इंटीग्रेटेड) की मुख्य कार्यपालक अधिकारी अर्चना वर्मा ने बुधवार को बताया कि अब आयुष्मान भारत योजना से जुड़े सभी पोर्टलों पर आधार-

- धोखाधड़ी की रोकथाम के लिए ई-केवाईसी व बायोमेट्रिक सत्यापन अनिवार्य

आधारित ई-केवाईसी को अनिवार्य कर दिया गया है। इससे योजना में किसी भी प्रकार की धोखाधड़ी को रोकने में मदद मिलेगी। इसके अलावा पोर्टलों पर उपयोगकर्ताओं के पासवर्ड सुरक्षित रखने के अलावा बायोमेट्रिक सत्यापन भी लागू कर दिया गया है। जिससे पोर्टल्स पर दो-स्तर से सत्यापन और डेटा सुरक्षा में वृद्धि होगी। इसके अलावा उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण द्वारा आर्टिफिशियन इंटेलिजेंस तकनीकी का उपयोग कर अस्पतालों द्वारा प्रस्तुत दावों की पहचान की जाएगी। संदिग्ध कार्ड्स के भौतिक सत्यापन के लिए जिला अधिकारियों को भेजा जाएगा। मुख्य कार्यपालक अधिकारी अर्चना वर्मा ने बताया कि नियमों के सख्त होने से मरीजों को इलाज में गुणवत्ता और प्रामाणिकता मिलेगी।

न्यूज ब्रीफ

स्नेहा को 50 लाख की प्रोत्साहन राशि

देहरादून : मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने महिला क्रिकेट वर्ल्ड कप में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली उत्तराखंड की बेटी, अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेटर स्नेहा राणा से बुधवार को दूरभाष पर वार्ता की। मुख्यमंत्री ने स्नेहा राणा को भारतीय क्रिकेट टीम में चयन होने पर हार्दिक बधाई दी और वर्ल्ड कप टूर्नामेंट में उत्कृष्ट प्रदर्शन व भारत को विजय दिलाने के लिए शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री ने स्नेहा की उपलब्धियों और देश-प्रदेश का गौरव बढ़ाने पर उन्हें 50 लाख रुपये की प्रोत्साहन राशि देने की घोषणा की।

हाईटेंशन की चपेट में आकर तेंदुए की मौत

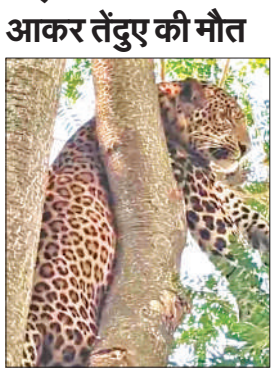

अमरोहा, अमृत विचार : एक तेंदुए की करंट लगने से मौत हो गई। तेंदुआ शिकार के लिए एक पेड़ पर चढ़ा था, तभी वह बिजली के तार की चपेट में आ गया। वन विभाग के अधिकारियों ने घटनास्थल का मुआयना किया। धनौरा क्षेत्र के गांव वंशगोपालपुर में बुधवार को खेत पर ग्रामीण काम करने के लिए जा रहे थे। इस दौरान उन्होंने पेड़ पर तेंदुए के शव को लटका देखा। तेंदुए को देखने के लिए आस पास के ग्रामीण पहुंच गए।

पीलीभीत के आढ़ती ने 8.84 लाख हड़पे

पीलीभीत, अमृत विचार : शहर के एक फल आढ़ती ने कश्मीर के सेब व्यापारी के 8.84 लाख रुपये हड़प लिए। जब व्यापारी तकादा करने के लिए पीलीभीत पहुंचा तो उससे अभद्रता कर धमकी देकर भगा दिया। कोतवाली पुलिस के अनसुना करने पर पीड़ित ने एसपी से शिकायत की है। कुलगाम (जम्मू कश्मीर) क्षेत्र के मटीवघ यारीपुरा निवासी परवेज अहमद ने एसपी से की शिकायत में बताया कि उनका सेब का व्यापार है। शहर के मोहल्ला शेर मोहम्मद के रहने वाला एक आढ़ती करीब दस साल से उनसे सेब खरीदता है। पिछले दो माह में आरोपी ने 3336 पेटी सेब की खरीद की थी लेकिन उसके रुपये नहीं दिए।

मेला ककोड़ा में उत्साह व उल्लास का अनोखा संगम

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

गंगा तट पर बच्चे का मुंडन कराती महिला।

अमृत विचार : सुप्रसिद्ध मिनी कुंभ मेला ककोड़ा में कार्तिक पूर्णिमा पर आस्था, श्रद्धा और भक्ति का महासागर उमड़ पड़ा। ब्रह्म मुहूर्त से ही श्रद्धालुओं का सैलाब पतित पावनी मां गंगा के तट पर पहुंचने लगा। हर-हर महादेव के जयघोषों से पूरा ककोड़ा धाम गूंज उठा। चारों दिशाओं में घंटियों की ध्वनि, भजन-कीर्तन और आरती की गूंज से वातावरण आध्यात्मिक हो उठा। लाखों की संख्या में श्रद्धालु मां गंगा में पवित्र स्नान कर अपने पापों से मुक्ति और मोक्ष की प्राप्ति की कामना करते दिखाई दिए। स्नान के बाद श्रद्धालुओं ने मां गंगा की पूजा-अर्चना, दीपदान और सूर्य को अर्घ्य दिया। परिवार की सुख-समृद्धि और कल्याण हेतु यज्ञ, कथा और भजन संकीर्तन का आयोजन हुआ।

बुधवार को कार्तिक पूर्णिमा के मौके पर मेला ककोड़ा में श्रद्धालुओं का उत्साह और उमंग का संगम देखने को मिला। कदम कदम पर गंगा मैया का जयघोष सुनाई दे रहा था। आज मुख्य स्नान पर्व पर पुलिस की सुरक्षा व्यवस्था भी अभूतपूर्व रही। गंगा घाटों पर अलख सुबह साधु संतों ने पतित पावनी में आस्था की डुबकी लगाई। उसके बाद कल्पवासी गंगा में स्नान करने को उतर गए। गंगा के शीतल जल ने श्रद्धालुओं में जोश भर दिया। दूर दराज से आए श्रद्धालुओं ने परिवार के साथ गंगा में स्नान किया। छोटे बच्चों के मुंडन कराए गए। स्नान घाटों पर भारी जनसैलाब देखने को मिला। गंगा की धार में पानी का बहाव भी तेज रहा जिससे सुरक्षा के इंतजाम भी किए गए। जगह जगह गोताखोर लगाए गए।

कार्तिक पूर्णिमा पर दिन भर चलता रहा स्नान के बाद दान पुण्य का सिलसिला, सीसीटीवी से होती रही निगरानी

20 लाख श्रद्धालुओं ने सरयू में लगाई डुबकी

अयोध्या कार्यालय।

अमृत विचार : कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर बुधवार को सरयू नदी के पावन तटों पर भक्तों का सैलाब उमड़ पड़ा। प्रशासनिक अनुमान के अनुसार लगभग 20 लाख श्रद्धालुओं ने पवित्र सरयू में आस्था की डुबकी लगाई। घाटों पर मंगलवार रात से ही भक्ति की लहर दौड़ने लगी, भोर में ब्रह्म मुहूर्त में स्नान का दौर शुरू हुआ। भीड़ का यह आलम था कि स्नान घाट से रामपथ होते हुए राम मंदिर व हनुमानगढ़ी जाने वाला मार्ग श्रद्धालुओं से पटा रहा। दिन भर स्नान, पूजन व दान का सिलसिला जारी रहा। सरयू घाट जय सरयू मइया व जय श्रीराम के उद्घोष से गूंजती रही।

सरयू तट के कच्चा व पक्का घाट के साथ लक्ष्मण घाट तक करीब दो किमी. की परिधि में सिर्फ श्रद्धालुओं की भीड़ ही नजर आ रही थी। भोर में भीड़ इस कदर हो गई कि पुलिस को घाट पर जाने वाले बैरियरों को गिराना पड़ा। हालांकि 10 बजे के बाद स्नानार्थियों की संख्या कुछ कम हुई। पवित्र सरयू में डुबकी लगाने के बाद दान-पुण्य का दौर चला। जिसमें ब्राह्मणों को दान, गरीबों को अन्न-वस्त्र वितरण और गोदान प्रमुख रहे। घाटों पर पंडों ने अपने शिविरों में अतिरिक्त व्यवस्थाएं कर रखी थी। वहीं, स्नान के बाद श्रद्धालुओं ने सबसे पहले नागेश्वरनाथ का रुख किया।

सरयू घाट से इस मंदिर के बीच में करीब 12 स्थानों पर बेरिकेडिंग की गई थी। श्रद्धालुओं को टुकड़ियों में मंदिर में प्रवेश दिया गया। गर्भगृह में मौजूद पुलिस भोलेनाथ पर जल चढ़ाने के बाद तत्काल श्रद्धालुओं को बाहर करती रही।

सरयू घाट के बाद सबसे श्रद्धालुओं का ज्यादा दबाव हनुमानगढ़ी पर रहा। यहां भोर से ही श्रद्धालु स्नान के बाद पहुंचने लगे। मंदिर परिसर से रामपथ तक करीब एक किमी. की दूरी तक श्रद्धालुओं की कतार लगी रही।

कार्तिक पूर्णिमा पर तिगरी गंगा धाम में स्नान को उमड़े लाखों श्रद्धालु

गंगा में स्नान करते समय अठखेलियां करती युवतियां। ● अमृत विचार

गजरौला, अमृत विचार : कार्तिक पूर्णिमा पर लाखों श्रद्धालुओं ने तिगरी गंगा धाम और ब्रजघाट गंगा में आस्था की डुबकी लगाई। प्रशासनिक अनुमान के मुताबिक करीब 40 लाख श्रद्धालुओं ने गंगा स्नान किया। इस दौरान गंगा घाट श्रद्धालुओं से भरे रहे। आसपास के दूसरे जिलों और राज्यों से भी यहां पहुंचे श्रद्धालुओं ने गंगा स्नान कर हर-हर गंगे के जयकारे लगाए। सूर्य को अर्घ्य देकर परिवार और समाज में सुख-शांति एवं समृद्धि की कामना की। कार्तिक पूर्णिमा पर तिगरीधाम और ब्रजघाट में लाखों श्रद्धालु गंगा स्नान करते हैं। श्रद्धालुओं ने मंगलवार की देर रात से ही तिगरी और ब्रजघाट पंहुचना शुरू कर दिया था। श्रद्धालुओं ने बुधवार को तड़के से हर-हर गंगे के जयकारों के साथ स्नान करना शुरू किया। दिन निकलने से पहले ही गंगा घाट श्रद्धालुओं से भर गए। पांव रखने तक की जगह नहीं रही। दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान समेत कई राज्यों व प्रदेश के अन्य जिलों से पहुंचे श्रद्धालुओं ने गंगा स्नान कर सूर्य देव को अर्घ्य दिया। इस दौरान श्रद्धालुओं ने परिवार और समाज में सुख-समृद्धि एवं शांति की कामना की। देवी मंदिरों में देवी-देवताओं के दर्शन कर बेसहारा लोगों को भोजन कराया। बहुत से श्रद्धालुओं ने गंगा किनारे अनुष्ठान भी करवाए। प्रशासन ने कार्तिक पूर्णिमा पर लगभग 40 लाख श्रद्धालुओं के गंगा स्नान करने का अनुमान जताया है। वहीं बृजघाट में भी लाखों की संख्या में श्रद्धालुओं ने गंगा स्नान किया।कार्तिक पूर्णिमा पर गंगा घाटों के किनारे युवाओं ने जमकर मस्ती की। गंगा स्नान करने के बाद युवा घाटों के किनारे रेत पर बैठ गए।

दरोगा ने बसपा नेता को पीटकर छत से फेंका, अस्पताल में मौत

तिलहर के गांव में बेटे को पकड़ने गई थी पुलिस, दरवाजा तोड़ घर में घुसने का आरोप

संवाददाता तिलहर/शाहजहांपुर

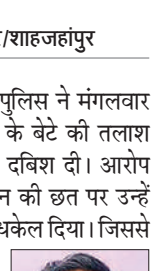

सत्यभान।

मृतक की पत्नी रोते रोते बेहोश हो गई।

अमृत विचार : पुलिस ने मंगलवार शाम बसपा नेता के बेटे की तलाश में उसके घर पर दबिश दी। आरोप है दरोगा ने मकान की छत पर उन्हें पीटा और छत से धकेल दिया। जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए।

उन्हें इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज लाया गया जहां उनकी मौत हो गई। मृतक की पत्नी की तहरीर पर दरोगा राहुल सिसौदिया और एक अन्य साथी पर गैर इरादन हत्या की रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। वहीं मरने से पहले बसपा नेता का वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें वह दरोगा पर मारपीट और छत से फेंकने का आरोप लगा रहे है।

● पत्नी ने थाने में दरोगा समेत एक सिपाही पर दर्ज कराई रिपोर्ट

सत्यभान कटरा नंबर तीन से बसपा के जोन प्रभारी थे।

तिलहर थाना क्षेत्र के गांव मौजमपुर निवासी रेखा देवी पत्नी सत्यभान ने बताया उसके पुत्र अभिषेक के खिलाफ धारा 307 के तहत अमन शुक्ला, पिंकी शुक्ला, रमनपाल, रामगोपाल निवासी निजामगंज थाना तिलहर ने मुकदमा दर्ज कराया था। मंगलवार शाम 7:30 बजे दरोगा राहुल सिसौदिया अपने एक साथी के साथ बाइक से आए। आरोप है दरोगा और उसके साथी ने दरवाजा तोड़कर घर में घुस गए और बेटे अभिषेक के बारे में पूछा। इसके बाद दोनों लोग छत पर चढ़ गए। आरोप है दरोगा और उसके साथी ने उनके पति सत्यभान सिंह (47) को पकड़ लिया और जाति सूचक शब्द कहते हुए मारने पीटने लगा था। मामले को लेकर बसपा नेता एफआईआर के लिए अधिकारियों से भिड़े रहे। बसपा नेताओं और मृतक के परिवार वालों ने कहा कि रिपोर्ट दर्ज नहीं हुई तो अस्पताल गेट पर जाम लगा देंगे। पुलिस अधिकारी वरिष्ठ अधिकारियों से बराबर फोन पर बात करते रहे। आखिर में रिपोर्ट दर्ज करने के आदेश हुए। बसपा नेताओं ने प्रदेश अध्यक्ष विश्वनाथ पाल को घटना से अवगत करा दिया था।

पीलीभीत में लाइव शो के दौरान युवतियों के बीच हुई मारपीट

पीलीभीत, अमृत विचार : ड्रमंड कॉलेज में मंगलवार रात आयोजित मेले में उस वक्त अफरातफरी मच गई जब गायक गुलजार के लाइव शो के दौरान युवतियों में मारपीट हो गई। इससे हड़कंप मच गया। मारपीट का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होते ही हड़कंप मच गया।

शहर के ड्रमंड राजकीय इंटर कॉलेज में एक निजी संस्था द्वारा आयोजित मेले में मंगलवार रात गायक गुलजार के शो के दौरान माहौल अचानक बिगड़ गया। युवतियों के दो गुटों में कहासुनी के बाद जमकर मारपीट हो गई। चंद ही मिनटों में मंच के पास अफरातफरी मच गई। वहां मौजूद पुलिसकर्मियों ने शांत कराया। घटना का वीडियो देर रात सोशल मीडिया पर वायरल हो गया, जिसके बाद सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल उठने लगे हैं।

पत्नी की मौत के बाद पति की भी हार्ट अटैक से जान गई

अमेठी, एजेंसी

● अमेठी में पति-पत्नी की एक साथ उठेगी अर्थी

अमेठी के जायस क्षेत्र में बुधवार को गर्भवती पत्नी की मौत के वियोग में पति की हृदय गति रुक जाने से मृत्यु हो गयी। अब पति और पत्नी की एक साथ अर्थी उठेगी। एक वर्ष पूर्व ही दोनों का विवाह हुआ था। जानकारी के अनुसार जिले के जायस थाना क्षेत्र के मोहल्ला निखई निवासी 20 वर्षीय ज्योति गर्भवती थी। मंगलवार दोपहर बाद ज्योति को प्रसव पीड़ा हुई। परिजनों ने उसे तत्काल संयुक्त जिला अस्पताल गौरीगंज में इलाज के लिये भर्ती कराया जहां चिकित्सकों ने इलाज के बाद हालात नाजुक देख कर युवती को एम्स रायबरेली रेफर कर दिया।जहां पहुंचने पर डॉक्टरों ने ज्योति को मृत घोषित कर दिया। बुधवार दोपहर बाद ज्योति के पति आकाश (22) की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। मृतक के पिता सत्य प्रकाश और भाई अनिल ने बताया कि आकाश अपनी पत्नी की मौत के बाद से सदमे में था। उनकी मौत हृदयगति रुकने से हुई है। आकाश पांच भाई-बहनों में चौथे नंबर पर थे। नगर की एक दुकान पर काम करते थे। उनका विवाह पिछले वर्ष ही हुआ था। पति-पत्नी की एक साथ हुई मौत से परिवार पर दुखों का पहाड टूट पडा है। मृतक आकाश की मां तारावती का रो-रोकर बुरा हाल है। पूरे मोहल्ले में मातम पसरा हुआ है। दोनों शव घर में रखे हुए हैं। पूरे मामले में थानाध्यक्ष जायस अमरेंद्र सिंह ने बताया कि मामले की जानकारी है।अभी तक परिजनों द्वारा कोई सूचना नहीं मिली है।परिजनों की सूचना के अनुसार अग्रिम कार्यवाही की जाएगी।

तीर्थयात्रियों में हिंसक झड़प, 3 को गोली लगी

संवाददाता, देहरादून/मुजफ्फरनगर

● मुजफ्फरनगर जिले के पुरकाजी थाना इलाके में दो समूहों के बीच हुई झड़प

अमृत विचार : मुजफ्फरनगर जिले के पुरकाजी थाना इलाके में बुधवार को कार्तिक पूर्णिमा के मौके पर गंगा स्नान कर लौट रहे तीर्थयात्रियों के दो समूहों के बीच हुई झड़प में चार लोग घायल हो गए, जिनमें से तीन को गोली लगी है।

पुलिस के अनुसार, पुरकाजी थाना क्षेत्र के अंतर्गत दिल्ली-रुड़की गंगा नहर मार्ग पर कम्हेड़ा पुल के पास दो समूहों के बीच मामूली विवाद हुआ और फिर झड़प हो गई, जिस दौरान गोलियां चलीं। पुलिस क्षेत्राधिकारी (सीओ) डॉ. रविशंकर ने बताया कि गोलीबारी में चार लोग घायल हो गए, जिनकी पहचान उत्तराखंड के रुड़की थाना क्षेत्र के मोहम्मदपुर गांव के निवासी दीपांशु, आर्यन, विजय और अमित के रूप में हुई है। उन्होंने बताया कि इनमें तीन को गोली लगी है और उन्हें इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

रविशंकर के मुताबिक, पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और पूछताछ के लिए कई लोगों को हिरासत में लिया है। सीओ ने बताया कि आरोपियों की तलाश जारी है। उन्होंने कहा कि कि जब यह झड़प हुई, तब तीर्थयात्री कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर गंगा नदी में पवित्र स्नान करके लौट रहे थे।

अभिरक्षा में युवक की मौत, तीन पुलिस कर्मियों पर रिपोर्ट

गोंडा, एजेंसी: जिले में रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) की अभिरक्षा में एक युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। पुलिस ने बुधवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने बताया कि घटना के बाद बुधवार को मृतक के परिजनों और ग्रामीणों ने हंगामा किया जिन्होंने आरोप लगाया कि पूछताछ के दौरान आरपीएफ जवानों ने युवक को बुरी तरह पीटा और करंट लगाया। उसने बताया कि इस मामले में तीन पुलिसकर्मियों को नामजद करते हुए कोतवाली नगर थाने में प्राथमिकी दर्ज की गई है। पुलिस के मुताबिक, मोतीगंज थाना क्षेत्र के किनकी गांव निवासी संजय सोनकर (35) को मंगलवार को आरपीएफ ने मालगाड़ी से सरसों का तेल चोरी के एक मामले में पूछताछ के लिए हिरासत में लिया था।

50-60 साल से अपराध नहीं करने वाले बुजुर्गों के नाम हिस्ट्रीशीटर की सूची से हटाए

अलीगढ़, एजेंसी

अलीगढ़ पुलिस ने हिस्ट्रीशीटर की सूची से 70 साल से ज्यादा उम्र के ऐसे 130 लोगों के नाम हटा दिए हैं जिन्होंने लंबे अरसे से कोई अपराध नहीं किया है जिनमें 80 और 90 साल की आयु के बुजुर्ग भी शामिल हैं। पुलिस की हिस्ट्रीशीटर की सूची में नाम शामिल होने से इन बुजुर्गों को हर महीने थानों में हाजिरी देनी होती थी। पुलिस ने सोमवार को ऐसे लोगों के नाम हिस्ट्रीशीटर की सूची में से हटाने का फैसला किया। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) नीरज कुमार ने कहा कि सूची की विस्तृत समीक्षा के दौरान 80 और 90 साल से ज़्यादा उम्र के कई ऐसे लोगों के नाम सामने आए, जिन्होंने 50 या 60 साल से ज़्यादा समय से कानून का उल्लंघन नहीं किया है जिसके बाद उनके नाम हिस्ट्रीशीटर की सूची से हटाने का फैसला लिया गया। कुमार ने संवाददाताओं से कहा कि रिकॉर्ड की जांच करते समय, मुझे ऐसे मामले मिले जहां 1950 के दशक की शुरुआत में अपराध करने वाले लोगों को भी हर महीने थानों में रिपोर्ट करना पड़ता था। एसएसपी ने बताया कि अलीगढ़ ज़िले में लगभग 2,500 लोग हिस्ट्रीशीटर के रूप में सूचीबद्ध हैं । पुलिस ने सोमवार को इनमें से 130 नामों को सूची से हटाने का फैसला किया।

रुद्रपुर में तीन किलो अफीम के साथ बहेड़ी के दो तस्कर गिरफ्तार

संवाददाता, रुद्रपुर

● एसटीएफ व पुलिस की कार्रवाई, पकड़े गए दोनों अभियुक्तों को कोर्ट में किया पेश

मामले का खुलासा करते एसएसपी मणिकांत मिश्रा और गिरफ्त में अभियुक्त।

अमृत विचार: किच्छा पुलिस और एसटीएफ ने एक संयुक्त ऑपरेशन चलाते हुए दो अफीम माफियाओं को गिरफ्तार कर लिया और उनके कब्जे से भारी मात्रा में अफीम भी बरामद की। पुलिस ने अभियुक्तों के खिलाफ एनडीपीएस का मुकदमा दर्ज कर उन्हें न्यायालय में पेश कर दिया है।

बुधवार को खुलासा करते हुए एसएसपी मणिकांत मिश्रा ने बताया कि 4 नवंबर की शाम को किच्छा पुलिस और एसटीएफ कुमाऊं की टीम संयुक्त रूप से वाहनों की चेकिंग कर रही थी। इस बीच टीम गिद्धपुरी को जाने वाले निर्माणाधीन फ्लोर मिल के समीप पहुँची। तभी अचानक एक बाइक पर सवार दो युवक सकपका कर भागने की कोशिश करने लगे। संदेह होने पर पुलिस ने घेराबंदी कर बाइक सवार युवकों को पकड़ लिया। पूछताछ में अभियुक्तों ने अपना नाम गाँव बहीपुर, बहेड़ी, बरेली निवासी सलीम अली और शेर मोहम्मद बताया। पुलिस ने दोनों को गिरफ्तार कर लिया और उनके कब्जे से तीन किलो अफीम भी बरामद की। पकड़ी गई अफीम की कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में 36 लाख रुपये आँकी गई है। पूछताछ में अभियुक्तों ने बताया कि वे सीमावर्ती यूपी से अफीम लाकर तराई-भाबर क्षेत्र में सप्लाई करते हैं और पिछले कई वर्षों से मादक पदार्थों की तस्करी में लिप्त हैं। एसएसपी ने बताया कि जब अभियुक्तों का आपराधिक इतिहास खँगाला गया तो सलीम अली पर बहेड़ी में हुई 40 लाख की डकैती के अलावा गैंगस्टर सहित कई संगीन आपराधिक मामले दर्ज हैं।

प्रवासी उत्तराखंडी हमारे सच्चे ब्रांड एंबेसडर : मुख्यमंत्री धामी

मुख्य संवाददाता, देहरादून

● देहरादून में आयोजित हुआ प्रवासी उत्तराखंडी सम्मेलन

अमृत विचार : मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने प्रवासी उत्तराखंडियों को प्रदेश का सच्चा ब्रांड एंबेसडर बताते हुए उनसे राज्य के विकास अभियान में भागीदार बनने का आह्वान किया।

उत्तराखंड स्थापना के रजत जयंती उत्सव के तहत बुधवार को राजधानी में आयोजित प्रवासी उत्तराखंडी सम्मेलन को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रवासी उत्तराखंडी प्रदेश की संस्कृति, परंपराओं और मातृभूमि के गौरव को नई ऊंचाइयों तक पहुंचा रहे हैं। प्रवासी उत्तराखंडी जहां भी रहते हैं, अपने साथ देवभूमि की संस्कृति और अपनी मिट्टी की सुगंध लेकर चलते हैं। राज्य सरकार ने प्रवासी उत्तराखंड परिषद का गठन इसी उद्देश्य से किया है ताकि उनके सुझाव और अनुभव राज्य के विकास की मुख्यधारा में शामिल किए जा सकें। प्रदेश के अनेक प्रवासी स्वयं अपने गांवों को गोद लेकर विकास में योगदान दे रहे हैं। राज्य सरकार विकसित भारत, विकसित उत्तराखंड के लक्ष्य की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रही है और शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, खेल, पेयजल, पर्यटन, ऊर्जा और हवाई संपर्क सहित सभी क्षेत्रों में राज्य ने उल्लेखनीय प्रगति की है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सतत विकास लक्ष्यों में नीति आयोग की रैंकिंग में प्रदेश को प्रथम स्थान मिलना, ईज ऑफ डूइंग बिजनेस में एचीवर्स तथा स्टार्टअप रैंकिंग में लीडर्स श्रेणी प्राप्त होना राज्य के सुनियोजित प्रयासों का परिणाम है। राज्य सरकार सांस्कृतिक मूल्यों और जनसांख्यिकीय संतुलन को बनाए रखने के लिए भी पूरी तरह प्रतिबद्ध है। धामी ने कहा कि चार वर्षों में 26 हजार से अधिक युवाओं को सरकारी नौकरी दी गयी है जबकि 200 से अधिक भ्रष्टाचारियों को जेल भेजा गया है। राज्य सरकार का लक्ष्य है कि स्वर्ण जयंती वर्ष तक उत्तराखंड ऐसा राज्य बने जहां हर युवा को सम्मानजनक रोजगार मिले, पलायन रुके और प्रवासियों की गौरवपूर्ण वापसी हो। मुख्यमंत्री ने प्रवासी उत्तराखंडियों से आह्वान किया कि वे भी राज्य के इस विकास अभियान में भागीदार बनें।

बर्फीले रंग में गहराने लगे उच्च हिमालय

नैनीताल, अमृत विचार: पश्चिमी विक्षोभों का बर्फीला रंग उच्च हिमालय में गहराना शुरू हो गया है, जिसका असर उच्च हिमालयी क्षेत्रों में शुरू हो चुके हिमपात से दिखाई देना शुरू हो गया है। हालांकि मैदानी इलाकों में अभी मौसम नरम-गरम बना हुआ है।

हिमपात की अनुकूल परिस्थितियों के कारण हिमालय की चोटियों पर बर्फबारी जारी है। बुधवार को भी उच्च हिमालय क्षेत्र में हिमपात जारी रहा। नैनीताल स्थित आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एरीज) के पर्यावरण वैज्ञानिक डॉ. नरेंद्र सिंह का कहना है कि इस वर्ष लंबे समय तक मानसून के निरंतर बरसने से हिमपात की परिस्थितियां अनुकूल हो चली हैं। नमी की मात्रा काफी हद तक बढ़ी हुई है और जब भी पश्चिमी मानसून के मेघ पानी लेकर पहुंचेंगे तो हिमालय की वादियों में हिम की बरसात करेंगे। इन दिनों पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय है, जिस कारण उच्च हिमालय क्षेत्र में हिमपात हुआ है।

खीरी में कोडीन की 1133 शीशियां जब्त

बरामद सिरप के साथ गिरफ्तार आरोपी। ● अमृत विचार

लखीमपुर खीरी, अमृत विचार: अमृत विचार: जनपद में नशीली दवाओं की अवैध बिक्री पर शिकंजा कसने के तहत औषधि विभाग ने बड़ी कार्रवाई की है। बुधवार को औषधि विभाग की टीम ने पढुआ पुलिस के साथ ढखेरवा चौराहा पर मेडिकल एजेंसी पर छापा मारा। टीम ने आठ पेटियों में भरी 1133 शीशियां प्रतिबंधित कोडीन सिरप की बरामद की हैं। मौके से एक आरोपी को गिरफ्तार किया, जबकि उसका साथी भाग निकला। औषधियों की खरीद-बिक्री के कोई वैध कागजात नहीं मिलने पर पुलिस ने एनडीपीएस एक्ट के तहत रिपोर्ट दर्ज कर आरोपी का चालान न्यायालय भेजा है।

औषधि निरीक्षक बबिता रानी को गोपनीय सूचना मिली थी कि ढखेरवा चौराहा पर मेडिकल स्टोर पर प्रतिबंधित व नशीली दवाओं की अवैध बिक्री की जा रही है। उन्होंने तत्काल हरदोई की औषधि निरीक्षक स्वागितका घोष से संपर्क किया और संयुक्त छापेमारी का कार्यक्रम तय किया। पुलिस की उपस्थिति में टीम बुधवार को ढखेरवा पहुंची और न्यू राय मेडिकल एजेंसी पर छापा मारा। जांच के दौरान काउंटर के पीछे और भंडारण कक्ष में रखी आठ बड़ी पेटियों में कोडीन सिरप की शीशियां मिलीं। गोला गोकर्णनाथ में 15 अक्टूबर को ड्रग्स इंस्पेक्टर बबिता रानी और पुलिस की संयुक्त टीम ने सिनेमा रोड स्थित पीयूष मेडिकल एजेंसी और उसके मालिक सरोज मिश्रा के प्रतिष्ठानों पर छापा मारकर 70 लाख रुपये की नारकोटिक्स दवाएं बरामद की थीं। इस मामले में सरोज मिश्रा सहित तीन का चालान भेजा गया था। तबसे औषधि विभाग की नजरें दवा कारोबारियों पर हैं।

सूत्रों की मानें तो जिले के कई दवा कारोबारी रडार पर हैं। प्रतिबंधित दवाएं यदि कोई बेचता है तो वह महकमे की पकड़ में आ जाएगा। बहरहाल, गोला के बाद अब पढुआ में छापेमारी से दवा कारोबारियों में हड़कंप मच गया है।

पत्नियों से क्षुब्ध दो युवकों ने आत्महत्या की

बलिया, अमृत विचार: जिले के रसड़ा और फेफना थाना क्षेत्रों में कथित तौर पर अपनी-अपनी पत्नियों से क्षुब्ध दो युवकों ने आत्महत्या कर ली। पुलिस ने बुधवार को यह जानकारी दी। पुलिस के अनुसार, रसड़ा कोतवाली क्षेत्र के छितौनी गांव में मंगलवार रात्रि ध्रुव सोनी (30) ने किराए के घर के एक कमरे में फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। उन्होंने बताया कि प्रारंभिक छानबीन में यह तथ्य सामने आया है कि ध्रुव सोनी की पत्नी मोबाइल पर किसी युवक से हमेशा बात करती रहती थी और इसको लेकर दोनों में विवाद होता रहता था। इसके पूर्व फेफना थाना क्षेत्र में सोमवार रात्रि 27 वर्षीय युवक ने भी अपनी पत्नी से फोन पर विवाद के बाद मालगाड़ी के आगे कथित रूप से कूदकर आत्महत्या कर ली।

पुलिस ने 31 बदमाशों की खोली हिस्ट्रीशीट

सात बदमाश अकेले फरीदपुर थाना क्षेत्र के, कुछ जेल में भी हैं

कार्यालय संवाददाता, बरेली

- हत्या, लूट व डकैती में शामिल रहे हैं जिले के बदमाश
- अब बदमाशों की होगी नियमित निगरानी

अमृत विचार : जिले में लंबे समय से मादक पदार्थों की तस्करी, गोकशी, हत्या, लूट, डकैती जैसी संगीन वारदातों में शामिल रहे 31 शातिर अपराधियों की पुलिस ने बी क्लास की हिस्ट्रीशीट खोली है। इनमें सबसे ज्यादा सात बदमाश फरीदपुर थाना क्षेत्र के हैं। अब पुलिस इन अपराधियों की नियमित निगरानी रखेगी। एसएसपी अनुराग आर्य ने बताया कि जिन बदमाशों की हिस्ट्रीशीट खोली गई उनमें कुछ अपराधी मौजूदा समय में जेल में भी बंद हैं।

जिन अपराधियों की बी क्लास की हिस्ट्रीशीट खोली गई है उनमें बड़े उर्फ अजरुद्दीन निवासी दुनका थाना शाही, तौफीक अहमद निवासी गांव बसई, शाही, महेंद्रपाल निवासी गांव मंडनपुर, मीरगंज, रोहित यादव निवासी भुर्जी ओला, आंवला, नाजिम अली निवासी फूटा दरबाजा, आंवला, निजाम उर्फ निजामुद्दीन निवासी मनौना, आंवला, अफरोज अहमद निवासी गांव मथुरापुर, सीबीगंज, राजा निवासी सरनिया, सीबीगंज, हनीफ उर्फ बिल्ला निवासी गांव भिंडौलिया, बिथरी चैनपुर शामिल हैं।

इसके अलावा खुर्शीद निवासी गांव अंगूरी टांडा, सुभाषनगर, सैफी निवासी खुशबू एन्क्लेव, बारादरी, लक्ष्मी नारायण उर्फ मुन्ना निवासी शाहदाना, बारादरी, दिनेश उर्फ कल्लू निवासी मोहल्ला कानून गोयान हाल निवासी श्यामगंज, बारादरी, फरहान निवासी मोहल्ला एजाजनगर गौटिया, बारादरी, प्रेम सिंह निवासी गांव ढकिया, अलीगंज, मकबूल निवासी महोलिया, अलीगंज शामिल हैं। बताया कि इन बदमाशो के अलावा नेकसू उर्फ पूरन लाल निवासी गांव कुडरिया फैजुल्लापुर, अलीगंज, अचल निवासी गांव जोगीठेर, अलीगंज, नुरैन निवासी गांव अवदपुर, बिशारतगंज, साबिर निवासी गांव दुआवट, हाफिजगंज, बुंदन निवासी गांव बरखन, नबावगंज, अनिल निवासी गांव हिमकरा, नबावगंज, तौसीफ निवासी गांव प्रहलादपुर, क्योलड़िया, नदीम निवासी फरीदापुर चौधरी, इज्जतनगर, देवराज यादव निवासी मोहल्ला शिवनगर शर्मा कॉलोनी, फरीदपुर, कासिम निवासी मेवासर्फापुर, फरीदपुर, याकूब निवासी गांव अलगनी, फरीदपुर, तैय्यब निवासी गांव नांद, फरीदपुर, चंद्रसेन निवासी शिवनगर शर्मा कॉलोनी, फरीदपुर और तसब्बर, फतून निवासी गांव सर्फापुर थाना फरीदपुर हैं।

युवक की इलाज के दौरान मौत

बरेली, अमृत विचार: सीबीगंज थाना क्षेत्र के गांव माधोपुर खालसा निवासी दो चचेरे भाई सड़क हादसे में घायल हुए थे, जिनमें से एक की मौत हो गई थी। दूसरे ने इलाज के दौरान बुधवार को दम तोड़ दिया। गांव माधोपुर खालसा निवासी मूलचंद ने बताया कि 1 नवंबर को उनका बेटा राकेश और प्रेमपाल बाइक से हरियाणा मजदूरी करने जा रहे थे। रास्ते में अज्ञात वाहन ने जोरदार टक्कर मार दी थी।

घर में घुसा युवक मुकदमा दर्ज

भमोरा, अमृत विचार : थाना क्षेत्र के गांव निवासी महिला ने बताया कि सोमवार रात में वह घर पर अकेली सो रही थी। पति खेत में बने ट्यूबवेल पर थे। सास ससुर रिश्तेदारी में गए थे जिसका फायदा उठाते हुए गांव निवासी गजेंद्र जीने के रास्ते घर में घुस आया और दुष्कर्म की नीयत से दबोच लिया शोर मचाने पर ग्रामीण आ गए जिस पर युवक जान से मारने की धमकी देते हुए फरार हो गया थाना पुलिस ने महिला की तहरीर पर मुकदमा दर्ज जांच की बात कही।

बस ने टेम्पो और बाइक में मारी टक्कर, 4 घायल

टक्कर के बाद लगी लोगों की भीड़ । ● अमृत विचार

संवाददाता, फतेहगंज पश्चिमी

अमृत विचार : बुधवार सुबह धनेटा फाटक के पास बरेली से दिल्ली जा रही निजी अनियंत्रित बस ने टेम्पो और दो बाइक में टक्कर मार दी। हादसे में बाइक और टेम्पो सवार यात्री घायल हो गए। पुलिस ने घायलों को खिरका सीएचसी पर भेज दिया। बस को पुलिस ने कब्जे में ले लिया है।

बरेली से दिल्ली जाने वाली निजी यात्री बस बुधवार को दिल्ली जा रही थी। सुबह करीब 9:30 बजे दिल्ली हाइवे पर धनेटा फाटक के पास अनियंत्रित होकर बस ने रोड किनारे खड़े सवारी भरे टेम्पो और दो बाइक में टक्कर मार दी। हादसे में थाना शाही के गांव सुखली निवासी बाइक सवार उदित गांव परतापुर निवासी मोरपाल, गांव वीथम नौगमा निवासी बब्लू, थाना शीशगढ़ के गांव टिगड़ी निवासी टेम्पो चालक मो हसन घायल हो गए। पुलिस ने सभी घायलों को अस्पताल भेज दिया। थाना प्रभारी अभिषेक कुमार ने बताया सभी घायल खतरे से बाहर थे। परिजन बबलू और मोरपाल को बरेली के निजी अस्पताल ले गए। टक्कर मारने वाली बस को कब्जे में ले लिया है। हादसा रोड किनारे होने से हाइवे पर जाम नहीं लगने के कारण यात्रियों को कोई दिक्कत

Lifelines OF BAREILLY — MEDICAL — अमृत विचार एक सम्पूर्ण अखबार
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें :- 8445507002

फोकस नेत्रालय
राजेन्द्र नगर, बरेली 731-098-7005
बरेली का सबसे बड़ा केवल आँखों के लिए समर्पित प्राइवेट अस्पताल ...
नवीनतम AI तकनीक एवं NABH मान्यता के साथ
- 40,000 से अधिक सफल सर्जरी सम्पन्न
- बिना इंजेक्शन एनेस्थीसिया (केवल आई ड्राप्स द्वारा)
- आयुष्मान/सीजीएचएस/ईसीएचएस/सीएपीएफ सभी स्वास्थ्य बीमा मान्य
- कैशलेस ईलाज

डॉ. नितिन अग्रवाल
एम.डी. (गोल्ड मेडिलिस्ट), डी.एम. (कार्डियोलॉजी)
हृदय रोग विशेषज्ञ मो. 9457833777
2D ECHO + TMT
हृदय रोग के लक्षण : ■ घबराहट ■ छाती में दर्द या भारीपन ■ सांस फूलना ■ पैरों में सूजन ■ हाई ब्लडप्रेशर ■ हाई कोलेस्ट्रोल ■ डाइबिटीज (शुगर) ■ सीने या पेट में जलन या दर्द ■ हार्ट अटैक ■ हार्ट फेल
APPLE CARDIAC CARE DR. NITIN AGARWAL'S HEART CLINIC
ए-3, एकता नगर, केयर अस्पताल के सामने, स्टेडियम रोड, बरेली। सम्पर्क करें:- 9458888448

शिकायत करना पड़ा भारी, प्रधान पक्ष दे रहा धमकी

नवाबगंज , अमृत विचार : आजाद समाज पार्टी काशीराम के जिला प्रभारी आजम अली का आरोप है कि उनकी शिकायत का फर्जी निस्तारण कर दिया गया । जिसकी शिकायत करने पर प्रधान पक्ष उन्हें उन्हें तरह - तरह की धमकी दे रहा है ।

आजम अली ने अपने ग्राम सतुइया कलां स्थित खेल मैदान की तार से फैन्सिंग कराने व खेल उपकरण बदलने की मांग समाधान दिवस में की थी ।

आरोप है कि बीडीओ ने उनकी शिकायत का फर्जी निस्तारण करते हुए स्कूल के बराबर पार्क की फैन्सिंग कराने की झूठी आख्या लगाकर निस्तारित कर दिया आरोप है अब प्रधान पक्ष की ओर से उन्हें शिकायत वापस न लेने पर झूठे मुकदमे में फंसाने व देख लेने की धमकी दी जा रही है।

मीरगंज चीनी मिल में पेराई सत्र शुरू

संवाददाता, मीरगंज:

अमृत विचार : धामपुर बायो आर्गेनिक्स लिमिटेड में पेराई सत्र 2025-26 का शुभारम्भ बुधवार को विधि विधान पूर्वक हवन पूजन के साथ हुआ। मुख्य यजमान एवं मिल उपाध्यक्ष सरबजीत सैनी एवं मुख्य अतिथियों ने नारियल फोड़कर तथा करियर में गन्ना डालकर गन्ना पेराई सत्र का औपचारिक आरम्भ कर दिया ।

मुख्य अतिथि सांसद छत्रपाल गंगवार, अर्बन कोऑपरेटिव बैंक की चेयरमैन श्रुति गंगवार, ब्लॉक प्रमुख गोपाल कृष्ण गंगवार आदि ने संयुक्त रूप से गाड़ी में जुड़े बैलों का तिलक कर पूजा अर्चना की। मनकरा से ट्रैक्टर ट्राली में गन्ना लेकर आये किसान गुडडू गंगवार का भी तिलक कर उन्हें पुरस्कृत किया।

इकाई प्रमुख सरबजीत सैनी ने बताया कि इस बार 16 नये गन्ना क्रय केंद्र और स्वीकृत हुए हैं। जिससे अब मिल के पास कुल 84 क्रय केंद्र हो गये। विगत पेराई सत्र के सापेक्ष इस बार एक करोड़ कुंतल से अधिक गन्ना पेराई करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। उन्होंनें बताया कि इस बार भी किसानों को गन्ना मूल्य भुगतान समय से उपलब्ध कराया जायेगा। मिल प्रबंधन किसानों की हर संभव सहायता के लिए प्रतिबद्ध है। और सुविधाओं को लगातार बेहतर किया जा रहा है। इस दौरान सोमपाल शर्मा जिला अध्यक्ष भाजपा, तेजपाल गंगवार चेयरमैन गन्ना सोसाइटी, रमेश कुर्मी, प्रधान नगरिया सादात शिव कुमार, एम आर खान, अरविंद गंगवार, ओमप्रकाश वर्मा, महेंद्र अग्रवाल, अभिषेक शर्मा, जय गोपाल चावला, संजय कुमार सिंह, शेषनाथ यादव, अंग्रेज सिंह, आशीष, रतिराम एवं किसान बंधु आदि उपस्थित रहे।

केन केरियर में गन्ना डालते सांसद छत्रपाल सिंह गंगवार, डीबीओ एल के यूनिट हेड सर्वजीत सैनी व अन्य जनप्रतिनिधि। ● अमृत विचार

- सांसद छत्रपाल गंगवार ने किया सत्र का शुभारंभ

डॉ. हारिस अंसारी
एम.एस., एम.सी.एच. (यूरोलॉजी)
Consultant Urologist & Andrologist
गुर्दा, प्रोस्टेट, पेशाब की थैली की पथरी व कैंसर सर्जन
- प्रोस्टेट (गदूद का आपरेशन) (TURP) ● गुर्दे की पथरी का आपरेशन (PCNL) ● गुर्दे की नली (यूरेटस) की पथरी का ऑपरेशन (URSL) ● पेशाब के समस्त प्रकार के रोगों का इलाज
कैशलेस, इंश्योरेंस, TPA व ESI आयुष्मान से अनुबन्धित अस्पताल
डॉ. एम. खान हॉस्पिटल
मल्टी स्पेशलिटी व क्रिटिकल केयर सेन्टर स्टेडियम रोड, निकट सेंट फ्रांसिस स्कूल, बरेली
समय दोपहर 12 से शाम 4 बजे तक हेल्पलाईन 9837549348, 98978382286

डॉ. दर्शन मेहरा
एम.बी.बी.एस., एम.डी. (मेडिसिन)
Cardiopulmonologist, Diabetologist & Intensivist
आयुष्मान एवं TPA कैशलेस सुविधा उपलब्ध
डायबिटीज, थायराइड, डेंगू, मलेरिया, टी.बी., पेट रोग, गठिया, फेफड़ों के रोग, तेज बुखार, एलर्जी, जटिल रोगों का उचित इलाज
दर्पिन हॉस्पिटल
संजय नगर रोड, पीलीभीत बाईपास, बरेली
हैल्प लाइन – 8979252222, 9457663289

झाड़ियों में फेंका शिशु कुत्तों ने नोच खाया

संवाददाता, बरेली/मानपुर

- शीशगढ़ थाना क्षेत्र के गांव बंजरिया के पास पड़ा था शव

अमृत विचार : शीशगढ़ थाना क्षेत्र में गांव बंजरिया के बाहर झाड़ियों में किसी बेरहम दिल ने नवजात बच्चे का शव फेंक दिया। शव को लावारिस कुत्ते नोंच कर खा रहे थे। बुधवार सुबह जब इसकी जानकारी ग्रामीणों को हुई तो उन्होंने पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। पुलिस हाल ही में जन्मे बच्चों की डिटेल अस्पतालों से खंगाल रही है। पुलिस ने बच्चे का डीएनए सैंपल भी लिया है।

ग्रामीणों ने देखा कि कुत्तों ने नवजात का एक हाथ नोंचकर खा लिया था। ग्रामीणों ने कुत्तों को भगाया और पुलिस को सूचना दी। आशंका जताई जा रही है कि रात के वक्त किसी ने नवजात को झाड़ियों में फेंका होगा।

पुलिस अब यह पता लगाने में जुटी है कि ऐसा कृत्य किसने किया है। आसपास के लोगों से भी पूछताछ की गई है। उधर ग्रामीणों का कहना है कि लोकलाज की वजह से किसी महिला ने अनचाहे बच्चे को झाड़ियों में फेंक दिया होगा।

खोखा हटाने की शिकायत, डीएम ने दिए जांच के आदेश

फतेहगंज पश्चिमी, अमृत विचार : पि मोहल्ला रबर फैक्ट्री वार्ड 10 निवासी भूरे ने डीएम को शिकायती पत्र देकर बताया कि नगर पंचायत कार्यालय के पास उसका खोखा पिछले एक दशक से रखा है। मुख्य बाजार में और खोखे भी रखे है।लेकिन एक नगर पंचायत कर्मी पराग डेयरी लाइसेंस के नाम पर उसका खोखा जबरन हटाकर डेयरी का खोखा लगाना चाह रहा है। करीब एक सप्ताह पहले रात में कुछ लोगो ने उसके खोखे को तोड़कर सारा सामान निकाल दिया। जब उसने मौके पर पहुंचकर विरोध किया।मामले में जिलाधिकारी ने जांच के आदेश दिए है।

अमृत विचार एक सम्पूर्ण अखबार
क्लासीफाइड
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें
9756905552, 8445507002

सूचना

मैंने अपने पुत्र रंजीत एवं उसकी पत्नी लवली को उसके गलत आचरण एवं दुर्व्यवहार के कारण उन्हें अपनी समस्त चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल कर दिया है। भविष्य में उनके द्वारा किये गये किसी भी कृत्य का मुझसे व मेरे परिवार के किसी भी सदस्य से कोई सरोकार नहीं होगा। **कौशल्या देवी पत्नी स्व. प्रेमपाल निवासी मो. लठैता कस्बा व थाना आंवला जिला बरेली**

आवश्यकता है
सेल्समैन और सेल्सगर्ल एवं गार्ड की,
गर्म कपड़ों के शोरूम
ओसवाल कलैक्शन
46, सिविल लाईस, होटल ओबराय आनंद बेसमेंट हाल, हनुमान मंदिर के सामने, बरेली।
मो. 8847392798

आवश्यकता है
अनुभवी व्यक्तियों की
- लाइब्रेरियन (अनुभवी)
- लैब टेक्नीशियन (अनुभवी)
- ओ टी टेक्निशियन (फीमेल)
- नर्सिंग स्टाफ (मेल)
- कैंटीन (कुक)
- सफाईकर्मी/स्वीपर
वेतन:- योग्यतानुसार
सम्पर्क करें:-
रोहिलखंड आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल
सेक्टर-7 , रामगंगा नगर योजना डोहरा रोड बरेली
मो:- 8077808309 , 9837357497

मुख्य बाजार से हटाया अतिक्रमण

बहेड़ी, अमृत विचार : नगर पालिका परिषद ने बुधवार को एक साथ कई कार्यवाही की। नैनीताल रोड सहित कई क्षेत्रों से अतिक्रमण हटाया गया और आवारा कुत्तो को भी पकड़ा गया।

ईओ शशि प्रभा चौधरी के आदेश पर नैनीताल रोड, पंजाबी कालौनी, नगर पालिका परिसर, डाकखाना रोड से आवारा कुत्तो को पकड़ा गया। उन्हें जंगल में छोड़ा गया है। मुख्य बाजार नैनीताल रोड पर दुकानदरो, ठेला,फड वालों द्वारा किये गये अतिक्रमण को सीओ अरुण कुमार ने भारी पुलिस के साथ हटवाया । बुधवार को नैनीताल रोड, माथुर रोड, पंजाबी कालौनी चौराहा, केसर चीनी मिल गेट, रोडवेज बस आदि स्थानों से अतिक्रमण हटवाया । चार दुकानों को भी सील किया गया।

विकसित होने के लिए शिक्षित होना जरूरी

संवाददाता, शेरगढ़

- पटेल जयंती के उपलक्ष्य में ब्लाक कार्यालय में हुआ कार्यक्रम

अमृत विचार : भारत रत्न लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल जयंती के उपलक्ष्य में बुधवार को ब्लाक सभागार में कार्यक्रम में सांसद छत्रपाल सिंह गंगवार ने वल्लभ भाई पटेल का राष्ट्र निर्माण में अविस्मरणीय योगदान रहा। उन्होंने युवा पीढ़ी से राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभाने का आह्वान किया।

ब्लाक प्रमुख भूपेंद्र कुर्मी ने एकता और अखंडता पर बल देते हुए बच्चों के शैक्षिक विकास पर जोर दिया। जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि प्रशांत पटेल ने कहा कि शिक्षा मनुष्य का बहुमूल्य आभूषण है। शिक्षा के बगैर हम किसी भी क्षेत्र में विकसित होने की कल्पना नहीं कर सकते। इसलिए सभी जन बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देते हुए राष्ट्र निर्माण में सहयोगी बनें।

इस अवसर पर महेंद्र पाल गंगवार पूर्व विधायक नरेंद्र पाल सिंह,रघुवीर सिंह, प्रेम शंकर गंगवार, अश्विनी कुमार पटेल,नेमचंद्र गंगवार,केपी गंगवार,अनिल गंगवार,ओमवीर सिंह,प्रधान महेंद्र पाल गंगवार,विपिन गंगवार,धर्मेंद्र मौर्य,प्रताप गंगवार, सत्यपाल शर्मा,सोमदत्त,पिंटू गंगवार,रामप्रकाश आदि समेत बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

डॉ. प्रेम गंगवार
B.H.M.S. (Homeo Cafe Gwalior)
वरिष्ठ होम्योपैथिक चिकित्सक
मो. 8859517808
सैक्स रोग, शीघ्रपतन, नामर्दी, त्वचा, गुर्दे, कैंसर, जोड़, नस, थायराइड व महिलाओं का बांझपन
होम्योपैथिक से जुड़ी समस्या व दवाईयों के लिये निःशुल्क सम्पर्क करें। | अत्याधुनिक जर्मन दवाईयों द्वारा कुशल डाक्टर के मार्गदर्शन में इलाज
11 वर्षो का अनुभव प्रेम जर्मन होम्योपैथिक
रूहेलखण्ड यूनिवर्सिटी के सामने, पीलीभीत बाईपास, एच.के. टावर, बरेली

बवासीर-भगन्दर-फिशर
पाइलोनाइडल साइनस Mob.:8126164170
भगन्दर गांठ Piles in Men
डॉ. वी.के. सिसोदिया
वरिष्ठ क्षार सूत्र विशेषज्ञ
B.Sc., B.A.M.S.
Proctologist (Ayur.), N.D.D.Y., C.C.K.S. (MUMBAI)
मिलें : प्रत्येक रविवार 12 पत्थर रोड, जलालाबाद (शाहजहाँपुर) में
बरेली एनोरक्टल क्लीनिक पता:- करगैना पुलिस चौकी के पीछे, बदायूं रोड, बरेली

NSNH NEW SHRI NARAYANA HOSPITAL
न्यू श्री नारायणा हॉस्पिटल
डा. प्रदीप कुमार
एम.बी.बी.एस., एम.एस.
Retd. ACMO
जनरल सर्जन
डॉ. राम निवास
एम.बी.बी.एस. एम.डी.
(एनेस्थेसियोलॉजिस्ट)
जटिल एवं गम्भीर रोग विशेषज्ञ
डॉ. राजा गुप्ता
जनरल फिजिशियन

डॉक्टर्स पैनल

डा. प्रदीप कुमार एम.बी.बी.एस., एम.एस. Retd. ACMO जनरल सर्जन	डा. ओमवती एम.बी.बी.एस., डीजीओ स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ	डा. अहमद अली अंसारी एम.बी.बी.एस. डी.सी.एच. नवजात शिशु एवं बाल रोग विशेषज्ञ
डा. राम निवास एम.डी. (एनेस्थेसियोलॉजिस्ट) जटिल एवं गम्भीर रोग विशेषज्ञ	डा. कुन्दन कुमार एम.बी.बी.एस., एमसीएच न्यूरो सर्जन	डा. अमन अग्रवाल एम.बी.बी.एस., एम.एस., एम.सी.एच. गुर्दा एवं मूत्र रोग विशेषज्ञ
डा. सुजाय मुखर्जी एम.बी.बी.एस., एम.एस. जनरल सर्जन एवं लैप्रोस्कोपिक सर्जन	डा. निशान्त गुप्ता एम.बी.बी.एस., एम.एस. (आर्थो) हड्डी एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ	डा. प्रिया सिंह एम.बी.बी.एस. डी.जी.ओ, डी.एन.बी. स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ
डा. आशुतोष कुमार एम.बी.बी.एस., एम.एस. हड्डी एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ	डा. रहबर इदरीश बी.डी.एस. एमआईडीए लखनऊ मुख दन्त एवं जबड़ा रोग विशेषज्ञ	डा. राजा गुप्ता बी.ए.एम.एस. ई.एम.ओ.

उपलब्ध सुविधायें :
- सिर एवं चेहरे की समस्त चोट, बुखार, खांसी, मलेरिया, टायफाइड का इलाज
- दिमाग एवं रीढ़ की हड्डी के समस्त प्रकार के आपरेशन की सुविधा
- दूरबीन विधि द्वारा पेट के सभी प्रकार के आपरेशन की सुविधा
- दूरबीन विधि द्वारा गुर्दा (किडनी) एवं मूत्र रोगों के सभी प्रकार के आपरेशन की सुविधा।
- छोटे चीरे द्वारा हड्डी के समस्त आपरेशन एवं जोड़ प्रत्यारोपण
- घुटना व कूल्हा बदलने की सुविधा उपलब्ध
- नॉर्मल डिलीवरी व दर्द रहित प्रसव एवं बच्चेदानी के समस्त प्रकार के आपरेशन
- बच्चों के समस्त प्रकार के रोगों को इलाज
- वेन्टीलेटर, वाईपाइप युक्त ICU, NICU

डॉ. विवेक कुमार मैनेजिंग डायरेक्टर
ठाकुर हरीश रावत चेयरमैन
समस्त प्रकार के दूरबीन व चीर वाले ऑपरेशन की सुविधा
24x7 भर्ती एवं एम्बुलेन्स की सुविधा उपलब्ध
लाल फाटक शांतिकुंज स्कूल के पास, निकट ओवर ब्रिज, बदायूं रोड, बरेली
हेल्पलाइन नं. : 8057953868

वैधानिक सूचना :- समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन जैसे टावर सम्बन्धी, नौकरी सम्बन्धी, ऋण सम्बन्धी या अन्य किसी भी प्रकार के विज्ञापन में पाठकों को सावधान किया जाता है। विज्ञापनदाता द्वारा किये गये दावे या उल्लेख, समर्थन की पुष्टि समाचार पत्र नहीं करता है।

न्यूज ब्रीफ

मेला जा रहे मासूम की ट्रैक्टर ट्राली से गिरकर हुई मौत

भमोरा, अमृत विचार : थाना क्षेत्र के गांव बल्लिया निवासी जयप्रकाश गुप्ता ने बताया कि फिरोजपुर पर लगने वाले मुड़किया घाट पर लगने वाले मेले में गंगा स्नान को जा रहे थे कि परिवार के सभी सदस्य ट्रैक्टर ट्राली में बैठे थे कि बल्लिया से कुछ आगे चलकर गोद में बैठा 6 वर्षीय नाती कन्हैया पुत्र सुमित गुप्ता ट्रैक्टर के नीचे गिर गया और पहिए के नीचे आने से गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे एक निजी अस्पताल में ले गये जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मौत की सूचना पर परिवार में कोहराम मच गया।

पूर्व सैनिक व पेंशन खाताधारक सम्मानित

बहेडी, अमृत विचार : नगर पालिका परिसर स्थित एसबीआई की मुख्य शाखा में पेंशनर्स सम्मान समारोह हुआ। इसमें भूतपूर्व सैनिकों, रेलवे, केंद्र सरकार, राज्य सरकार के विभिन्न विभागों से सेवानिवृत्त शिक्षक शामिल हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता शाखा प्रबन्धक विनीत कुमार ने की। कार्यक्रम में सभी पेंशनर्स से जीवन प्रमाण पत्र प्राप्त किया गया और नामांकन इत्यादि की आवश्यकता समझाई गई। इस अवसर पर शिवम वैश्य, प्रियंका राणा, विधि सिंह पूर्व सैनिक जगदीश प्रसाद, करन सिंह, अजब सिंह, किशन लाल, आदि उपस्थित रहे।

पराली की आग से 7 बीघा गन्ना जला

नवाबगंज, अमृतविचार : प्रशासन की लाख मनाही के बाद भी किसान पराली जलाने से बाज नहीं आ रहे हैं । दोपहर में पड़ोसी किसान द्वारा जलाई जा रही पराली की आग की चपेट में आने से अनन्दापुर वासी किसान दीपक कुमार के ग्राम ज्योरा मकरन्दपुर स्थित गन्ने के खेत मे खड़ी 7 बीघा गन्ने की तैयार फसल स्वाहा हो गई ।

रात में हरे पेड़ काटे कार्रवाई शुरू

नवाबगंज,अमृत विचार : थाना क्षेत्र के गांव परोथी में आम के हरे पेड़ बिना परमिशन से काट लिए गए। इसकी सूचना वन बीट अधिकारी वेदप्रकाश को मिली तो उनके साथ वन कर्मी लव कुश, मान सिंह, हाफिजगंज के अकबर अली मौके पर पहुंचे और जांच की। बीट अधिकारी ने बताया राकेश गंगवार की जमीन में आम के 7 हरे पेड़ बीती रात काटे जाने की सूचना मिली। पहुचने से पहले ठेकेदार पेड़ लेकर फरार हो गये।

जबरन कब्जा के लिए जेसीबी चलवाई

सिरौली, अमृत विचार : गांव शाहपुर में एक धार्मिक स्थल पर दबंगई के बल पर कब्जा करने उद्देश्य से एक व्यक्ति ने जबरन जेसीबी चलवा दी । जिससे नाराज तमाम ग्रामीणों ने पुलिस से शिकायत कर कानूनी कार्रवाई की मांग की है । ग्रामीणों ने बताया कि ग्राम समाज की भूमि पर धार्मिक थान है जहां भजन कीर्तन कार्यक्रम होते हैं जहां सिरौली के फ्रजंदनगर निवासी सलीम मिस्त्री ने धार्मिक स्थल पर कब्जा करने के उद्देश्य से जबरन जेसीबी चलवा दी। शिकायत करने वालों में ओमप्रकाश पांडे,महेश चंद, नेकपाल,गोपी, रामचरण, कैलाश शर्मा,सर्वेश,मोतीराम, महिपाल,विजय कुमार, अर्जुन सिंह आदि थे पुलिस ने कारवाई की बात कही है।

ग्रामीण से ठगी

नवाबगंज, अमृत विचार : थाना क्षेत्र के गांव रघुनाथपुर निवासी मलखान सिंह से एक लाख का बकाया बिजली बिल 65 हजार रुपये में निपटाने के नाम पर ठगी की कर ली गई। पीड़ित ने थाने में तहरीर देकर कानूनी कार्रवाई की मांग की है।

कैलाश मढ़ी घाट पर श्रद्धालुओं ने स्नान किया । ● अमृत विचार

गोरा लोकनाथपुर घाट पर लोगों ने आस्था की डुबकी लगाई । ● अमृत विचार

श्री राम मेढ़ा घाट पर श्रद्धालुओं की सुगमता के लिए तीन अस्थाई पुल बनाए गए । ● अमृत विचार

कार्तिक पूर्णिमा: लाखों लोगों ने लगाई आस्था की डुबकी

गोरा लोकनाथपुर , कैलाश गिरी मढ़ी , भोलापुर , मीरापुर घाटों पर उमड़ी श्रद्धालुओं की भारी भीड़ , मुख्य मार्ग पर कई जगह लगा जाम

संवाददाता, मीरगंज

अमृत विचार : कार्तिक पूर्णिमा के पावन अवसर पर बुधवार को रामगंगा घाटों पर आस्था का सैलाब उमड़ पड़ा। भोर से ही श्रद्धालु पवित्र स्नान के लिए घाटों पर पहुंचने लगे। 'हर हर गंगे' और भजन-कीर्तन की गूंज से पूरा वातावरण धर्ममय हो उठा। श्रद्धालुओं ने दीपदान कर भगवान विष्णु और शिव की आराधना की तथा अपने परिवार की सुख-समृद्धि की कामना की। सूर्य उदय होते ही घाटों पर स्नान, पूजन और दान का सिलसिला दिनभर चलता रहा। पुलिस और प्रशासन ने सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए थे। पूरे दिन घाटों पर मेले जैसा दृश्य देखने को मिला। पुलिस की गश्त और चौकसी से अवांछनीय तत्व भी सिर नहीं उठा सके। कहीं कोई अप्रिय घटना नहीं हुई है।

गोरा लोकनाथपुर एवं कैलाश गिरी बाबा मढ़ी रामगंगा घाट पर सवेरे से ही श्रद्धालुओं का हुजूम गंगा की ओर बढ़ता चला गया श्रद्धालुओं ने रामगंगा में डुबकी लगाई। बच्चों के मुंडन संस्कार भी कराए। बाबा कैलाश गिरी मढ़ी घाट पर सफाई की उचित व्यवस्था नहीं होने से श्रद्धालुओं ने घाट के आगे कम गहराई वाले क्षेत्र में आस्था की डुबकी लगाई।

मेले में एसडीएम आलोक कुमार भी निरीक्षण करते रहे। मीरगंज कोतवाली के प्रभारी प्रयागराज सिंह पुलिस बल के साथ रास्तों एवं मेला में भ्रमण कर कड़ी निगरानी रखे रहे। गोता खोर भी मौके पर रहे। गोरा पुल की एप्रोच रोड पर लंबा जाम भी लगा रहा। पूर्व प्रधान बाबूराम कश्यप, प्रमोद कुमार शर्मा, नन्हें शर्मा, लेखराज कुमार, गजेंद्र कश्यप, रोहित कुमार, ग्राम प्रधान धर्मेंद्र सिंह, भी जिम्मेदारी के साथ जुटे रहे।

कार्तिक पूर्णिमा पर लगे मेले में झूले का आनंद लेते लोग ।

सुरक्षा के लिए पुलिस और गोताखोर भी घाटों के किनारे तैनात रहे।

कादरगंज, नगरिया कलां के घाट पर लगा मेला

फतेहगंज पूर्वी में रामगंगा के कादरगंज, नगरिया कला, गांव के गंगा घाटों पर श्रद्धालुओं ने डुबकी लगाई हजारों की तादात में पहुंचे श्रद्धालुओं ने गंगा स्नान कर प्रसाद चढ़ाकर मां गंगा की पूजा अर्चना की। बहगुल नदी के तट पर भी लोगों ने स्नान किया। यहां पर भी मेले का आयोजन किया गया। श्रद्धालुओं ने जगह जगह खिचड़ी सहभोज एवं भंडारों का आयोजन भी किया गया । जिनमें मुख्य रुप से अरुण मिश्रा, सक्षम मिश्रा, ऋषभ मिश्रा , अंश मिश्रा, आदि का योगदान रहा। मेलों में पर्याप्त पुलिस बल लगाया गया तथा इंस्पेक्टर संतोष सिंह एवं कस्बा प्रभारी लक्ष्मी नारायण सिंह लगातार भ्रमण पर रहे। इंस्पेक्टर ने देर शाम सभी जगह शांतिपूर्ण ढंग से मेले संपन्न होने का दावा किया।

देवहा नदी में लगाई डुबकी

क्योलडिया में बहरजागीर में देवहा नदी के किनारे कार्तिक पूर्णिमा पर विशाल मेला लगा । श्रद्धालुओं ने आस्था की डुबकी लगाई साथ ही बच्चों के मुंडन हुए । मेले में सुबह से ही भारी भीड़ रही और मेले में झूला के साथ ही बच्चों के खिलौने की दुकान लगी मेले की सुरक्षा व्यवस्था के लिए उप जिला अधिकारी नवाबगंज उदित पवार तहसीलदार दुष्यंत प्रताप सिंह लगातार मेले की निगरानी करते रहे। सुरक्षा की दृष्टि से प्रभारी निरीक्षक राजबली सिंह भारी पुलिस फोर्स के साथ मुस्तैद रहे ।

अखा और भमोरा घाटों पर स्नान पर प्रतिबंध, पुलिस से हुई नोकझोंक

बिशारतगंज : चौबारी मेले में इस बार श्रद्धालुओं को दिक्कतों का सामना करना पड़ा। रामगंगा तट पर अखा और थाना भमोरा क्षेत्र के घाटों पर प्रशासन ने अधिक जलस्तर होने के कारण स्नान पर प्रतिबंध लगाया था। लेकिन सूचना समय से न पहुंचने के चलते श्रद्धालु हर वर्ष की तरह इन घाटों पर पहुंचे और जब पुलिस ने उन्हें रोका तो कई स्थानों पर श्रद्धालुओं और पुलिस कर्मियों के बीच नोकझोंक भी हुई। श्रद्धालुओं को स्नान के लिए दूसरे घाटों की ओर जाना पड़ा, जिससे विशेषकर बुजुर्गों और महिलाओं को कठिनाई हुई। प्रभारी निरीक्षक सतीश कुमार ने बताया कि अखा और भमोरा क्षेत्र के घाटों पर पानी की गहराई लगभग सात फीट थी। इसी कारण सुरक्षा की दृष्टि से इन घाटों पर स्नान रोक दिया गया और श्रद्धालुओं को सुरक्षित घाटों पर स्नान करने के लिए प्रेरित किया गया।

फतेहगंज पश्चिमी में भोलापुर और मीरापुर घाटों पर श्रद्धालुओं ने डुबकी लगाई। कस्बा और गांव खिरका जगतपुर, ठिरिया खेतल, कुरतरा, अगरास, लोहारनगला, टिटोली, सोरहा, चिटोली, सतुईया खास, सहित तमाम गांवों से लोग पहुंचे। सुरक्षा व्यवस्था के लिए थाना प्रभारी अभिषेक कुमार दरोगा प्रदीप कुमार पंकज कुमार कोंस्टेबल प्रदीप कुमार फोर्स के साथ घाटों पर मुस्तैद रहे।

श्रीराम मेढ़ा घाट पर जुटे हजारों श्रद्धालु

संवाददाता,शेरगढ़

अमृत विचार : क्षेत्र के गांव पनबड़िया में कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित श्रीराम मेढ़ा मेला में श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ा। इस दौरान ट्रैक्टर ट्राली एवं बैलगाड़ियों से पहुंचे श्रद्धालुओं ने गंगा मैया की आरती उतारी और सुख शांति और समृद्धि की कामना की।

सात दिवसीय श्रीराम मेंढ़ा मेले में दूरदराज से आए श्रद्धालुओं ने किच्छा नदी घाट पर आस्था की डुबकी लगाई । भोर में ही ट्रैक्टर ट्रालियों और बैलगाड़ियों से पहुंचे श्रद्धालुओं ने मेले में मनपसंद वस्तुओं की खरीदारी की। महिलाओं ने सिलबट्टा खरीदने के साथ ही हंडिया,मटकी ख़रीदीं। बच्चों ने अपने मनपसंद खिलौने खरीदे और झूलों का आनंद लिया। मेले में मुंडन संस्कार कराने वालों की भीड़ रही। नवविवाहित में उत्साह और उमंग का नजारा देखने को मिला। उन्होंने श्रृंगार का सामान खरीदा तथा मिठाइयों,चाट पकौड़ी आदि का लुत्फ लिया। कस्बा शेरगढ़,गांव नगरिया कलां,तिलमाची,राजू नगला,डेलपुर,नगरियाबरनी,जाम,बरगवां,अंबरपुर,मवई काजियान,मोहम्मदपुर समेत दूरदराज के गांवों से लोग मेला देखने पहुंचे। प्रभारी निरीक्षक राजेश कुमार पुलिस टीम के साथ मेला क्षेत्र में भ्रमण कर शांति व्यवस्था का जायजा लेते रहे। इसके अलावा रम्पुरा गांव के निकट ढोड़ा नदी घाट पर मेले लगा। यहां शिव मंदिर पर श्रद्धालुओं ने प्रसाद चढ़ाया और गंगा मैया से मंगलमय जीवन की कामना की।

शेरगढ़ में लगे मेले में जुटी भीड़ । ● अमृत विचार

रौहतापुर घाट पर श्रद्धा का उमड़ा सैलाब

राजपुर कलां में रौहतापुर घाट श्रद्धा और आस्था से सराबोर दिखाई दिया। सुबह चार बजे से ही श्रद्धालुओं का तांता लगना शुरू हो गया। देर शाम तक हजारों की संख्या में लोगों ने पवित्र जल में आस्था की डुबकी लगाकर मां गंगा से मनोकामनाओं की पूर्ति का आशीर्वाद लिया। धार्मिक संगठनों की ओर से जगह-जगह भंडारों का आयोजन किया गया, जिससे पूरे क्षेत्र में भक्ति और सेवा का माहौल बना रहा।

अलीगंज में पूर्णिमा स्नान पर रही भीड़

अलीगंज में सूदनपुर से लगभग दो किलोमीटर आगे स्थित रामगंगा घाट श्रद्धा और आस्था से सराबोर दिखाई दिया। सुबह चार बजे से ही श्रद्धालुओं का तांता लगना शुरू हो गया। देर शाम तक हजारों की संख्या में लोगों ने पवित्र जल में आस्था की डुबकी लगाकर मां गंगा से मनोकामनाओं की पूर्ति का आशीर्वाद लिया। स्नान के बाद श्रद्धालुओं ने गंगा मैया की पूजा-अर्चना कर दान-पुण्य किया। घाट पर लगे मेले में चाट, बरूले, छोले-भटूरे, जलेबी और पेठे की मिठाइयों की दुकानों पर विशेष रौनक देखी गई। विभिन्न सामाजिक व धार्मिक संगठनों की ओर से जगह-जगह भंडारों का आयोजन किया गया, जिससे पूरे क्षेत्र में भक्ति और सेवा का माहौल बना रहा।

मुड़किया घाट पर लगा मेला

भमोरा के मुड़किया घाट पर लगने वाले मेले में श्रद्धालुओं ने गंगा में डुबकी लगाई वही सुरक्षा को देखते हुए भारी पुलिस बल तैनात रहा। यहां बताते चले की 3 वर्ष पूर्व गंगा स्नान करते समय तीन बच्चों की डूब कर मौत हो गई थी। जिसके चलते हर वर्ष गोताखोरों को भी लगाया जाता है।

सूची में जुड़े फर्जी मतदाताओं को हटाने की मांग

नवाबगंज, अमृत विचार : तहसील क्षेत्र के गांव लाडपुर उस्मानपुर गांव की पंचायत मतदाता सूची में जुड़े सैंथल नगर पंचायत के सैकड़ों मतदाताओं के नाम ग्राम की मतदाता सूची से हटाए जाने की मांग ग्रामीणों ने की है।

गांव के इरशाद अहमद , अली अहमद , एजाज अहमद ने जिला अधिकारी को सौंपे पत्र में ग्राम लाडपुर उस्मानपुर की मतदाता सूची में सैंथल नगर पंचायत कि इस्लामनगर बस्ती के सैकड़ों मतदाताओं के नाम जुड़े होने का आरोप लगाते हुए इन्हें तत्काल काटे जाने की मांग की है। ग्रामीणों के मुताबिक उन्होंने ग्राम लाडपुर उस्मानपुर की मतदाता सूची में शामिल सभी करीब 1000 मतदाताओं के इस्लाम नगर बस्ती की गाटा संख्या भी शिकायत के साथ संलग्न की है।

यात्रियों की दुश्वारियां

कार्तिक मेले में आए श्रद्धालुओं ने अपने अपने घरों में जाने के लिए रामगंगा स्टेशन पर ट्रेन का इंतजार किया और जब ट्रेन आई तो यात्रियों की भीड़ के सामने ट्रेन में जगह कम पड़ गई। यात्रियों से ठसाठस भरी ट्रेन में खड़े होने की जगह पाने के लिए लोग परेशान रहे। काफी देर तक वह ट्रेन में घुसने की ही जद्दोजहद करते रहे लेकिन उन्हें कोच में खड़े होने की जगह तक नहीं मिली तो थककर उन्होंने ट्रेन से जाने का विचार ही त्याग दिया। ट्रेन के हर कोच में यात्रियों की संख्या ज्यादा रही। ● अमृत विचार

न्यूज डायरी

महिला परामर्श केन्द्र फिर से चालू, काउन्सलर बदले

नवाबगंज, अमृत विचार : डेढ़ वर्ष से बंद चल रहा परामर्श केन्द्र फिर से आरम्भ हो गया । बुधवार को आयोजित परामर्श दिवस में घरेलू हिंसा व दहेज तीन शिकायतें आयी , जिनमें से एक का भी निस्तारण नहीं हो सका । अभी परामर्श केन्द्र के काउन्सलरों को लेकर असमंजस की स्थिति बनी हुई है। बार के पूर्व अध्यक्ष सुधाकर लाल रस्तोगी, भाजपा की पूर्व जिलाध्यक्ष विमला शुक्ला , माहिर अली जैदी व निशात बानो के साथ ही जिला विधि न्यायालय के ज्ञानेश कुमार तथा महिला सिपाही वर्षा प्रहर ने शिकायतें सुनी । कोतवाल अरुण कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि अभी काउन्सलर्स के नाम चयनित नही किए गए है। शीघ्र ही अगले आयोजन से पूर्व नाम चयनित कर लिए जाएंगे ।

झिड़ी धाम आश्रम में कन्या पूजन

बरेली, अमृत विचार : झिड़ी धाम आश्रम में बुधवार को कार्तिक पूर्णिमा स्नान के बाद कन्या पूजा और संकीर्तन का आयोजन किया गया। दुख निवारण सरोवर में काशीपुर, मुरादाबाद, रामनगर, दिल्ली से आए लोगों ने भी स्नान किया। इस मौके पर 108 कन्याओं का पूजन कर उपहार के रूप में खिलौने दिए गए। हरीश सिधवानी ने माता के दरबार कंचिका का खेल रही भजन गाया। इसके बाद संगत ने भंडारे का प्रसाद ग्रहण किया किया। कार्यक्रम में भजन गायक जगदीश भाटिया, प्रेम भाटिया, संजीव सोई, विनीत अरोड़ा, देवेंद्र दुआ आदि का सहयोग रहा।

बाबा श्री मनकामेश्वर नाथ मंदिर पर मनाई देव दीपावली

बरेली, अमृत विचार : कार्तिक पूर्णिमा पर बन्नूवाल नगर स्थित बाबा श्री मनकामेश्वर नाथ मंदिर पर भगवा परिषद मन्दिर कमेटी ने 251 दीप जलाकर देव दीपावली मनाई। समिति ने मां गंगा और महादेव से जन कल्याण की कृपा बनाएं रखने की प्रार्थना की। इस मौके पर भगवा परिषद के मंडल अध्यक्ष दिवाकर आर्य, अनुपम दीक्षित, संजय गुप्ता, अमन मिश्रा, चंद्रकांत तिवारी, रामभोले गुप्ता, सुनील दीक्षित आदि लोग मौजूद रहे।

श्री बाला जी दरबार की प्रभातफेरी का समापन

रिठौरा, अमृत विचार : धार्मिक नगरी रिठौरा में सावन मास के प्रारंभ से शुरू हुई नियमित प्रभात फेरी का समापन बुधवार को कार्तिक पूर्णिमा के पावन अवसर पर हो गया। रिठौरा स्थित श्री बालाजी दरबार से महंत अरविंद पाण्डेय के नेतृत्व में यह प्रभात फेरी पिछले दो माह से हर भोर में पूरे नगर में निकाली जाती थी, जिसने नगर के वातावरण को भक्ति और आस्था से सराबोर रखा। प्रभात फेरी रिठौरा नगर की सामुदायिक एकता का अद्भुत प्रतीक बनी रही। इसमें नगर के हर वर्ग और समाज के महिला-पुरुष बिना किसी भेदभाव के उत्साहपूर्वक सहभागिता करते थे। प्रभात फेरी के दौरान हरि संकीर्तन के मधुर भजन गाए जाते थे, जिससे भोर में ही ऊर्जा और सकारात्मकता का संचार होता था। महंत अरविंद पाण्डेय ने पूर्ण समर्पण के साथ दो माह तक इस धार्मिक अनुष्ठान का नेतृत्व किया। इस दौरान डल्लो कश्यप ने दो माह तक नियमित रूप से ढोलक बजाई ।

तीन दिनी उत्तरायणी मेला 13 जनवरी से

कार्यालय संवाददाता, बरेली

अमृत विचार : उत्तरायणी जन कल्याण समिति की ओर से तीन दिवसीय उत्तरायणी मेला- 2026 का आयोजन बरेली क्लब मैदान पर 13, 14 व 15 जनवरी को होगा। जिसमें उत्तराखंड की लोक संस्कृति की छटा का अनूठा संगम देखने को मिलेगा।

बुधवार को स्टेडियम रोड स्थित खुशहाली सभागार में अध्यक्ष अमित पंत की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में मेले की तारीखों का एलान किया गया। 30 वां उत्तरायणी मेला भव्य तरीके आयोजित किया जाएगा। महामंत्री मनोज पांडेय ने बताया कि इस बार मुख्य प्रायोजक कृषक ऑर्गेनिक ताड़ीखेत रानीखेत रहेंगे। यह समिति के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। कोषाध्यक्ष कमलेश बिष्ट ने बताया कि अभी तक लगभग 90 स्टाल बुक हो चुके

खुशहाली सभागार में बैठक करते उत्तरायणी जन कल्याण समिति के पदाधिकारी।

● उत्तरायणी जन कल्याण समिति ने कार्यक्रम घोषित किया

हैं। अब मात्र 50 स्टाल ही बचे हैं। सांस्कृतिक प्रभारी पूरन दानू ने बताया कि इस बार मेले में नए उभरते हुए कलाकारों को मंच प्रदान किया जाएगा। लोकप्रिय कलाकारों को मेले का निमंत्रण दिया जा चुका है। ऑडिटर कैलाश पांडेय, मेला प्रभारी चंदन नेगी, मुकुल भट्ट, विनोद जोशी, तारा जोशी, भुवन पांडेय, रमेश शर्मा, आनंद रतूड़ी, देवेंद्र रावत, कुंवर सिंह बिष्ट, अम्बा दत्त मठपाल, जीत सिंह बोहरा, शंकर सिंह बोहरा, अंशुल सती, जगदीश सती, भवानी जोशी, दिनेश पंत, चंद्र प्रकाश जोशी, केसी पांडेय, डॉ. अनिल बिष्ट, मदन बिष्ट, पूरन मेहरा, प्रभात गैरोला, पुष्कर राणा आदि मौजूद रहे। संचालन महामंत्री मनोज पांडेय और वरिष्ठ सचिव रामेश्वर पांडेय ने किया।

अजीम व अंकुर ने प्राप्त किया दूसरा स्थान

कार्यालय संवाददाता, बरेली

अमृत विचार : बिजनौर के नहटौर में हुई उत्तर प्रदेश श्री एवं उत्तराखंड श्री शरीर सोष्ठव प्रतियोगिता में बरेली के खिलाड़ियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। इसमें रामपुर के नईम उत्तर प्रदेश-उत्तराखंड श्री बने। बरेली के अजीम फिजिक में उत्तर प्रदेश रनरअप रहे। बॉडी बिल्डिंग उत्तर प्रदेश मेन फिजिक में बरेली के अकुंर त्यागी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। यूपी फिटनेस एंड बॉडी बिल्डिंग एसोसिएशन के प्रदेश उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद घिल्डियाल ने बताया कि शिव चौहान ने 60 से 65 किलोग्राम में द्वितीय, शबाब ने 70 से 75 किलोग्राम में द्वितीय, राजन वर्मा ने 55 से 60 किलोग्राम में तृतीय, नवाजिश ने 75 से 80 किलोग्राम में तृतीय , गौरव आजाद ने 80 से 85 किलोग्राम में प्रथम स्थान प्राप्त कर बरेली का गौरव बढ़ाया। प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल में प्रदेश महासचिव अल्ताफ हुसैन, डॉ. नजमुन नबी, अलीम मुहम्मद, विपिन बाबा, सलीम अख्तर रहे। मुशाहिद टीम के मैनेजर एवं कोच के रूप में रहे। 29 नवंबर को मिस्टर रुहेलखंड बॉडी बिल्डिंग प्रतियोगिता का आयोजन संभल में किया जाएगा। जिसमें बरेली के खिलाड़ी भी प्रतिभाग करेंगे।

ट्रॉफी के साथ विजेता।

अमृत विचार

बरेली, गुरुवार, 6 नवंबर 2025

बरेली

मंदिर में श्रीराम दरबार की हुई स्थापना

रिठौरा, अमृत विचार: गांव कलापुर स्थित प्राचीन श्री बालाजी मंदिर में बुधवार को श्रीराम दरबार की भव्य मूर्तियों की स्थापना की गई। अनुष्ठान पंडित संजीव कृष्ण के सान्निध्य में संपन्न हुआ। भंडारे में कन्याओं को भोजन कराया गया।

पूर्वोत्तर रेलवे

ई–टेन्डरिंग निविदा सूचना सं0 50/2025

भारत के राष्ट्रपति की ओर से एवं उनके लिये मंडल रेल प्रबंधक (इंजी0) पूर्वोत्तर रेलवे, इज्जतनगर निम्नलिखित कार्य हेतु आनलाईन (ई–टेन्डरिंग) के माध्यम से ''खुली'' निविदा आमंत्रित करते है। **क्र.सं. :–1., कार्य का विवरण:**– इज्जतनगर लोको शेड में सीएनसी शेड के पास 50 टन क्षमता वाली ईओटी क्रेन के लिए गैन्ट्री रेल के प्रावधान के साथ बे नं0 1 एवं 2 का विस्तार, बे नं0 4 एवं 5 में कैटवॉक को हटाना एवं वर्क क्षेत्र में भराई का कार्य एवं अन्य विविध कार्य।, **अनुमानित लागत रूपयो मे:**– रु. 4,52,12,758.29, **बयाना राशि रूपयो में:**– रु. 3,76,100/–, निविदा प्रपत्र का मूल्य. **शून्य** स्वीकृति पत्र जारी होने की तिथि से कार्य पूर्ण करने की अवधि **08 माह**, **1.** ई–निविदा दिनांक **25.11.2025** को **15.00 बजे** तक आन लाइन जमा कर सकेंगे।, **2.** ई–निविदा की प्रस्तुति हेतु पूर्ण विवरण भारतीय रेलवे के **IREPS** वेब साईट **www.ireps.gov.in** पर देखे।

मंडल रेल प्रबंधक (इंजी0)
मुजाधि/डब्लू–320 इज्जतनगर
ट्रेनों में बीड़ी/सिगरेट न पियें

गुरु नानक देव ने संपूर्ण मनुष्य जाति के उत्थान को उपदेश दिए

आसा की वार पाठ से शुरू हुआ भव्य कीर्तन, बरेली कॉलेज के हॉकी मैदान में सजा मुख्य दीवान, हजारों की संख्या में पहुंची संगत, छका लंगर

कार्यालय संवाददाता, बरेली

अमृत विचार : सेंट्रल गुरुपर्व कमेटी की ओर से गुरु नानक देव के प्रकाश पर्व पर बरेली कॉलेज के हॉकी मैदान में मुख्य दीवान सजाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सुबह आठ बजे से आसा की वार के पाठ से हुआ। सिख मिशनरी कॉलेज के बच्चों ने गुरुवाणी कीर्तन का गायन किया। रागी जत्थों ने गुरुवाणी से संगत को निहाल किया। गुरु नानक को समस्त मनुष्य जाति का सांझा रहबर बताया। साथ ही कहा गया कि, गुरु नानक देव ने केवल एक धर्म मात्र के लिए नहीं, बल्कि संपूर्ण मनुष्य जाति के उत्थान के लिए उपदेश दिए और कार्य किया।

इस मौके पर मंदीप सिंह के बच्चों ने रागों में रसभिन्ना कीर्तन का गायन किया। सिख मिशनरी कॉलेज के उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के जोनल ऑर्गेनाइजर मनमीत सिंह ने "गुरुनानक साहिब के उपदेशों की जानकारी दी। हापुड़ से पहुंचे इंदरजीत सिंह ने रसभिन्ना कीर्तन किया। गंगानगर से आए हरविंदर सिंह ने गुरु नानक देव के जीवन पर प्रकाश डाला और उनकी शिक्षाओं से संगत को अवगत कराया। उन्होंने गुरु नानक को समस्त मनुष्य जाति का सांझा रहबर बताया। वह बोले कि गुरु नानक ने केवल एक धर्म मात्र के लिए नहीं बल्कि संपूर्ण मनुष्य जाति के उत्थान के लिए उपदेश दिए और कार्य किया।

कीर्तन में वन मंत्री डॉ. अरुण कुमार, कैंट विधायक संजीव अग्रवाल, मेयर डॉ. उमेश गौतम, अर्बन को-ऑपरेटिव बैंक की डायरेक्टर श्रुति गंगवार, डॉ. केएम अरोड़ा, सोनू कालरा, उमेश कठेरिया, राजा चावला, डॉ. अनीश बेग आदि ने भाग लिया। जनप्रतिनिधियों ने गुरु साहिब के आगे माथा टेककर गुरुवाणी सुनी और गुरु की खुशियां प्राप्त कीं। पंजाब यूनिवर्सिटी के प्रो. डॉ. अलंकार सिंह ने शास्त्रीय रागों के साथ कीर्तन कर संगत को भाव विभोर कर दिया। उन्होंने शब्द गायन भी किया। जगह-जगह प्रसाद के स्टाल लगाए गए। सुभाषनगर गुरुद्वारा कमेटी के अध्यक्ष मनजीत सिंह नागपाल ने निशुल्क पौधा वितरण का स्टाल लगाकर पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए लोगों को जागरूक किया। जिसमें वनमंत्री ने संगत को पौधों का वितरण किया। सभी ने गुरु का लंगर ग्रहण किया। सेंट्रल गुरु पर्व कमेटी के प्रधान सरदार परमजीत सिंह और महासचिव सरदार हरप्रीत सिंह खालसा ने संगतों का आभार जताया। महासचिव हरप्रीत सिंह खालसा ने कहा कि हमें अपनी धार्मिक स्कूलों को बेहतर बनाने की जरूरत है। शहर के प्रमुख स्कूल श्री गुरु हरकिशन पब्लिक स्कूल को उच्च शिक्षा के लिए मिलकर कार्य करेंगे और एक बेहतरीन स्कूल बनाएंगे। ताकि हमारे बच्चे धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ पंजाबी में निपुण होकर उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकें। डॉ. महेंद्र सिंह बासु, सरदार दलबीर सिंह, सरदार हरप्रीत सिंह बिंद्रा, मनमीत सिंह, प्रद्युमन, सुरिंदरजीत सिंह छाबरा, हरप्रीत सिंह गोलू आदि का सहयोग रहा। कमेटी के हरप्रीत सिंह गोलू ने बताया कि मुख्य कीर्तन दीवान सुभाषनगर गुरुद्वारे में गुरुवार शाम 7 से रात 11 बजे तक सजेगा।

संगत के साथ मौजूद वनमंत्री डॉ. अरुण कुमार, विधायक संजीव अग्रवाल, मेयर डॉ. उमेश गौतम व अन्य। ● अमृत विचार

कीर्तन करते पटियाला से आए प्रो .अंलकार सिंह व अन्य। ● अमृत विचार

कला प्रतियोगिता में भाग लेते बच्चे।

कार्यालय ग्राम पंचायत मानपुर अहियापुर वि.खं. क्यारा, बरेली

निविदा सूचना

समस्त पंजीकृत फर्म ठेकेदारों को सूचित किया जाता है कि वित्तीय वर्ष 2025–26 मे अन्तर्गत ग्राम पंचायत मानपुर अहियापुर में निम्नलिखित कार्य कराये जाने हेतु निविदा आमंत्रित की जाती है–

क्र.	कार्य का नाम	अनुमानित राशि	धरोहर राशि	योजना का नाम
1	हसमत अली के घर से शहलीन के घर तक सी.सी. निर्माण कार्य।	397722/–	2 प्रतिशत	मनरेगा
2	मेवाराम के घर से चन्दन के घर तक सी.सी. निर्माण कार्य।	397964/–	2 प्रतिशत	मनरेगा

उपयुक्त कार्य ग्राम पंचायत मानपुर अहियापुर की निगरानी में कराया जायेगा पंजीकृत फर्म को सामग्री की आपूर्ति कार्य स्थल पर कराये जाने हेतु दिनांक 16.11.2025 से 12.11.2025 दोपहर 2 बजे तक सीलबन्द निविदा आमंत्रित की जाएगी तथा 13.11.2025 को अपराहन दो बजे कार्यालय में ग्राम प्रधान और जनप्रतिनिधियों के सामने मोहरबंद लिफाफों को खोला जाएगा।

ग्राम प्रधान सचिव

बीसलपुर किसान सहकारी चीनी मिल लि., बीसलपुर (पीलीभीत)

पत्रांक: बी.के.एस./क्रय/2025–26/1823 दिनांक: 05.11.2025

ई–निविदा सूचना

इस मिल समिति में वर्ष 2025–26 में अनुभवी पार्टियों से मिल के तीनों व्यायलरों के फर्नेस, चैम्बर एवं वैट स्क्रवर के ऐश पौण्ड में एकत्रित राखी को हटाने संबंधी कार्य, प्रेसमड (मैली) बिक्री कार्य हेतु दिनांक 14.11.2025 तक ई–निविदाएं निर्धारित धरोहर राशि जमा करने के उपरांत आमंत्रित की जाती है। ई–निविदा की नियम एवं शर्ते व विस्तृत विवरण www.etender.up.nic.in से एवं संघ कार्यालय लखनऊ की वेबसाइट www.upsugarfed.org से डाउनलोड की जा सकती है। यदि आवश्यक हुआ तो एल–1 / एच–1 बिडर्स से निगोसियेशन किया जा सकता है। अद्योहस्ताक्षरी को निविदा की शर्तो में परिवर्तन करने एवं बिना कारण बताये एक या समस्त ई–निविदायें निरस्त करने का अधिकार सुरक्षित होगा।

डॉ. हरी कृष्ण गुप्ता
प्रधान प्रबन्धक

गुरु परंपरा सेवा और त्याग की परम भावना का प्रतीक है

बरेली कॉलेज में हॉकी मैदान पर सजे दीवान में सपाइयों ने दी हाजिरी।

बरेली, अमृत विचार : सपा के जिला एवं महानगर पदाधिकारियों ने बुधवार को गुरु नानक देव के प्रकाश पर्व पर बरेली कॉलेज मैदान में सजे दीवान में पहुंचकर मत्था टेका और लंगर ग्रहण किया।

जिलाध्यक्ष शिव चरन कश्यप ने कहा कि राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने इस पावन पर्व पर संदेश दिया है कि गुरु नानक देव की शिक्षाएं हमें सिखाती हैं कि समाज में कोई छोटा-बड़ा नहीं होता। सभी मनुष्य एक समान हैं। समाजवादी कार्यकर्ता इसी सोच के साथ समाज में प्रेम और सद्भाव की लौ जलाए रखें। महानगर अध्यक्ष शमीम खां सुल्तानी ने कहा कि गुरु परंपरा सेवा और त्याग की परम भावना का प्रतीक है। अशोक यादव, रविन्द्र सिंह यादव, मनोहर पटेल, मुस्ताक अहमद, सुरेंद्र सोनकर, दीपक शर्मा, डॉ. अनीस बेग, राजेश मौर्य, बृजेश श्रीवास्तव, हरिओम प्रजापति, श्यामवीर यादव, स्मिता यादव, ऊषा यादव, बीना गौतम, जितेंद्र मुंडे, रामसेवक प्रजापति,ओमेंद्र यादव, राकेश गुप्ता, रमीज हाशमी, हिमांशु सोनकर, गंगा सिंह, अमित गिहार आदि मौजूद रहे।

श्री सनातन धर्म मंदिर में कार्तिक महोत्सव का समापन

बरेली, अमृत विचार : मॉडल टाउन स्थित श्री सनातन धर्म मंदिर में चल रहे कार्तिक महोत्सव का बुधवार को कार्तिक मास की कथा के विश्राम के साथ समापन हुआ।

मंदिर के मुख्य पुजारी नरेश मिश्रा ने कथा का विश्राम कराया। उन्होंने बताया कि कार्तिक मास भगवान विष्णु की पूजा और उनके जागृति का महीना है। इस मास में पवित्र नदियों में स्नान, दान-पुण्य, तुलसी पूजा और दीपदान का विशेष महत्व है। धार्मिक सेवा समिति ने श्री हरि मंदिर, श्री रामायण मंदिर, और श्री दरगाह मंदिर के भजन मंडलों ने हरि नाम का संकीर्तन किया। दोपहर 12 बजे से प्रसादी का वितरण समिति के सदस्यों ने किया। महामंत्री संजीव चांदना ने कार्तिक महोत्सव के आयोजन के लिए सभी भक्तजनों का और धार्मिक सेवा समिति के सदस्यों को धन्यवाद दिया। जुगल किशोर, रोहित भसीन, सुशील अरोड़ा, रवि छाबड़ा, अनिल अरोड़ा, राकेश भाटिया आदि का सहयोग रहा।

दरगाह आला हजरत पर उर्स-ए-हामिदी 8 से

कार्यालय संवाददाता, बरेली

अमृत विचार : आला हजरत के बड़े बेटे मुफ्ती हामिद रजा खान का 85 वां दो रोजा उर्स-ए-हामिदी दरगाह परिसर में 8 और 9 नवंबर को मनाया जाएगा। इस मौके पर मदरसा मंजर-ए-इस्लाम का 122 वां दीक्षांत समारोह (दस्तारबंदी) कार्यक्रम होगा। मुफस्सिर ए आजम इब्राहीम रजा खान (जिलानी मियां) के 62 वें कुल शरीफ की रस्म अदा की जाएगी। सभी कार्यक्रम दरगाह प्रमुख मौलाना सुब्हान रजा खान (सुब्हानी मियां) की सरपरस्ती, सज्जादानशीन मुफ्ती अहसन रजा कादरी (अहसन मियां) की सदारत और सय्यद आसिफ मियां की देखरेख में होंगे।

दरगाह से जुड़े नासिर कुरैशी ने बताया कि उर्स-ए- हामिदी का आगाज 8 नवंबर को सुबह कुरानख्वानी से होगा। सुबह 8 बजे खत्म बुखारी शरीफ की महफिल होगी। जिसमें शेखुल हदीस मदरसे से फारिग होने वाले सभी तलवा (छात्रों) को आखिरी दर्स देंगे। सुबह 10:30 बजे जिलानी मियां के कुल शरीफ की रस्म अदा की जाएगी। रात में बाद नमाज ए ईशा तहरीरी और तकरीरी मुकाबला होगा, जो रात भर चलेगा। 9 नवंबर को दिन में नात ओ मनकबत का दौर जारी रहेगा। मुख्य कार्यक्रम बाद नमाज ए ईशा (रात 9 बजे) शुरू होगा। दरगाह के मुफ्ती सलीम नूरी बरेलवी दरगाह प्रमुख सुब्हानी मियां का पैगाम पढ़ेंगे। उलमा हुज्जातुल-ए-इस्लाम पर रोशनी डालेंगे। रात 10 35 बजे हुज्जातुल-ए-इस्लाम के कुल शरीफ की रस्म अदा की जाएगी। इसके बाद सज्जादानशीन मुफ्ती अहसन मियां की खुसूसी दुआ होगी। इसके बाद दस्तारबंदी का कार्यक्रम शुरू होगा। कुल 192 छात्रों की दस्तारबंदी दरगाह प्रमुख सुब्हानी मियां और सज्जादानशीन मुफ्ती अहसन मियां के हाथों होगी। बुधवार को उर्स की तैयारियों को लेकर दरगाह पर बैठक की गई। मदरसा मंजर -ए-इस्लाम के सदर मुफ्ती आकिल रजवी, हाजी जावेद खान, मौलाना अबरार उल हक, शाहिद नूरी, परवेज नूरी,औरंगजेब नूरी, अजमल नूरी, शान रजा, ताहिर अल्वी मौजूद रहे।

ताजुश्शरिया दरगाह पर भी होंगे कार्यक्रम

दरगाह ताजुश्शरिया पर भी उर्स के कार्यक्रम होंगे। जमात रजा ए मुस्तफा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सलमान हसन खान (सलमा मियां) ने बताया कि आला हजरत के बड़े बेटे हामिद रजा खान अपने इल्म और फ़ज्ल में तो लाजवाब थे ही साथ ही साथ उनका चेहरा ऐसा नूरानी था कि जो देखता था दीवाना हो जाता था। जमात रजा ए मुस्तफा के राष्ट्रीय महासचिव फरमान हसन खान (फरमान मियां) ने बताया कि हुज्जतुल इस्लाम ने अपनी जिंदगी को सिर्फ खिदमते दीन के लिए वक्फ दिया। सय्यद अजीमुद्दीन, मुफ्ती नश्तर फारूकी, मुफ्ती जैद मौलाना, मुफ्ती आजम, डॉ. मेहंदी हसन, इकराम रजा, शमीम अहमद, मोइन खान, समरान खान, बख्तियार खान, दन्नी अंसारी आदि मौजूद रहे।

● उर्स का दो दिवसीय कार्यक्रम दरगाह प्रमुख ने किया जारी

कार्यालय जिलाधिकारी, खीरी। (खनन अनुभाग)

संख्या–3012 /खनिज/विज्ञप्ति–सा0 बालू/2025–26 दिनांक 03–11–2025

संशोधित सूचना/शुद्धि पत्र

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि कार्यालय जिलाधिकारी खीरी के पत्र संख्या–3009/खनिज/विज्ञप्ति/सा0बालू/2025–26 दिनांक 30.10.2025 को जारी विज्ञप्ति को अपरिहार्य कारणों से संशोधित किया जा रहा है। अतः नवीन शुद्धि पत्र के माध्यम जनपद–खीरी में प्रवाहित नदियों के तल में बालू के निम्न विवरण के अनुसार रिक्त खनन क्षेत्रों को उ0प्र0 उप खनिज (परिहार) नियमावली–2021 के नियम–23 के उप नियम–(1) के प्राविधानों के अन्तर्गत उपलब्ध घोषित किया जाता है।

उत्तर प्रदेश उप खनिज (परिहार) नियमावली–2021 के अध्याय–4 के नियम 23(1) के प्राविधानों के अन्तर्गत ई–निविदा सह–ई–नीलामी प्रणाली के माध्यम से खनन पट्टे पर स्वीकृत किये जाने हेतु निम्नलिखित क्षेत्र उपलब्ध है–

1– क्षेत्र का विवरण :–

क्र0 सं0	उपखनिज का नाम	नदी का नाम	क्षेत्र का विवरण: तहसील	ग्राम	गाटा सं0/खण्ड सं0/जोन सं0	क्षेत्रफल (हे0 में)	जियो कोआर्डिनेट्स	नियमावली 2021 के अनुसूची–1 के अनुसार रायल्टी दर (रू0 प्रति घनमीटर)	खनन योग्य आकलित उप खनिज का भण्डार (घनमी0 प्रतिवर्ष)	प्रथम वर्ष में आंकलित भण्डार की कुल रायल्टी रूपयों में (कालम–9 में अंकित घनमी0 प्रतिवर्ष को कालम– 10 में अंकित रायल्टी की दर से गुणा करने पर उपलब्ध सकल धनराशि) (रूपये में)	अर्नेस्टमनी (कालम 11 में अंकित सकल धनराशि का 25 प्रतिशत) (रूपये में)
1	2	3	4	5	6	7	8	10	11	12	13
01	सा0 बालू	शारदा नदी	लखीमपुर	सर्वा शिवपुरी	183अ	13.06हे0	A-28° 7'13.18''N 80° 50'40.28''E B-28° 7'9.51''N 80° 51'3.24''E C-28° 6'59.17''N 80° 50'59.16''E D-28° 7'4.58''N 80° 50'47.22''E	55.00	1,56,720.00	86,19,600.00	21,54,900.00
02	सा0 बालू	शारदा नदी	लखीमपुर	सर्वा शिवपुरी	183ब	13.06हे0	A-28° 7'9.51''N 80° 51'3.24''E B-28° 6'59.17''N 80° 50'59.16''E C-28° 6'50.82''N 80° 51'9.91''E D-28° 7'2.99''N 80° 51'14.38''E	55.00	1,56,720.00	86,19,600.00	21,54,900.00
03	सा0 बालू	शारदा नदी	लखीमपुर	सर्वा शिवपुरी	193ब	13.47हे0	A-28° 7'6.61''N 80° 51'31.76''E B-28° 7'4.64''N 80° 51'42.40''E C-28° 7'1.67''N 80° 51'45.87''E D-28° 6'52.34''N 80° 51'39.19''E E-28° 6'57.42''N 80° 51'27.47''E	55.00	175110.00	96,31,050.00	24,07,763.00

ई–निविदा सह ई–नीलामी की कार्ययोजना एवं अवधि निम्नानुसार सम्पादित की जायेगी :–

प्रेस विज्ञप्ति (विज्ञप्ति का प्रकाशन)	06.11.2025
प्रथम चरण ई–निविदा (ई–टेण्डर) की अवधि	दिनांकः 08.12.2025 (पूर्वाह्न 10:00 बजे) से 12.12.2025 (अपरान्ह 17:00 बजे) तक
प्रथम चरण में प्राप्त ई–निविदा (बिड) का खोला जाना एवं उसका मूल्यांकन	15.12.2025 पूर्वाह्न 11:00 बजे से क्रमांक–1 से 2 पर विज्ञापित क्षेत्र 16.12.2025 पूर्वाह्न 11:00 बजे से क्रमांक–3 पर विज्ञापित क्षेत्र
द्वितीय चरण ई–नीलामी की अवधि।	15.12.2025 अपरान्ह 01:00 बजे से 15:00 बजे तक क्रमांक–1 एवं 2 पर विज्ञापित क्षेत्र 16.12.2025 अपरान्ह 01:00 बजे से 15:00 बजे तक क्रमांक–3 पर विज्ञापित क्षेत्र

ई–निविदा सह ई–नीलामी से सम्बन्धित सम्पूर्ण प्रकिया एवं शर्तो की जानकारी ऑनलाइन एम0एस0टी0 सी0 के ई आक्शन पोर्टल WWW.mstcecommerce.com पर अपलोड करा दिया गया है। जिसे सम्बन्धित सभी निविदादाता/बोलीदाता द्वारा देखा जा सकता है। उक्त से सम्बन्धित सम्पूर्ण प्रकिया एवं शर्तो की जानकारी किसी भी कार्य दिवस में खनिज कार्यालय लखीमपुर खीरी एवं कार्यालय अपर जिलाधिकारी वि0एवं रा0 कलेक्ट्रेट खीरी से प्राप्त की जा सकती है।

(दुर्गा शक्ति नागपाल)
जिलाधिकारी, लखीमपुर–खीरी।

UP-239937 दिनांक 04.11.2025 विज्ञापन
वेबसाइट www.up.gov.in पर उपलब्ध है।

कार्यालय अधिशासी अभियन्ता प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0, पीलीभीत

पत्रांक 2390/3ए दि0 27/10/2025

अल्प कालीन ई–निविदा आमंत्रण सूचना

1. महामहिम राज्यपाल महोदय, उ0प्र0 की ओर से अधिशासी अभियन्ता प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0, पीलीभीत द्वारा लोक निर्माण विभाग में पंजीकृत योग्य ठेकेदारों से प्रतिशत दरों पर बिड आमंत्रित की जाती है। बिड प्रस्तुत करते समय निविदा के आई0टी0बी0 में उल्लिखित शर्तो के अनुसार बिड अपलोड करें।
2.

क्र0 सं0	जनपद का नाम	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख रू0 में)	धरोहर धनराशि (लाख रू0 में)	निविदा प्रपत्र का मूल्य (रू0 में)	कार्य पूर्ण करने की अवधि (वर्षाऋतु सहित)	फर्म/ठेकेदारों की आवश्यक पंजीकरण श्रेणी
1	2	3	4	5	6	7	8
1	पीलीभीत	वित्तीय वर्ष 2025–26 के अन्तर्गत जनपद पीलीभीत में धनाराघाट नदी में पान्टून निर्माण हेतु प्रयागराज से पान्टून निर्माण सामग्री ढुलाई का कार्य।	27.00	2.70	600+300+GST18% (Rs. 900+162= Rs. 1062.00)	12 माह	A,B,C&D (Bridge Work)

3. बिड डाक्यूमेन्ट बेबसाइट http://etender.up.nic.in पर दिनांक 07.11.2025 से दि0 15.11.2025 को मध्यान्ह 12:00 बजे तक अपलोड किये जा सकते है, जिनकी तकनीकी बिड तद्दिनांक 15.11.2025 को अपरान्ह 12:30 बजे खोली जायेगी।

निविदा से सम्बन्धित जानकारी http://etender.up.nic.in पर उपलब्ध होगी।

(राजेश चौधरी)
अधिशासी अभियन्ता
प्रान्तीय खण्ड, लोनिवि, पीलीभीत।

UP-239813 दिनांक 03.11.2025 विज्ञापन
वेबसाइट www.up.gov.in पर उपलब्ध है।

कार्यालय अधिशासी अभियन्ता, ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग, प्रखण्ड–लखीमपुर खीरी।

पत्रांक. 1060/ग्रा0अभि0वि0/निविदा पत्रा0–1/2025–26, दिनांक. 10.10.2025

निविदा सूचना

महामहिम राज्यपाल महोदय, उत्तर प्रदेश, की ओर से अधिशासी अभियन्ता, ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग, प्रखण्ड–लखीमपुर खीरी के अर्न्तगत जनपद लखीमपुर खीरी में निम्नलिखित कार्यों हेतु उ0प्र0 ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग में ए,बी,सी, डी0 श्रेणी के पंजीकृत ठेकेदारों/फर्मो से प्रतिशत दरों में अधोलिखित कार्य की ई–टेण्डरिंग के माध्यम से निविदा आमंत्रित की जाती है।

क0 सं0/लाट सं0	विकास खण्ड	कार्य का नाम	लागत लाख में	2 प्रतिशत धरोहर धनराशि लाख में	निविदा पत्र का मूल्य (समस्तकरों सहित रू0 में)	कार्य पूर्ण करने का समय
1	2	3	4	5	6	7
		विधायक निधि				
01	लखीमपुर	ग्राम पंचायत बैरागर में राम प्रकाश के मकान से राम सागर के मकान तक इण्टरलाकिंग मार्ग व नाली का निर्माण कार्य, 270 मी0। वि0ख0 लखीमपुर	22.845	0.450	944.00	2 माह
02	लखीमपुर	ग्राम पंचायत बाजपेयी के मजरा बाबूराम पुर्वा में खड़न्जे से विश्राम के मकान होते हुए सुरेश के घर के तक मिट्टी खड़न्जा व नाली निर्माण कार्य, 160 मी0। वि0ख0 लखीमपुर	12.090	0.250	856.00	2 माह
03	नकहा	ग्राम पंचायत दोनवा के मजरा दोनवा पुरवा में शिव कुमार के मकान से मातारानी स्थान तक दोनों तरफ नाली एवं इण्टरलाकिंग कार्य, 180 मी0। वि0ख0 नकहा	16.980	0.340	944.00	2 माह
04	लखीमपुर	जनपद लखीमपुर–खीरी कलेक्ट्रेट सभागार के सामने पार्क में तिरंगा व सौंदर्यीकरण का निर्माण कार्य। लखीमपुर न0पा0	15.000	0.300	944.00	2 माह

1. वेब साइट पर निविदा की उपलब्धता तिथि- 11.11.2025 से 17.11.2025 तक
2. ई–प्रोक्योरमेन्ट के माध्यम से निविदा प्राप्त करने की अन्तिम तिथि एवँ समय–17.11.2025 समय –12.00 बजे दोपहर तक
3. ई–प्रोक्योरमेन्ट के माध्यम से तकनीकी निविदा खोलने की तिथि एवँ समय 17.11.2025 समय – 12.30 बजे दोपहर से
4. निविदा आमंत्रण कर्ता को संशोधन/शुद्धि पत्र जारी करने का आई0 टी0 बी0 क्लाज–9 के अनुसार अधिकार है, जो आन लाइन उपलब्ध रहेगा जो किसी भी समाचार पत्र में प्रकाशित नहीं होगा। समस्त इच्छुक बिडर्स को सलाह दी जाती है कि वे ई–टेण्डर पोर्टल को नियमित रूप से अवलोकन करते रहें और अन्य आवश्यक जानकारी एवँ निविदा प्रपत्र डाउन लोड करने हेतु विवरण वेबसाइट http:// etender.up.nic.in पर उपलब्ध है।

(हेमंत सक्सेना) अधिशासी अभियन्ता,
ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग, प्रखण्ड–लखीमपुर खीरी।

UP-239795 दिनांक 03.11.2025 विज्ञापन
वेबसाइट www.up.gov.in पर उपलब्ध है।

त्रिवटीनाथ मंदिर में देव दीपावली पर किया दीपोत्सव

त्रिवटी नाथ मंदिर में दीपोत्सव मनाते लोग। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, बरेली

अमृत विचार : त्रिवटीनाथ मंदिर में बुधवार को देव दीपावली का पर्व धूमधाम से मनाया गया। मंदिर के मीडिया प्रभारी संजीव औतार अग्रवाल ने बताया कि मन्दिर में भक्तों ने हजारों की संख्या में दीप प्रज्ज्वलित करके देव दीपावली का पर्व मनाया। भक्तजनों ने पूरे मंदिर को सुंदर रंगोली से सजाया। शाम को मंदिर प्रांगण में महाआरती का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर मंदिर सेवा समिति के प्रताप चंद्र सेठ, कथा व्यास माधव कृष्ण उपाध्याय, सुभाष मेहरा, विनय कृष्ण, पंडित रविंद्र शर्मा आदि मौजूद रहे।

सम्मन अपील

व अदालत श्रीमान कमिश्नर महोदय

अपील/निगरानी नम्बर सी 20181200000 1269 जिला बरेली सन् अपीलान्ट उत्तम सेन बनाम माल देई रेस्पान्डेन्ट

अपील/निगरानी वनाराजी फैसला व डिग्री मुकदमा माल मुकदमा मुकदमा नं. सन् मुबर्खा माह सन् बनाम 1. माल देई पत्नी बुलाकी राम निवासी ग्राम जगत तह. बहेड़ी 2. इमरती देवी पत्नी नत्थू लाल 3. कृष्णा देवी पत्नी राम नारायन 4. जयन्ती प्रसाद पुत्र रोशन लाल 5. जगन्नाथ पुत्र ईश्वरी समस्त निवासी ग्राम वसावनपुर परगना शाही तहसील मीरगंज जिला बरेली 6. भूमि प्रबन्धक समिति ग्राम वसावनपुर परगना शाही तहसील मीरगंज बरेली द्वारा प्रधान। मुत्तलका हो कि अपील निगरानी वनाराजी डिग्री व फैसला तारीख मुकदमा वाला में अपीलान्ट/ निगरानीकर्ता ने पेश की है जिसमें तारीख 10.11.2025 वास्ते समाअत अपील/ निगरानी मुकर्रर की है अगर आप तारीख पर हाजिर अदालत न होंगे तो आपकी गैरहाजिरी में समाअत अपील/निगरानी तय की जावेगी।

आज तारीख 03.11.25 मेरे दस्तखत व मोहर अदालत से जारी किया।

जज/कमिश्नर

वनखंडीनाथ मंदिर में दीपदान कर जल संरक्षण की ली शपथ

बरेली, अमृत विचार : राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की पर्यावरण संरक्षण गतिविधि के पदाधिकारियों ने बुधवार रात वनखंडी मंदिर परिसर में दीपदान और जल संरक्षण शपथ कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रांत संयोजक शिवेंद्र ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में जल बचाने और पौधारोपण को आदत में लाना चाहिए। प्रांत बौद्धिक प्रमुख ने सनातन संस्कृति और पर्यावरण के पारस्परिक संबंधों को रेखांकित किया। जिला उद्यान अधिकारी पुनीत पाठक ने कार्तिक दीपदान का धार्मिक व पर्यावरणीय महत्व बताया। मंदिर परिसर में 108 शिवलिंगों व अन्य स्थानों पर दीपदान किया गया। सुदीप, मनोज, प्रत्युश, पुष्पेंद्र, विवेक, रचना सक्सेना, गौरव, अरविंद परमार, चंचल श्रीवास्तव आदि उपस्थित रहे। संदीप वाधवा ने आभार व्यक्त किया।

नेशनल ब्रीफ

ठगे गए घर खरीदारों को संपत्ति वापसी के लिए नए मानक बनाए

नई दिल्ली। ईडी ने बुधवार को कहा कि धन शोधन निरोधक कानून के तहत कुर्क की गई दिवालिया कंपनियों और उनके प्रवर्तकों की संपत्तियां अब पीड़ित पक्षों जैसे बैंकों या घर खरीदारों को वापस कर दी जाएंगी। इसके लिए एक मानक संचालन प्रक्रिया को अंतिम रूप दिया गया है। भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड (आईबीबीआई) ने इस संबंध में चार नवंबर को एक परिपत्र जारी किया। यह कदम ईडी और आईबीबीआई के अधिकारियों के बीच हुई कई दौर की समन्वय बैठकों के बाद उठाया गया है। एजेंसी ने एक बयान में कहा कि अब से दिवाला पेशेवर विशेष धन शोधन रोकथाम अधिनियम (पीएमएलए) अदालत के समक्ष एक मानक शपथपत्र दाखिल करेंगे, ताकि ईडी द्वारा जब्त संपत्तियों को मुक्त कर प्रभावित पक्षों को लौटाया जा सके।

सतारा की डॉक्टर के आत्महत्या मामले में आरोपी दरोगा बर्खास्त

मुंबई। महाराष्ट्र पुलिस ने सतारा डॉक्टर आत्महत्या मामले में सरकारी चिकित्सा अधिकारियों के उत्पीड़न और झूठे मेडिकल सर्टिफिकेट जारी करने के मामले में निलंबित उपनिरीक्षक गोपाल बदाने को बुधवार को बर्खास्त कर दिया। फलटन उप-जिला अस्पताल में तैनात डॉ. संपदा मुंडे ने अपनी हथेली पर लिखे सुसाइड नोट में गोपाल बदाने पर बलात्कार और मानसिक उत्पीड़न के साथ राजनीतिक दबाव और धमकी देने का आरोप लगाया था। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने हाल ही में राज्य के पुलिस महानिदेशक को एक महिला पुलिस अधिकारी के नेतृत्व में एक विशेष जांच दल (एसआईटी) गठित करने का निर्देश दिया था ताकि विस्तृत जांच की जा सके। कोल्हापुर रेंज के विशेष महानिरीक्षक सुनील फुलारी की ओर से जारी बर्खास्तगी आदेश में कहा गया है कि उपनिरीक्षक ने लापरवाही बरती और नैतिक पतन का परिचय दिया।

जेएनयू छात्रसंघ चुनाव के मतों की गिनती जारी नतीजे आज घोषित होंगे

नई दिल्ली। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय छात्र संघ (जेएनयूएसयू) के लिए मंगलवार को कड़ी सुरक्षा के बीच हुए मतदान के बाद देर रात मतगणना की प्रक्रिया शुरू हुई जो बुधवार को भी जारी रही। जेएनयूएसयू चुनाव समिति के अनुसार, परिणाम छह नवंबर को घोषित होने की उम्मीद है। इस साल जेएनयूएसयू चुनाव में 67 प्रतिशत मतदान हुआ जो पिछले चुनाव के 70 प्रतिशत से कम है। वर्ष 2023-24 के चुनावों में 73 प्रतिशत मतदान हुआ था, जो पिछले एक दशक में सबसे अधिक है। जेएनयू परिसर मंगलवार को पूरे दिन ढोल-नगाड़ों, नारों और प्रचार गीतों से गूंजता रहा। छात्रों ने नए केंद्रीय समिति और स्कूल काउंसलर को चुनने के लिए मतदान किया।

रक्षा बलों में आरक्षण की मांग कर राहुल फैलाना चाहते हैं अराजकता : राजनाथ

रक्षा मंत्री बोले- कांग्रेस नेता के पास तालाब में कूदने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा

बांका/जमुई/गयाजी, एजेंसी

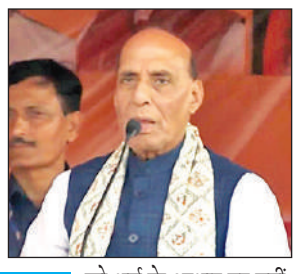

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने बुधवार को आरोप लगाया कि राहुल गांधी रक्षा बलों में आरक्षण की मांग कर देश में अराजकता फैलाना चाहते हैं। सिंह ने बिहार में चुनाव प्रचार के दौरान राहुल गांधी पर कटाक्ष करते हुए कहा कि कांग्रेस नेता के पास अब तालाब में कूदने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा है। उन्होंने हाल में कांग्रेस नेता के चुनावी अभियान के दौरान मछली पकड़ने की कोशिश पर तंज कसा। रक्षा मंत्री ने कहा कि राहुल गांधी बिना किसी आधार के निर्वाचन आयोग जैसे संवैधानिक संस्थानों पर निशाना साध रहे हैं।

बिहार के जमुई जिले में जनसभा में सिंह ने कहा, राहुल को क्या हो गया है? वे रक्षा बलों में आरक्षण की बात उठा रहे हैं। वे देश में अराजकता फैलाना चाहते हैं। हमारे सशस्त्र बल इन सब चीजों से ऊपर हैं। भारत के सैनिकों का केवल एक धर्म है- 'सैन्य धर्म'। भाजपा आरक्षण के पक्ष में है। हमने गरीबों और समाज के पात्र वर्गों को आरक्षण दिया है। राहुल गांधी ने मंगलवार को दावा किया था कि निजी क्षेत्र, न्यायपालिका, नौकरशाही और सशस्त्र बलों में पिछड़ी जातियों, आदिवासी और अल्पसंख्यकों का बहुत कम प्रतिनिधित्व है, जबकि 10% आबादी इन पर नियंत्रण रखती है।

सिंह ने कहा कि राहुल गांधी को यह समझना चाहिए कि देश चलाना बच्चों का खेल नहीं है। उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर का उल्लेख करते हुए कहा, ऑपरेशन सिंदूर को रोका गया है, खत्म नहीं किया गया। अगर आतंकवादी भारत पर फिर हमला करने की कोशिश करेंगे तो उन्हें मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। हमारे सैनिकों ने आतंकियों को धर्म के आधार पर नहीं, बल्कि उनके कर्मों के आधार पर मारा। भारतीय सेना ने आतंकियों के ठिकानों को नष्ट किया... मैं मारे गए आतंकियों की संख्या नहीं बताना चाहता, पर यह तीन अंकों से कहीं अधिक है। भारत को कोई उकसाने की कोशिश करता है तो उसे बख्शा नहीं जाएगा।

चारा खाया, अब गरीबों का राशन खाएगा राजद : योगी

गया। भाजपा के स्टार प्रचारक उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राष्ट्रीय जनता दल (राजद) पर निशाना साधते हुए कहा कि कुछ लोगों ने पहले पशुओं का चारा खाया और अब अगर सत्ता में आए तो गरीबों का राशन खाने की फिराक में है। उन्होने कहा कि 2005 के पहले बिहार में अपराध, जातीय संघर्ष, माओवाद, नक्सलवाद था। यूपी-बिहार के नाम पर देश-दुनिया में सम्मान नहीं मिलता था। बिहार में लालू प्रसाद यादव के शासन में 60 से अधिक जातीय नरसंहार, 30 हजार से अधिक अपहरण हुए। व्यापारी, डॉक्टर, इंजीनियर, संभ्रांत व्यक्ति सुरक्षित नहीं थे। बिहार के 30-40 प्रतिशत लोगों गोरखपुर व वाराणसी में है,

क्योंकि उस समय जंगलराज था, लेकिन नीतीश के नेतृत्व में 20 वर्ष में सुशासन की सुदृढ़ नींव रखी गई। बिहार में रोड, रेल, एयर कनेक्टिविटी के साथ अब वाटरवे की कनेक्टिविटी बिहार से होते हुए यूपी को जोड़ रही है। किसानों के उत्पाद हों या बिहार का मखाना, जल मार्ग से दुनिया के बाजारों में पहुंचाया जा रहा है।

पहले व दूसरे चरण के 27% प्रत्याशियों पर गंभीर आपराधिक मामले

पटना। एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) की ताज़ा रिपोर्ट के मुताबिक, बिहार चुनाव के पहले और दूसरे चरण के 2,600 उम्मीदवारों में से 697 (27%) पर गंभीर आपराधिक मामले हैं। यह आंकड़ा 2020 के चुनाव की तुलना में अधिक है, जब 25% उम्मीदवारों ने इसकी घोषणा की थी। इस बार उम्मीदवारों की संख्या भले ही कम हो, लेकिन दागी चेहरों का प्रतिशत बढ़ा है। एडीआर के अनुसार, सीपीएम के 4 में से 4 उम्मीदवार, सीपीआई के 9 में से 6, सीपीआई (एमएल) के 20 में से 13, कांग्रेस के 60 में से 32, लोजपा (रामविलास) के 28 में से 14, आरजेडी के 140 में से 69, भाजपा के 101 में से 49, जन सुराज पार्टी के 231 में से 100, जदयू के 101 में से 26, आप के 83 में से 21 और बीएसपी के 180 में से 28 उम्मीदवार के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज हैं। इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि हर पार्टी ने आपराधिक छवि वाले उम्मीदवारों को टिकट दिया है। रिपोर्ट के अनुसार, 94 उम्मीदवारों ने अपने ऊपर महिलाओं पर अत्याचार से जुड़े मामले घोषित किये हैं, जिनमें 5 पर दुष्कर्म का आरोप हैं। वहीं 52 ने हत्या और 165 ने हत्या के प्रयास के मामले घोषित किये हैं।

राजग वोट चोरी से सरकार बनाना चाहता है : प्रियंका

बेतिया। कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी ने आरोप लगाया कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) बिहार में वोट चोरी से सरकार बनाना चाहता है। उन्होंने दावा किया कि विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) प्रक्रिया के तहत 65 लाख लोगों के नाम मतदाता सूची से हटा दिए गए हैं, जिनमें बड़ी संख्या में महिलाएं हैं। प. चंपारण जिले के वाल्मीकि नगर और चनपटिया की जनसभाओं में प्रियंका ने कहा कि राजग जानता है कि जनता उससे ऊब चुकी है, इसलिए वह वोट चोरी में लिप्त है। आज देश में हालात ऐसे हैं, जैसे अंग्रेजों के शासनकाल में हुआ करते थे, मुझे संदेह है कि

भविष्य में इस देश में चुनाव भी होंगे या नहीं। प्रियंका ने कहा कि राजग सब कुछ बर्बाद कर देगा, यह भी साफ नहीं है कि आगे चुनाव होंगे या नहीं, आप चुप क्यों हैं? इन्हें सत्ता से बाहर का रास्ता दिखाइए।

मतदान से पहले जनसुराज का उम्मीदवार भाजपा में

मुंगेर। प्रथम चरण के मतदान से पहले जनसुराज के उम्मीदवार संजय सिंह ने भाजपा का दामन थाम लिया। भाजपा के मुंगेर प्रभारी राजेश झा के अनुसार, संजय सिंह ने भाजपा उम्मीदवार कुमार प्रणय और अन्य वरिष्ठ नेताओं की मौजूदगी में सदस्यता ग्रहण की। उन्होंने कहा कि उनका यह निर्णय विकास और स्थिर सरकार की दिशा में उठाया गया कदम है। संजय सिंह ने कहा कि वह प्रधानमंत्री की नीतियों से प्रभावित हैं और राजग के साथ विकास कार्य करना चाहते हैं।

हरियाणा चुनाव भाजपा-आयोग ने किया था चोरी, वैध नहीं सरकार : राहुल गांधी

नई दिल्ली, एजेंसी

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने वोट चोरी पर बुधवार को हरियाणा की मतदाता सूची के आंकड़े सामने रखे और दावा किया कि गत वर्ष अक्टूबर में हुए विधानसभा चुनाव को 25 लाख फर्जी मतों के जरिये चोरी हुआ था। उन्होंने निर्वाचन आयोग पर भाजपा के साथ मिलीभगत का आरोप भी लगाया और कहा कि न सिर्फ हरियाणा की सरकार और मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी वैध रूप से पद पर नहीं हैं, बल्कि प्रधानमंत्री मोदी और गृह मंत्री अमित शाह भी सरकार में वैध रूप से नहीं हैं।

राहुल गांधी ने कहा कि हरियाणा में वोट चोरी को लेकर वह जो बातें कर रहे हैं वो सौ फीसदी सबूत पर आधारित हैं। उन्होंने कहा कि हरियाणा में सर्वेक्षणों में कांग्रेस की जीत की संभावना थी, लेकिन कांग्रेस की तय जीत को हार में बदला गया। उन्होंने हरियाणा के मुख्यमंत्री के बयान का वीडियो दिखाया, जिसमें सैनी ने सरकार बनाने की व्यवस्था होने की बात की थी। राहुल ने दावा किया कि हरियाणा में पांच अलग-अलग तरीकों से 25,41,144 फर्जी मतों से वोट चोरी हुई। डुप्लीकेट वोटर की संख्या 5,21,619 रही। फर्जी पते वालों की संख्या 93,174 थी, बल्क वोटर 19,26,351 थे। उन्होंने कहा कि फॉर्म 6 और 7 का भी दुरुपयोग हुआ। फॉर्म 6 और फॉर्म 7 के जरिये वोटरों को जोड़ा और घटाया जाता है। महादेवापुरा और आलंद के खुलासे के बाद निर्वाचन आयोग ने इसका डेटा देना बंद कर दिया है।

- कांग्रेस नेता ने किया 25 लाख से ज्यादा फर्जी वोट डालने का दावा

पेश किए कई उदाहरण

राहुल गांधी ने कुछ उदाहरण भी दिए। दावा किया कि ब्राजील की एक मॉडल की तस्वीर का इस्तेमाल करके राज्य में 10 बूथ पर सीमा और स्वीटी जैसे 22 अलग-अलग नाम से फर्जी मतदाता बनाए गए थे। उन्होंने कुछ और उदाहरण देते हुए दावा किया कि निर्वाचन आयोग और भाजपा की मिलीभगत से चुनाव चोरी किया गया।

अब नजर बिहार पर, युवा-जेन जी नाकाम करें साजिश

राहुल गांधी ने दावा किया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और निर्वाचन आयोग ने भारतीय लोकतंत्र की हत्या' करने के लिए 'वोट चोरी' की जो व्यवस्था विकसित की है, उसका उपयोग बिहार विधानसभा चुनाव में भी किया जाएगा। राहुल गांधी ने एक वीडियो जारी कर कहा, मेरे युवा साथियों, मेरे जेन जी भाइयो और बहनों, कल का दिन सिर्फ मतदान का दिन नहीं, बल्कि बिहार के भविष्य की दिशा तय करने का दिन है। उन्होंने कहा, आपमें से कई पहली बार वोट डालने जा रहे हैं। यह सिर्फ आपका अधिकार नहीं, बल्कि लोकतंत्र की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। आपने देखा, हरियाणा में किस तरह भयंकर वोट चोरी का खेल खेला गया। महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ हर जगह इन लोगों ने जनता की आवाज दबाने की कोशिश की। अब इनकी नजर बिहार पर है, आपके वोट पर, आपके भविष्य पर। राहुल गांधी ने कहा, "कल बड़ी संख्या में अपने मतदान केंद्र पहुंचिए, महागठबंधन के अपने प्रत्याशी को वोट दीजिए। बूथ पर हो रही हर साजिश, हर हेरफेर पर सतर्क रहिए। बिहार का भविष्य आपके हाथ में है, वोट चोरी, सरकार चोरी की इस साजिश को हराइए। सत्य और अहिंसा के रास्ते पर चलते हुए, अपने वोट से लोकतंत्र को बचाइए, बिहार को जगाइए।

बिहार में होना है मतदान, राहुल बता रहे हरियाणा की कहानी : रीजीजू

भाजपा ने हरियाणा चुनाव में वोट चोरी संबंधी राहुल गांधी के दावों को बुधवार को झूठा और निराधार बताते हुए खारिज कर दिया और कांग्रेस नेता पर अपनी नाकामियों को छिपाने तथा देश को बदनाम करने के लिए निर्वाचन आयोग पर सवाल उठाने का आरोप लगाया। भाजपा नेता एवं केंद्रीय मंत्री किरेन रीजीजू ने गांधी पर 'जेन जेड' को भड़काने का प्रयास का आरोप लगाया और कहा कि ऐसे प्रयास कभी सफल नहीं होंगे, क्योंकि देश के युवा इतने समझदार हैं कि वे ऐसे उकसावे में नहीं आएंगे। उन्होंने भाजपा मुख्यालय में कहा, हरियाणा चुनावों के दौरान उनकी वरिष्ठ नेता कुमारी सैलजा ने कहा था कि कांग्रेस जीत नहीं पाएगी, क्योंकि हरियाणा कांग्रेस के नेता चाहते थे कि पार्टी हार जाए। तीन दिन पहले कांग्रेस के पूर्व नेता ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया और कहा कि कांग्रेस हरियाणा चुनाव इसलिए हारी, क्योंकि उसके नेता काम नहीं कर रहे थे। हरियाणा कांग्रेस अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह ने भी कहा था। रीजीजू ने कहा कि बिहार में मतदान होने वाला है और वह हरियाणा की कहानी बता रहे हैं। इससे स्पष्ट है कि बिहार में (कांग्रेस के लिए) कुछ नहीं बचा है। इसीलिए वह जनता का ध्यान भटकाने के लिए हरियाणा का मुद्दा लेकर आए हैं।

हरियाणा के संबंध में राहुल के दावे निराधार: चुनाव आयोग

निर्वाचन आयोग ने कहा कि राहुल गांधी के हरियाणा में मतदाता सूची को लेकर लगाए गए आरोप निराधार हैं क्योंकि प्रदेश में न तो उनकी पार्टी के बूथ एजेंट की ओर से अपील दायर की गई और न ही एक से अधिक मतदान की शिकायत हुई थी। निर्वाचन आयोग के अधिकारियों ने सवाल किया कि कांग्रेस के बूथ एजेंट ने अक्टूबर 2024 में हुए हरियाणा चुनावों में कई बार वोट डालने वाले मतदाताओं को चिह्नित क्यों नहीं किया। कांग्रेस नेता के आरोपों का खंडन करते हुए एक अधिकारी ने कहा, मतदाता सूची में संशोधन के दौरान कांग्रेस के बूथ स्तरीय एजेंट द्वारा कोई दावा या आपत्ति क्यों नहीं उठाई गई। बूथ स्तरीय एजेंट राजनीतिक दलों द्वारा मतदाता सूची में अनियमितता को चिह्नित करने के लिए नियुक्त किए जाते हैं।

पूर्णिया में मृत पाए गए जदयू नेता के भाई-भाभी और भतीजी

पूर्णिया। बिहार के पूर्णिया जिले में जदयू के एक नेता के बड़े भाई, भाभी और भतीजी घर में मृत पाए गए हैं। तीनों के शव मंगलवार रात केहट थाना क्षेत्र के यूरोपियन कॉलोनी में उनके आवास से बरामद किए गए। पूर्णिया के एसडीपीओ ज्योति शंकर ने बताया कि मृतकों की पहचान नवीन कुशवाहा (52), उनकी पत्नी माला देवी (48) और बेटी तनु प्रिया (23) के रूप में हुई है। उन्होंने बताया कि स्थानीय लोगों के अनुसार मृतक नवीन जदयू नेता निरंजन कुशवाहा के बड़े भाई थे। एसडीपीओ ने कहा, सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची। शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।

शुक्र है... ट्रेन में कोई यात्री नहीं था

महाराष्ट्र में दक्षिण मुंबई के वडाला के पास बुधवार को मुंबई मोनोरेल का एक डिब्बा पटरी से उतर गया। इस घटना में ट्रेन के कैप्टन समेत तीन लोग घायल हो गए। मोनोरेल नियंत्रण प्रभारी रोहन सालुंखे के मुताबिक मोनोरेल के परीक्षण के दौरान तकनीकी खराबी के कारण यह घटना हुई। इसमें कोई यात्री सवार नहीं था। उन्होंने बताया कि भारी बारिश के दौरान ट्रेन का संचालन बंद हो जाने के कारण मोनोरेल सेवाएं निलंबित कर दी गई हैं।

बिलासपुर ट्रेन हादसे में मृतकों की संख्या बढ़कर 11 हुई, 20 घायल

बिलासपुर (छत्तीसगढ़)। बिलासपुर रेलवे स्टेशन के करीब मंगलवार को हुए रेल हादसे में मरने वालों की संख्या बढ़कर 11 हो गई है, जबकि 20 लोग घायल हैं।

अधिकारियों ने बताया, दुर्घटना में छह महिलाओं सहित 11 लोगों की मौत हुई है तथा 20 लोग घायल हैं। 11 मृतकों में से पांच की पहचान हो गई है जिनमें रेलगाड़ी के लोको पायलट विद्या सागर, लवकुश शुक्ला, रंजीत प्रभाकर, शीला यादव और प्रिया चंद्र शामिल हैं। मृतकों में चार महिलाओं, दो पुरुषों की पहचान नहीं हो पाई है। 20 घायलों में नौ महिलाएं और दो वर्षीय बच्चा हैं। यात्री ट्रेन की सहायक लोको पायलट रश्मि राज और ट्रेन मैनेजर अशोक दीक्षित तथा मालगाड़ी के गार्ड शैलेश चंद्र भी अस्पताल में हैं।

छत्तीसगढ़ राज्योत्सव पर वायु सेना का एयर शो

रायपुर। छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना की 25वीं वर्षगांठ पर बुधवार को नवा रायपुर के सेंध जलाशय के ऊपर भारतीय वायु सेना की प्रतिष्ठित एरोबेटिक 'सूर्यकिरण' की टीम ने रोमांचक एयर शो का प्रदर्शन किया। उपराष्ट्रपति सी.पी. राधाकृष्णन, राज्यपाल रमेन डेका, मुख्यमंत्री विष्णु देव साय और विधानसभा अध्यक्ष डॉक्टर रमन सिंह के साथ हजारों लोगों ने अद्भुत और रोमांचक एयर शो का आनंद लिया। नवा रायपुर स्थित सेंध जलाशय के ऊपर वायु सेना के लड़ाकू विमानों ने एक के बाद एक कई हवाई करतब दिखाए।

प्रतिबंधात्मक एकमुश्त वित्त पोषण सीमा से सैकड़ों बच्चे इलाज से वंचित

नई दिल्ली, एजेंसी

- दुर्लभ रोग के मरीजों का सीजेआई से स्थाई वित्तपोषण का अनुरोध

देश भर के दुर्लभ रोग रोगियों और उनके समर्थक समूहों ने सीजेआई बीआर गवई और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को बच्चों और युवा वयस्कों की ओर से पत्र लिखा है और सात नवंबर को उच्चतम न्यायालय में होने वाली सुनवाई में स्थाई वित्तपोषण सुनिश्चित करने का अनुरोध किया है।

उन्होंने पत्र में कहा कि प्रशासनिक देरी और राष्ट्रीय दुर्लभ रोग नीति (एनपीआरडी) 2021 के तहत प्रतिबंधात्मक एकमुश्त वित्त पोषण सीमा के कारण सैकड़ों बच्चों को इलाज से वंचित किया जा रहा है। नीति के मुताबिक चिह्नित दुर्लभ बीमारियों के इलाज के लिए प्रति मरीज 50 लाख रुपये तक की वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। यह सहायता देश भर में चिह्नित 12 उत्कृष्टता केंद्रों में से किसी में भी पंजीकृत मरीजों को उनके इलाज के लिए प्रदान की जाती है।

पत्र में कहा गया, पिछले दो वर्षों में ही 50 लाख रुपये की निर्धारित सीमा समाप्त होने के बाद लगभग 60 मरीज़ों की मृत्यु हो गई है और 55 से ज्यादा मरीज उत्कृष्टता केंद्रों में पंजीकृत होने और स्वीकृत जीवन रक्षक उपचारों के लिए पात्र होने के बावजूद महीनों तक इलाज के बिना रह गए हैं। अगर तत्काल हस्तक्षेप नहीं किया गया, तो साल के अंत तक यह संख्या 100 से ज्यादा हो जाएगी।

पत्र में कहा गया कि दिल्ली उच्च न्यायालय ने पिछले साल चार अक्टूबर को अपने आदेश में कहा था कि 974 करोड़ रुपये के आवंटन के साथ 'दुर्लभ रोगों के लिए राष्ट्रीय कोष' की स्थापना की जाए ताकि अधिकतम सीमा को हटाया जा सके और निर्बाध चिकित्सा सुनिश्चित की जा सके। पत्र में कहा गया है कि इस आदेश को लागू करने के बजाय, स्वास्थ्य मंत्रालय ने पहले ही विशेष अनुमति याचिका दायर कर दी, जिससे मरीजों को मिलने वाली राहत रोक दी गई। पत्र में खेद व्यक्त किया गया कि यह मामला लगभग एक वर्ष से लंबित है, जबकि लोगों की जानें जा रही हैं। लाइसोसोमल स्टोरेज डिसऑर्डर सपोर्ट सोसाइटी ऑफ इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष मंजीत सिंह ने कहा कि प्रत्येक सप्ताह की देरी एक अपूरणीय क्षति है।

एसआईआर को कानूनी चुनौती देगी केरल सरकार, विपक्ष की भी समर्थन की घोषणा

तिरुवनंतपुरम, एजेंसी

- एसआईआर के पीछे बताया गया गुप्त उद्देश्य व दुर्भावनापूर्ण इरादा

केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन ने बुधवार को घोषणा की कि राज्य मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के कार्यान्वयन को कानूनी रूप से चुनौती देगा। यह निर्णय मुख्यमंत्री द्वारा यहां ऑनलाइन आयोजित एक सर्वदलीय बैठक में लिया गया।

एक आधिकारिक घोषणा में कहा गया है कि भाजपा को छोड़कर सभी दलों ने सरकार के इस कदम का समर्थन किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्थानीय निकाय चुनाव नजदीक आने के साथ, सरकार और राजनीतिक दल, दोनों ही एसआईआर पर सवाल उठाने के तरीके पर कानूनी सलाह लेंगे। उन्होंने कहा कि 2002 की मतदाता सूची के आधार पर एसआईआर करना अवैज्ञानिक है जबकि पिछले लोकसभा चुनाव की एक अद्यतन सूची पहले से ही लागू है, और इसमें दुर्भावनापूर्ण इरादा निहित है।

कई दलों ने चिंता व्यक्त की है कि 2002 की मतदाता सूची को आधार के रूप में इस्तेमाल करने से कई समस्याएं पैदा होंगी। उन्होंने आरोप लगाया कि एसआईआर एक विशिष्ट गुप्त उद्देश्य से किया जा रहा है। केरल विधानसभा में विपक्ष के नेता वीडी सतीशन ने कहा कि वह मुख्यमंत्री द्वारा उठाई गई चिंताओं से सहमत हैं और अदालत में पक्ष बनने के लिए तैयार हैं। यह बैठक राज्य में एसआईआर प्रक्रिया शुरू होने के एक दिन बाद आयोजित की गई। बैठक में भाग लेने वालों में पीसी विष्णुनाथ (कांग्रेस), सत्यन मोकेरी (भाकपा), पीके कुन्हालीकुट्टी (आईयूएमएल), स्टीफन जॉर्ज (केरल कांग्रेस एम), पीजे जोसेफ (केरल कांग्रेस), मैथ्यू टी थॉमस (जनता दल सेक्युलर), थॉमस के (राकांपा), उझावलिक्कल वेणुगोपाल (कांग्रेस एस), के जी प्रेमजीत (केरल कांग्रेस बी), शाजी जीएस पणिक्कर (आरएसपी लेनिनवादी) शामिल थे।

किश्तवाड़ में सुरक्षा बलों की आतंकियों के साथ मुठभेड़

जम्मू। जम्मू कश्मीर के किश्तवाड़ जिले में बुधवार को आतंकवादियों और सुरक्षाबलों के बीच मुठभेड़ शुरू हुई है। देर रात तक मुठभेड़ जारी थी।

अधिकारियों ने बताया कि सुरक्षाबल दो से तीन आतंकवादियों से जूझ रहे हैं और एक जवान के मामूली घायल होने की खबर है। किश्तवाड़ में सुरक्षाबल आतंकवादियों की गतिविधियों पर लगातार नजर रख रहे हैं, डोडा और उधमपुर जिलों की सीमा से लगे इस क्षेत्र में कई मुठभेड़ हुई हैं। सात महीनों में यहां छह मुठभेड़ हुई हैं क्योंकि सुरक्षाबल पहाड़ियों में छिपे पाकिस्तानी आतंकवादियों की तलाश जारी रखे हुए हैं।

ईडी ने बंगाल के कारोबारी की बैंकॉक की 900 यात्राओं की जांच शुरू की

कोलकाता, एजेंसी

- फर्जी पासपोर्ट रैकेट से संबंध होने का शक, संदिग्ध दस्तावेज मिले

नकली पासपोर्ट घोटाले की जांच कर रहे ईडी ने पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना जिले के एक व्यवसायी की विदेश यात्राओं की जांच शुरू की है। खरदाहा क्षेत्र के व्यवसायी विनोद गुप्ता ने पिछले 10 वर्षों में कथित तौर पर लगभग 900 बार बैंकॉक की यात्रा की है।

एक ईडी अधिकारी ने बताया, हम उनके द्वारा इतने बार विदेश भ्रमण करने के पीछे के कारणों की जांच कर रहे हैं। इन यात्राओं के नकली पासपोर्ट रैकेट से जुड़े एक बड़े नेटवर्क से संबंध होने का संदेह है। जांच के तहत ईडी की विभिन्न टीम ने सोमवार को नदिया जिले के साथ-साथ कोलकाता में भी कई स्थानों पर छापे मारे।

अधिकारी ने बताया कि इन तलाशी अभियानों से मिले सुरागों के आधार पर जांचकर्ता मंगलवार को खरदाहा स्थित गुप्ता के आवास पर पहुंचे और गहन तलाशी ली, जो देर रात तक जारी रही। उन्होंने बताया कि छापेमारी के दौरान कई दस्तावेज जब्त किए गए। अधिकारियों का दावा है कि उन्हें महत्वपूर्ण और संदिग्ध जानकारी मिली है। अधिकारी ने बताया कि पूछताछ के दौरान गुप्ता ने जांचकर्ताओं को बताया कि वह मसाला व्यापार का व्यवसाय करता है और बैंकॉक की उसकी लगातार यात्राएं इसी से संबंधित हैं।

बिहार में अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर सख्त की गई सुरक्षा व्यवस्था

मधुबनी। बिहार विधानसभा चुनाव के 6 नवंबर को होने वाले चुनाव को लेकर नेपाल से लगने वाली अंतरराष्ट्रीय सीमा की सुरक्षा सख्त कर दी गई है। एसएसबी जवानों को चौकसी बढ़ाने के निर्देश दिए गए है।

प्रथम चरण में मधुबनी से सटे दरभंगा जिले में चुनाव हो रहा है। चुनाव को लेकर अंतरराष्ट्रीय सीमा और भारत नेपाल के बीच चलने वाली नेपाली ट्रेन का परिचालन अन्य दिनों की तरह किया जा रहा है। चुनाव और भीड़भाड़ को देखते हुए जयनगर स्टेशन पर एसएसबी जवानों के साथ आरपीएसएफ के अतिरिक्त जीआरपी को तैनात किया गया है।

वक्तव्य

मुंबई के महाराष्ट्र राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय में सीजेआई गवई ने कहा- नागरिकों की भलाई के लिए हैं सभी अंग

लोकतंत्र के अंग अलग-अलग होकर नहीं कर सकते काम

मुंबई, एजेंसी

भारत के प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) बीआर गवई ने बुधवार को कहा कि कार्यपालिका, न्यायपालिका और विधायिका समेत लोकतंत्र के सभी अंग नागरिकों की भलाई के लिए हैं और ये अंग अलग-थलग होकर अपना काम नहीं कर सकते।

मुंबई में महाराष्ट्र राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय (एमएनएलयू) परिसर में एक समारोह को संबोधित करते हुए न्यायमूर्ति गवई ने कहा कि स्वतंत्रता, न्याय और समानता के सिद्धांत हमारे

संविधान में सन्निहित हैं। प्रधान न्यायाधीश ने कहा, न्यायपालिका के पास न तो तलवार की ताकत है और न ही शब्दों की। जब तक कार्यपालिका इसमें शामिल नहीं होगी, न्यायपालिका के लिए न्यायपालिका को पर्याप्त बुनियादी ढांचा और कानूनी शिक्षा प्रदान करना मुश्किल है।

फडणवीस ने किया सर्वश्रेष्ठ विधि विश्वविद्यालयों का वादा

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि महाराष्ट्र में तीन राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय हैं और न्यायमूर्ति बीआर गवई इन विश्वविद्यालयों के निर्माण में बहुत सहायक रहे हैं। उन्होंने कहा, मुझे विश्वास है कि बहुत जल्द एमएनएलयू को एक अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय के रूप में मान्यता मिल जाएगी। फडणवीस ने कहा कि नवी मुंबई में एजुसिटी शैक्षणिक केंद्र में दुनिया के 12 सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग वाले विश्वविद्यालय होंगे, जिनमें से सात दो से तीन वर्षों में अपने परिसर स्थापित कर लेंगे।

न्यायमूर्ति गवई ने कहा कि विधि शिक्षा अब अधिक व्यावहारिक प्रशिक्षण के साथ विकसित हो रही है और इसलिए बुनियादी ढांचा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने इस आलोचना का खंडन किया कि न्यायिक बुनियादी ढांचे के मामले में महाराष्ट्र सरकार कमजोर पाई गई है और कहा कि यह धारणा गलत तथ्यों पर आधारित है। न्यायमूर्ति गवई ने न्यायपालिका के लिए बुनियादी ढांचे के मामले में हमेशा सक्रिय रहने के लिए राज्य सरकार और मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की सराहना की।

उन्होंने कहा, महाराष्ट्र में न्यायपालिका को उपलब्ध कराया गया बुनियादी ढांचा सर्वोत्तम में से एक है। न्यायमूर्ति गवई ने कहा कि कानून एक विकसित होती हुई सजीव और प्रगतिशील शाखा है। उन्होंने कहा कि विधिक शिक्षा में एक महत्वपूर्ण बदलाव आ रहा है। उन्होंने कहा, आज हम जो बुनियादी ढांचा उपलब्ध करा रहे हैं, वह दुनिया के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों के स्तर का है। प्रधान न्यायाधीश ने कहा, बाबासाहेब आंबेडकर ने कहा था कि एक वकील एक सामाजिक इंजीनियर भी होता है जो सामाजिक न्याय के वादे को वास्तविकता में बदलता है।

अमृत विचार

गुरुवार, 6 नवंबर 2025

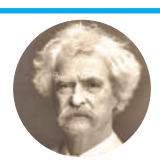

भले ही आप कपड़े पहनने में लापरवाह हैं, पर अपनी आत्मा को दुरुस्त रखिए।

—मार्क ट्वेन, अमेरिकी लेखक

रेलवे पर सवाल

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर की रेल दुर्घटना ने यह सवाल फिर से उठाया है कि भारतीय रेल की सुरक्षा-संरक्षा प्रणाली क्यों चूक रही है! जांच के प्रारंभिक संकेत मानव त्रुटि या सिग्नलिंग की खामी बता रहे हैं, पर असली दोषी का पता तब चलेगा जब ब्लैक बॉक्स, सिग्नल लॉग, ड्राइवर की ड्यूटी रिकॉर्ड, ट्रैक सर्किट और नियंत्रण-कक्ष के डेटा की बारीकी से तकनीकी जांच के बाद रेल सुरक्षा आयुक्त की रिपोर्ट आएगी। इससे तय होगा कि हादसे में मानवीय भूल का हाथ था या तकनीकी प्रणाली की विफलता। यदि रेलवे द्वारा आधुनिक तकनीक और उच्चस्तरीय सिग्नलिंग सिस्टम के दावे के बाद भी आमने-सामने की टक्कर हो रही है, तो बेशक हमारी सुरक्षा संस्कृति ही दोषपूर्ण है। रेलवे में सिग्नलिंग इंटरलॉकिंग की किंचित नाकामी ट्रेन को गलत ट्रैक पर भेज सकती है। सिग्नल सिस्टम में खामी का मतलब है कि ट्रैक सर्किट, इंटरलॉकिंग प्रणाली ने ठीक से काम नहीं किया। ये ठीक से काम करें, इसके लिए हार्डवेयर सुधार के साथ 'रियल टाइम रिमोट मॉनिटरिंग' जैसी व्यवस्थाएं लागू करना जरूरी हैं। हालांकि लोको पायलट की थकान, संचार की कमी या समय-संवेदनशील निर्णयों में विलंब से भी दुर्घटनाएं होती हैं। दोषी पाए जाने वाले कर्मचारियों पर विभागीय कार्रवाई का प्रावधान है। निलंबन, बर्खास्तगी, दंडात्मक अभियोजन तक, लेकिन सच्चाई यह है कि अधिकांश जांच रिपोर्टें बरसों-बरस फाइलों में पड़ी रहती हैं। रेल सुरक्षा आयुक्त की अनुशंसाओं पर कार्रवाई का प्रतिशत अत्यंत अल्प है। भारतीय रेलवे की ऑडिट रिपोर्टें बताती हैं कि बड़ी संख्या में दुर्घटनाओं में मानव-त्रुटि मुख्य कारण होने के बावजूद जवाबदेही तय करने की प्रक्रिया धीमी और बेहद अपारदर्शी है। इसीलिए दोषियों और कारणों की पहचान के बावजूद सुधार तत्परता से लागू नहीं होते।

हर बड़े हादसे के बाद उच्चस्तरीय समितियां बनती हैं, नई घोषणाएं होती हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर बदलाव, सुधार की रफ्तार बेहद धीमी रहती है। रेल मंत्रालय ने वर्षों पहले एंटी कोलिजन डिवाइस 'कवच' लगाने की योजना बनाई थी, ताकी इस तरह आमने-सामने की टक्कर न हो। अब तक यह कुछ हजार किलोमीटर रूट और सीमित संख्या में लोकोमोटिव तक ही सीमित है। बजटीय सीमाएं, तकनीकी संगतता और विशाल नेटवर्क इसके विस्तार में बाधा हैं, किंतु जान-माल की सुरक्षा के आगे प्राथमिकता स्पष्ट होनी चाहिए। हर चालित ट्रेन में 'कवच' या इसी तरह की स्वचालित सुरक्षा प्रणाली अनिवार्य हो। रेलवे में गाड़ी का पटरी से उतरना, सिग्नल फेल होना, लोकोमोटिव फाल्ट छोटी दुर्घटनाएं रोज घटती हैं, पर ये मीडिया में नहीं आतीं। न इन पर प्रशासनिक दबाव बनता है। छोटी लापरवाहियों पर उपेक्षा की यही प्रवृत्ति आगे चल कर बड़े हादसे का रूप ले लेती है।

जरूरी है कि रेल मंत्रालय हर छोटे हादसे की रिपोर्टिंग और त्वरित विश्लेषण के बाद जिम्मेदारी तय करने की व्यवस्था विकसित करे। लालखदान की रेल त्रासदी चेतावनी है कि भारतीय रेल में तकनीकी निवेश के साथ मानव प्रबंधन, जवाबदेही और पारदर्शिता को समान महत्व दिया जाए। सुरक्षा सिर्फ उपकरणों से नहीं, प्रणालीगत ईमानदारी और सतर्कता से आती है।

प्रसंगवश

महज अतीत की धरोहर नहीं भविष्य की नींव हैं किताबें

समय के साथ हमारी पढ़ने की आदतें बदल रही हैं। एक दौर था, जब किताबें ही ज्ञान, कल्पना और चिंतन का मुख्य स्रोत थीं। अब वही भूमिका स्मार्टफोन, टैबलेट, गूगल और एआई उपकरणों ने ले ली है। सूचनाओं तक पहुंचना पहले से कहीं आसान हुआ है, पर इसी सुविधा ने गहराई से सोचने और समझने की क्षमता को चुनौती दी है। आज जब विद्यार्थी गूगल या एआई आधारित उपकरणों की मदद से तुरंत उत्तर प्राप्त कर लेते हैं, तब सवाल करना, विषय को गहराई से समझना और उस पर चिंतन करना पीछे छूटता जा रहा है। ज्ञान का सतही उपभोग गहन अध्ययन के महत्व को कमजोर कर सकता है।

आज का जीवन तेज और सूचना-भरा है। हर चीज अब तेज हो गई है। खबरें, मनोरंजन, सीखना और पढ़ना भी। डिजिटल माध्यमों ने शिक्षा और जानकारी दोनों को लोकतांत्रिक बना दिया है। अब कोई भी व्यक्ति, किसी भी समय, किसी भी विषय पर जानकारी प्राप्त कर सकता है। यह बदलाव हमारी जीवनशैली का हिस्सा बन चुका है। यूनेस्को और ओईसीडी के अध्ययन बताते हैं कि इंटरनेट ने ज्ञान के प्रसार को पहले से कहीं अधिक व्यापक बना दिया है।

डॉ. शिवम भारद्वाज

असिस्टेंट प्रोफेसर जीएलए यूनिवर्सिटी, मथुरा

फिर भी शोध दर्शाते हैं कि स्क्रीन पर पढ़ना और कागज पर पढ़ना दो अलग अनुभव हैं। स्क्रीन मस्तिष्क को 'तेज प्रोसेसिंग मोड' में रखती है, जहां उद्देश्य केवल जानकारी छांटना होता है, उसे आत्मसात करना नहीं। परिणामस्वरूप, पूरी जानकारी या तर्क की सूक्ष्म परतें याद नहीं रहतीं और एकाग्रता बार-बार टूटती है। यही वह बिंदु है, जहां किताबों की भूमिका और अहम हो जाती है। किताबें हमें धीमा करती हैं, ठहरना सिखाती हैं और अर्थ को आत्मसात करने का अभ्यास कराती हैं।

अधिकांश विद्यार्थी अब पूरा अध्याय या कहानी के बजाय केवल 'महत्वपूर्ण प्रश्न' या 'सारांश' पर निर्भर हो जाते हैं। संक्षिप्त नोट और पावरपॉइंट स्लाइडें परीक्षा के लिए सुविधाजनक हो सकती हैं, लेकिन सोचने और विश्लेषण करने की क्षमता को कमजोर करती हैं। गहन अध्ययन की जगह केवल जानकारी का उपभोग हावी हो जाता है। ज्ञान तब ही जीवित रहता है, जब उसे पढ़ने, समझने और तर्क करने की प्रक्रिया के साथ जोड़ा जाए। ऐसे में विद्यालयों में नियमित 'पठन सत्र' या पुस्तकालय सत्र भाषा कौशल, एकाग्रता और तर्कशक्ति बढ़ाने में मदद कर सकते हैं।

किताबें केवल सूचना नहीं देतीं, वे सोचने का तरीका सिखाती हैं। ये हमें गहराई से किसी और के दृष्टिकोण से दुनिया देखने की क्षमता देती हैं। शोध बताते हैं कि 'डीप लर्निंग' मस्तिष्क के उन हिस्सों को सक्रिय करता है जो सहानुभूति, स्मृति और आलोचनात्मक सोच से जुड़े हैं। किताबें हमारी कल्पना, विवेक और संवाद की क्षमता को बढ़ाती हैं और हमें भावनात्मक और बौद्धिक दोनों स्तरों पर विकसित करती हैं।

तकनीक और किताबों को विरोध में नहीं देखा जाना चाहिए। सही उपयोग से तकनीक किताबों तक पहुंच आसान बना सकती है। राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय, ई-पाठशाला और दीक्षा जैसे प्लेटफॉर्म लाखों पुस्तकों और शैक्षणिक संसाधनों को विद्यार्थियों तक पहुंचा रहे हैं। ई-पुस्तकें और श्रव्य पुस्तकें (ऑडियो बुक्स) पढ़ाई को कहीं भी, कभी भी संभव बना देती हैं। समस्या तब आती है जब तकनीक सोचने का विकल्प बन जाए। जब विद्यार्थी केवल एआई आधारित सारांश और गूगल से तुरंत उत्तर लेते हैं, तब ज्ञान सतही बन जाता है। तकनीक तभी सहायक है, जब वह जिज्ञासा और गहराई को बढ़ाए, न कि प्रतिस्थापित करे।

भारत के दोस्तों पर ना 'पाक' पड़ोसी की नजर

दिग्विजय सिंह

कानपुर

ऑपरेशन सिंदूर में मिली करारी हार से बौखलाया पाकिस्तान भारत को अब हर तरफ से घेरने की कोशिश कर रहा है। इसके लिए अपने मित्र राष्ट्रों के दुश्मन देशों से भी हाथ मिलाने को आतुर है। इसका ताजा उदाहरण उत्तर कोरिया है। भारत और उत्तर कोरिया के रिश्ते बहुत ही अच्छे हैं। 2018 में तत्कालीन विदेश मंत्री ने उत्तर कोरिया का दौरा किया था, हालांकि इस दौरे के बाद अमेरिका ने कड़ी प्रतिक्रिया दी थी, लेकिन भारत ने नजरअंदाज कर दिया था। अब पाकिस्तान उत्तर कोरिया से अपने राजनयिक रिश्ते बहाल करने जा रहा है। माना जा रहा है कि इस रिश्ते की बहाली के साथ ही दोनों देश गुपचुप तरीके से सैन्य समझौते भी कर सकते हैं।

बांग्लादेश का जन्म ही भारत के हाथों हुआ था। इस बात का एहसान बांग्लादेश के हुक्मरान मानते आए हैं। पाकिस्तानी सेना द्वारा किए गए दमन का दुख हर बांग्लादेशी नागरिक के मन में रहा है, लेकिन प्रधानमंत्री शेख हसीना के तख्तापलट के बाद, वहां पाकिस्तान का प्रभाव बढ़ा है। बांग्लादेश की राजनीति में पाकिस्तानी हस्तक्षेप की झलक साफ दिखती है। यहां तक कि पाकिस्तान के सैनिक बांग्लादेशी सैनिकों को प्रशिक्षित कर रहे हैं और अब कई बड़े सैन्य समझौते भी दोनों देशों के बीच होने जा रहे हैं। भारत के इस पड़ोसी देश में पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई की गतिविधियां बढ़ी हैं, जो भारत के लिए शुभ संकेत नहीं हैं, हालांकि भारत इसकी काट निकालने में जुटा हुआ है।

बांग्लादेश पर पाकिस्तानी प्रभाव का ही असर है कि आए दिन वहां के मुख्य सलाहकार मोहम्मद युनूस भारत के विरुद्ध अनर्गल आरोप लगा रहे हैं। भारत के कई हिस्सों को बांग्लादेश का बताकर नया नक्शा भी जारी कर रहे हैं। बांग्लादेश में मिली सफलता के बाद पाकिस्तान ने आर्मेनिया को अपने पक्ष में करने की पुरजोर कोशिश की है। आर्मेनिया और अजरबैजान की दुश्मनी जग जाहिर है। अजरबैजान ने आर्मेनिया के कुछ भूभाग पर कब्जा भी कर रखा है। आर्मेनिया को जहां भारत हर मोर्चे पर समर्थन करता है, तो आर्मेनिया भी हर मंच पर भारत की बात को प्रमुखता से उठाता है। दोनों देशों के बीच न सिर्फ व्यापारिक रिश्ते मजबूत हैं, बल्कि रक्षा संबंध भी प्रगाढ़ हैं। यही वजह है कि अजरबैजान भारत को हर मंच पर नीचा दिखाने की कोशिश करता है।

पहलगाम हमले की निंदा जब पूरी दुनिया ने की थी, तब भी अजरबैजान पाकिस्तान के साथ खड़ा नजर आया था। आर्मेनिया ने भारत से बड़ा रक्षा सौदा करने की तैयारी की है। इससे अजरबैजान परेशान है। इन सबके बीच ही पाकिस्तान ने आर्मेनिया से रिश्ते सुधारने की कवायद शुरू की है। दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंध स्थापित होने जा रहे हैं। अब तक भारत से नजदीकी के कारण ही पाकिस्तान उसे मान्यता नहीं देता था, लेकिन शहबाज शरीफ के देश ने अब अपनी नीति बदल दी है। चीन में एससीओ समिट से इतर आर्मेनिया के विदेश मंत्री अरारत मिर्जोयान और पाकिस्तानी विदेश मंत्री इशाक डार ने राजनयिक संबंध स्थापित करने की प्रक्रिया शुरू करने के लिए दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए थे। आर्मेनिया के इस कदम से रूस, तुर्की और ईरान की सीमा से लगे इस क्षेत्र में भारत के लिए समीकरण बदल सकते हैं, हालांकि पाकिस्तान के हर कदम पर भारत की नजर है।

भारत ने भी पाकिस्तान के दोस्त अजरबैजान से रिश्ते में गर्मजोशी लाने की नीति पर काम शुरू कर दिया है। इसका असर भी दिखने लगा है। बीते अक्टूबर में आयोजित हुई कॉन्फ्रेंस ऑन इंटरैक्शन एंड कॉन्फिडेंस बिल्डिंग मेजर्स इन एशिया की अध्यक्षता अजरबैजान ने की थी। भारत की कूटनीति का ही असर है कि अजरबैजान ने इसकी अध्यक्षता भारत को देने का प्रस्ताव रखा है। उसके इस प्रस्ताव से पाकिस्तान और चीन को झटका लगा है। भारत-अजरबैजान अपने व्यापारिक रिश्ते भी सुधारने में लगे हैं। इन सबके बीच ही पाकिस्तान ने अब उत्तर कोरिया वाला दांव चला है।

अमेरिका और उत्तर कोरिया के बीच दुश्मनी जग जाहिर है। उत्तर कोरिया के शासक किम जोंग उन कई मौकों पर अमेरिका और साउथ कोरिया को धमकाते रहे हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी कई अवसर पर उन पर तल्ख टिप्पणी कर चुके हैं। उत्तर कोरिया की ताकत को दुनिया के लिए खतरा माना जाता है, लेकिन भारत इससे बहुत प्रभावित नहीं दिखता है, क्योंकि दोनों देशों के बीच दशकों पुराने संबंध हैं। भारत ने जुलाई 2021 में कोविड महामारी के कारण उत्तर कोरिया स्थित दूतावास को अस्थायी रूप से बंद कर दिया था, हालांकि 2024 में इसे बहाल कर दिया गया था।

अब पाकिस्तान ने उत्तर कोरिया से नजदीकियां बढ़ानी शुरू की हैं। अमेरिका से दुश्मनी के बाद भी पाकिस्तान ने उत्तर कोरिया से राजनयिक रिश्ते स्थापित करने का फैसला किया है। पाकिस्तान के इस फैसले पर दुनिया के कई देशों की नजर है। भारत लगातार उत्तर कोरिया और पाकिस्तान के बीच संदिग्ध परमाणु और मिसाइल रिश्ते पर अंगुली उठाता रहा है और कार्रवाई की मांग करता रहा है। कोरोना काल से बंद चल रहे पाकिस्तान के दूतावास को पुनः बहाल करने के उत्तर कोरिया के निर्णय से एशिया में परमाणु प्रसार के खतरे को लेकर चिंता बढ़ गई है। माना जाता है कि उत्तर कोरिया ने ही पाकिस्तान को मिसाइल की तकनीक दी थी और पाकिस्तान ने किम जोंग उन को परमाणु तकनीक उपलब्ध कराई थी।

2017 में अमेरिका ने भारत से उत्तर कोरिया के साथ अपने राजनयिक संपर्क कम करने को कहा था, तब तत्कालीन विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने नकार दिया था। भारत, उत्तर कोरियाई राजनयिकों को प्रशिक्षण भी देता रहा है। साथ ही कई महत्वपूर्ण मौकों पर मदद भी की है।

पाकिस्तान ने उत्तर कोरिया से नजदीकियां बढ़ानी शुरू की हैं। अमेरिका से दुश्मनी के बाद भी पाकिस्तान ने उत्तर कोरिया से राजनयिक रिश्ते स्थापित करने का फैसला किया है।

आमने

मैं जो कह रहा हूं वह सौ फीसदी सच है। एक पूरे राज्य को चुरा लिया गया। सभी सर्वेक्षणों में हरियाणा में कांग्रेस की जीत की संभावना जताई गई थी, लेकिन नतीजे एकदम उलट आए। मैं जेन जी से कहना चाहता हूं कि देखिए कैसे आपके भविष्य की चोरी की जा रही है।

-राहुल गांधी, सांसद

सामने

लोकसभा में विपक्ष के नेता अपनी नाकामियों को छिपाने के लिए प्रेस को संबोधित कर रहे हैं। बिहार में मतदान होना है, लेकिन वे हरियाणा के किस्से सुना रहे थे। कांग्रेस के पास बिहार में कुछ नहीं बचा है और इसीलिए ध्यान भटकाने के लिए वे हरियाणा का मुद्दा उठा रहे हैं।

-किरन रिजिजू, केंद्रीय मंत्री

कांग्रेस से बेहतर प्रदर्शन कर सकती है माले

यशोदा श्रीवास्तव

वरिष्ठ पत्रकार

बिहार के चुनावी गणित को देखें, तो यहां दो परिदृश्य गौर करने लायक हैं। एक तो यह कि यहां लोकसभा और विधानसभा चुनावों में वोटरों का रुझान बिल्कुल अलग है, खास तौर पर भाजपा के लिए। दूसरा यह कि बिहार में कम्युनिस्ट दलों का वर्चस्व अभी भी कायम है। पहले बिहार के लोकसभा व विधानसभा के चुनावी अंकगणित पर गौर करते हैं। 2004 के चुनावों से देखें, तो यह तस्वीर साफ नजर आती है कि लोकसभा चुनाव और विधानसभा चुनाव में वोटर का मूड भिन्न होता है। विधानसभा चुनाव में किसी भी अकेले दल को सत्ता की चाबी नहीं थमाती। वह क्षेत्रीय दलों को तरजीह तो देती है, लेकिन बहुमत से दूर रखती है।

वह चाहे जदयू हो या आरजेडी। 2004 में लोकसभा की मात्र पांच सीट जीतने वाली भाजपा 2005 के विधानसभा चुनाव में 37 सीट जीत लेती है। लोकसभा चुनाव के मुकाबले विधानसभा चुनाव में वोट प्रतिशत भी इनका बढ़ जाता है। 2009 में लोकसभा की 12 सीट जीतने वाली भाजपा को 2010 के विधानसभा चुनाव में 91 सीट पर सफलता मिलती है।

इसी तरह 2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा जब 22 सीट जीतती है, तो 2015 के विधानसभा चुनाव में इसे मात्र 53 सीटों पर ही कामयाबी मिलती है। 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा 17 सीटें जीतती है, तो 2020 के विधानसभा चुनाव में उसे 74 सीटों पर सफलता मिलती है। 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा 12 सीटों पर जीती थी। अब 2025 के इसी महीने में होने जा रहे विधानसभा चुनाव में भाजपा के हिस्से में कितनी सीटें आती हैं, यह देखना है।

मैदान में यूं तो कई क्षेत्रीय दल भाग्य आजमा रहे हैं, लेकिन मुख्य मुकाबला एनडीए और इंडिया गठबंधन में ही है। सबसे दिलचस्प यह है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को खुद को महाराष्ट्र के एकनाथ शिंदे बनाए जाने का भय सता रहा है। ऐसे में उनके वोटर चिराग पासवान की पार्टी के साथ खेल न कर दें, यह आशंका भी बनी हुई है। नीतीश कुमार की यह आशंका और बलवती हुई होगी, जब प्रधानमंत्री मोदी ने इंडिया गठबंधन पर तंज कसते हुए कहा कि आरजेडी ने कांग्रेस के कनपटी पर कट्टा रखकर' तेजस्वी को मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित करने को मजबूर किया है।

मोदी की इस टिप्पणी के बाद नीतीश कुमार और उनके समर्थक इस बात को लेकर भयभीत हैं कि इसका मतलब एनडीए में जो मोदी चाहेंगे वही होगा। अर्थात पर्ची वाला भी मुख्यमंत्री हो सकता है। वोटरों की चुप्पी के बीच चुनाव बाद किस गठबंधन को कितनी सीटें हासिल होती हैं, यह तो अहम है ही, लेकिन सरकार किसके नेतृत्व में बनती है, यह देखना बेहद दिलचस्प होगा।

बिहार विधानसभा चुनाव का जो दूसरा परिदृश्य है, वह भी कम दिलचस्प नहीं है। उत्तर भारत के प्रदेशों में कम्युनिस्ट दलों का लगभग खात्मा हो चुका है, लेकिन बिहार इससे अछूता है। 2020 के विधानसभा में इस दल के 12 विधायक थे। अभी जो चुनाव चल रहा है, उसमें भाकपा माले इंडिया गठबंधन का बड़ा साझेदार है। उसके 20 उम्मीदवार मैदान में हैं। ये भले ही कम सीटों पर लड़ते हैं, लेकिन जीतने का इनका स्ट्राइक रेट बढ़िया होता है। पिछले चुनाव में इस दल के दो-चार उम्मीदवार बहुत मामूली वोटों से हारे थे।

पिछले विधानसभा चुनाव में भाकपा माले की हारी हुई एक सीट भोरे भी है, जहां से इस बार जेएनयू छात्रसंघ के प्रेसिडेंट रहे 29 वर्षीय धनंजय को पार्टी ने उम्मीदवार बनाया है। भोरे विधानसभा क्षेत्र पश्चिमी बिहार के गोपालगंज जिले में स्थित है। बिहार का यह जिला यूपी के देवरिया और कुशीनगर से सटा हुआ है। गोपालगंज जिले का भोरे विधानसभा क्षेत्र कम्युनिस्टों का गढ़ माना जाता है। पिछले चुनाव में कम्युनिस्ट उम्मीदवार रहे जितेंद्र पासवान बिहार के डीजीपी रहे जदयू उम्मीदवार सुनील कुमार से 472 वोटों के मामूली अंतर से हारे थे। स्थानीय लोगों ने इस चुनाव परिणाम को संदिग्ध माना था।

इस बार फिर पार्टी ने जितेंद्र पासवान को उम्मीदवार बनाया था, लेकिन उन्हें नामांकन के दिन ही 2017 के एक पुराने मामले में गिरफ्तार कर लिया गया, लिहाजा वे नामांकन दाखिल नहीं कर पाए। जितेंद्र पासवान की गिरफ्तारी के बाद माकपा ने जेएनयू के पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष धनंजय को उम्मीदवार बनाया है।

इधर, जितेंद्र पासवान की गिरफ्तारी को जदयू उम्मीदवार की हार के डर से प्रतिशोध की कार्रवाई करार दिया गया और इसके पीछे जेडीयू उम्मीदवार सुनील कुमार और नीतीश कुमार का हाथ माना गया। मात्र 472 वोटों से जीतने वाले पूर्व डीजीपी सुनील कुमार, नीतीश कुमार मंत्रिमंडल में शिक्षा मंत्री थे। यूपी सीमा से सटे बिहार के इस विधानसभा क्षेत्र का चुनाव बेहद दिलचस्प है, क्योंकि यहां जदयू उम्मीदवार सुनील कुमार जैसे धनबल के मुकाबले जनता मैदान में है।

रिटायर्ड आईपीएस सुनील कुमार 1987 बैच के आईपीएस हैं। 2020 में वे पहली बार जदयू के टिकट पर चुनाव लड़े और जीते। फिर बिहार के शिक्षा मंत्री बने। 1997 में यहां माले कार्यकर्ता उमेश पासवान की हत्या के बाद यह क्षेत्र कम्युनिस्टों का गढ़ बन गया। माले का स्ट्राइक रेट कांग्रेस से अच्छा हो, तो कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

भाकपा माले इंडिया गठबंधन का बड़ा साझेदार है। उसके 20 उम्मीदवार मैदान में हैं। ये भले ही कम सीटों पर लड़ते हैं, लेकिन जीतने का इनका स्ट्राइक रेट बढ़िया होता है।

सोशल फोरम

खत्म होते रिश्ते और बिखरते परिवार

पक्के सामाजिक मनुष्य रूपी जीवों की समझ और सोच बिल्कुल अनोखी होती है। इनकी उम्र बीत जाती है समाज की अच्छाई, रिश्तों की अच्छाई, शादी ब्याह की अच्छाई, बच्चों और रिश्तेदारों की अच्छाई ढूंढने में और उसका बखान करने में। कोई लड़का-लड़की अगर बिना शादी किए लिव इन रिलेशन में रह रहे होते हैं और उनके रिश्तों में कुछ गड़बड़ हो जाए, वो एक-दूसरे को मार दें या कुछ भी खून कत्ल हो जाए उनके बीच, तो ये पारिवारिक प्राणी कमेंट करने को टूट पड़ेंगे, "और रहो ऐसे रिश्तों में", "और असामाजिक संबंधों में रहो, ऐसा ही होगा"....। फलाना-धिमाका बोलते हैं ये, जबकि शादियों में रोज इतने खून-कत्ल होते हैं, जितने रोड एक्सीडेंट में भी नहीं होते। आप फैमिली कोर्ट में जा कर वहां के हालत देखिए कभी, जबरदस्त भीड़ होती है।

सिद्धार्थ ताबिश

लेखक

हजारों लोग परेशान कोर्ट के चक्कर लगाया करते हैं तलाक़ के लिए। लाखों केस पेंडिंग होते हैं। जिन मर्दों के ऊपर ये कोर्ट केस चल रहे होते हैं, उनकी नौकरी, घर, रुपया पैसा सब इसी में बर्बाद हो जाता है और वो कोर्ट के चक्कर लगा-लगा के अपनी आधी उम्र बिता देता है। फैमिली कोर्ट जा कर देखिए, भयावह दृश्य होता है। वो सब लिव इन वाले लोग नहीं हैं।

अनाथालयों में चले जाइए, देखिए कितने बच्चे, जो शादी नामक संस्था से पैदा हुए थे, किस तरह का जीवन जी रहे होते हैं। ये वो बच्चे होते हैं जो जाने कितने अरमान और जाने कितनों ने 'घर के चिराग' और 'वारिस' के लिए पैदा किए होते हैं। भीड़ है लावारिस बच्चों की इस दुनिया में। इन्हें अपना बच्चा ही मानव जाति के अस्तित्व को बचाने वाला एकमात्र मनुष्य दिखता है।

कभी वृद्धाश्रम जा कर देखिए, आपको शायद ही वहां कोई ऐसा बुजुर्ग मिले, जिसने 'एकल' जीवन चुना हो और उसने शादी न की हो। लगभग सभी आपको बाल-बच्चे, नाती-पोते वाले बुजुर्ग मिलेंगे। ये सारे अपने बच्चों द्वारा मार के भगाए गए बुजुर्ग होते हैं। वृद्धाश्रम का कॉन्सेप्ट ही घर से भगाए गए वृद्धों के लिए है, जहां कोई जाना नहीं पसंद करता है। आप जिस चीज को प्रेम कहते और बोलते हैं, वो सब सिर्फ 'आदत' होती है बस! केला-0सेब लेकर आपको अस्पताल में देखने आने वाले लोग वैसे ही होते हैं, जो आपकी शादी में आपके न्योते का लिफाफा देने पहुंचते हैं। इसमें कोई अच्छाई नहीं है, बस 'आदत' है ये!

-फेसबुक वाल से

सामयिकी

नकली बादल से हल नहीं होती असली समस्या

जब भीषण चक्रवात मोंथा ने सारे देश को भिगो दिया था और बादल दिल्ली के आसपास ही मंडरा रहे थे, वायु प्रदूषण से हताश दिल्ली महानगर पर नकली बरसात करवा कर हवा साफ करवाने का प्रयास असफल ही रहा। याद करें डेढ़ महीने पहले ही राजस्थान में जयपुर के करीब बीते दो दशक से पूरी तरह सूखी जमवा रामगढ़ की झील को भरने के लिए कृत्रिम बारिश का प्रयोग एक तमाशे से अधिक नहीं रहा। वहां कई-कई बार ड्रोन उड़ाए और चार बार असफल रहने के बाद नाममात्र की बूंदें गिरीं, जिसने झील के तल को गीला तक नहीं किया।

पहले दिल्ली सरकार दीपावली के ठीक अगले दिन कृत्रिम बादल से पानी बरसाने की बात कर रही थी और यह होता, तो एसिड रैन या तेजाब की बारिश की बड़ी संभावना थी। कैसी विडंबना है कि समाज और सरकार दोनों के स्तर पर वायु प्रदूषण कम करने के कोई प्रयास होते नहीं दिखते, उलटे जब आतिशबाजी के धुएं से दम घुटने लगा, तो तकनीक के बदौलत एक छद्म प्रयास किया जा रहा है।

पंकज चतुर्वेदी

वरिष्ठ पत्रकार

दिवाली के एक हफ्ते बाद भी दिल्ली समग्र की कोई चार करोड़ जनसंख्या जिस वायु में सांस ले रही है, वह न केवल उनकी उम्र घटा रही है, बल्कि विभिन्न गंभीर बीमारियों के इलाज में खर्च भी बढ़ा रही है। सालों से चर्चा होती रही है कि इस शहर को गैस चेंबर बनाने में सड़कों पर जाम, अनियोजित निर्माण से उड़ती धूल का बड़ा हिस्सा है। निरंकुश आतिशबाजी ने इसमें रासायनिक जहर को और जोड़ दिया और इस तरह से हवा को दूषित करने को काबू करने का कोई निर्णायक उपाय नहीं हो रहे हैं। ऐसे में नकली बादलों का भ्रम एकबारगी आंकड़ों में भले हवा साफ दिखा दे, लेकिन हालात उससे भी बदतर होने की संभावना है।

जिस कृत्रिम बरसात का झांसा दिया जा रहा है, उसकी तकनीक को समझना जरूरी है। इसके लिए हवाई जहाज से सिल्वर-आयोडाइड और कई अन्य रासायनिक पदार्थों का छिड़काव किया जाता है, जिससे सूखी बर्फ के कण तैयार होते हैं। असल में सूखी बर्फ ठोस कार्बन डाइऑक्साइड ही होती है। सूखी बर्फ की खासियत होती है कि इसके पिघलने से पानी नहीं बनता और यह गैस के रूप में ही लुप्त हो जाती है। यदि परिवेश के बादलों में थोड़ी भी नमी होती है, तो यह सूखी बर्फ के कणों पर चिपक जाते हैं और इस तरह बादल का वजन बढ़ जाता है, जिससे बरसात हो जाती है ।

एक तो इस तरह की बरसात के लिए जरूरी है कि वायुमंडल में कम से कम 40 फीसदी नमी हो, फिर यह थोड़ी सी देर की बरसात ही होती है। इसके साथ यह खतरा बना रहता है कि वायुमंडल में कुछ ऊंचाई तक जमा स्मॉग और अन्य छोटे कण फिर धरती पर आ जाएं। साथ ही सिल्वर आयोडाइड, सूखी बर्फ के धरती पर गिरने से उसके संपर्क में आने वाले पेड़-पौधे, पक्षी और जीव ही नहीं, नदी-तालाब पर भी रासायनिक खतरा संभावित है। वैसे भी दिल्ली के आसपास जिस तरह सीएनजी वाहन अधिक हैं, वहां बरसात नए तरीके का संकट ला सकती हैं। चिंता की बात यह है कि आक्सॉइड ऑफ नाइट्रोजन गैस वातावरण में मौजूद पानी और ऑक्सीजन के साथ मिल कर तेजाबी बारिश कर सकती है।

यह वैश्विक रूप से प्रामाणिक तथ्य है कि नकली तरीके से बरसात करवाना कई बार बहुत भारी पड़ता है, फिर उस दिल्ली एनसीआर में, जहां कुछ मिनट की बरसात से सड़कों पर जाम लग जाता है, जो दिल्ली की हवा में सबसे अधिक जहर घोलता है। जाहिर है बरसात से जितना प्रदूषण कम नहीं होगा, उससे अधिक बरसात के कारण वाहनों के ठिठकने से उपजे धुएं से बढ़ेगा ही।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक हरि ओम गुप्ता द्वारा अमृत विचार प्रकाशन, नवादा जोगियान, चक रोड, रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज के सामने, बरेली (उ.प्र.), पिन कोड-243006 से मुद्रित एवं 932 कटरा चांद खां, भारत पेट्रोल पंप के सामने पीलीभीत बाईपास रोड बरेली (उ.प्र.) पिन कोड-243005 से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, स्थानीय संपादक- नवीन गुप्ता*** 0581-4000222 (कार्यालय), ईमेल- editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2019/78502, *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी। (नोट-सभी विवादों का न्यायक्षेत्र बरेली होगा)।

बीमारियों की जांच के लिए अब न तो पैथोलॉजी लैब में लाइन लगाने की जरूरत होगी और न ही रिपोर्ट के लिए अगले दिन का इंतजार करना पड़ेगा। यह बड़ा बदलाव संभव होगा आईआईटी कानपुर के वैज्ञानिकों की पहल से। दरअसल आईआईटी कानपुर ने एक ऐसी अत्याधुनिक पोर्टेबल डायग्नोस्टिक डिवाइस विकसित की है, जो हमारे रोजमर्रा के जीवन और स्वास्थ्य व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने वाली साबित हो सकती है। यह छोटा-सा उपकरण किसी भी व्यक्ति के रक्त, मूत्र, पसीने और लार के सैंपल से न सिर्फ विभिन्न रोगों की जांच कर सकता है, बल्कि मिट्टी और पेय पदार्थों में मौजूद प्रदूषण की पहचान करके भी तत्काल रिपोर्ट उपलब्ध कराने में भी सक्षम है। इन्हीं विशेषताओं के कारण माना जा रहा है कि आईआईटी कानपुर की यह खोज भारत को सस्ती, तेज और सटीक जांच तकनीक के क्षेत्र में बड़ी पहचान दिला सकती है। 'जेब में लैब' जैसी यह डिवाइस आने वाले समय में स्वास्थ्य और पर्यावरण दोनों क्षेत्रों में नया अध्याय लिख सकती है।

- मनोज त्रिपाठी
वरिष्ठ पत्रकार

जेब में लैब

पलक झपकते बीमारियों की जांच

पोर्टेबल रीडआउट यूनिट फॉर केमिरसिस्टव सेंसर दिया नाम

आईआईटी कानपुर के बायो साइंस और बायो इंजीनियरिंग विभाग के प्रो. संतोष कुमार मिश्र के निर्देशन में शोध छात्र अनिमेष कुमार सोनी तथा नेहा यादव द्वारा तैयार इस डिवाइस को पोर्टेबल रीडआउट यूनिट फार केमिरसिस्टव सेंसर नाम दिया गया है। इसके जरिए बॉयोलाजिकल और केमिकल दोनों तरह के मालिक्यूल की जांच की जा सकती है। डिवाइस का पेटेंट आवेदन स्वीकृत हो चुका है। अनिमेष के अनुसार कागज की चिप और डिवाइस सेंसर को अलग-अलग रसायनों की जांच के लिए विशेषीकृत किया गया है। हर जांच के लिए अलग-अलग डिवाइस और चिप का प्रयोग किया जाता है।

डिवाइस की सबसे बड़ी विशेषता

आईआईटी कानपुर द्वारा विकसित डायग्नोस्टिक डिवाइस की सबसे बड़ी विशेषता इसकी पोर्टेबिलिटी है। यानी यह एक 'जेब में समा जाने वाली लैब' जैसी है, जिसे लेकर किसी भी गांव, दूरस्थ इलाके या आपदा प्रभावित क्षेत्र में पहुंचा जा सकता है और वहां मौके पर जांच की जा सकती है। इस पोर्टेबल डिवाइस से जांच रिपोर्ट कुछ ही मिनटों में मोबाइल स्क्रीन पर मिल जाती है। ऐसे में माना जा रहा है कि यह डिवाइस ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के लिए वरदान साबित हो सकती है, जहां संसाधनों की कमी के कारण अक्सर रोग की पहचान में देरी होती है, जिसका नुकसान मरीजों को उठाना पड़ता है।

तीन हजार की डिवाइस और 20 रुपये की कागज चिप

तीन हजार रुपये में तैयार होने वाली इस डिवाइस से की जाने वाली जांच भी बेहद सस्ती है। जांच के लिए कागज से बनी चिप का प्रयोग किया जाता है, जिससे जांच परिणाम तुरंत मिल जाते हैं। जांच प्रक्रिया तत्काल पूरी किए जाने से रक्त, मूत्र या लार के नमूनों के दूषित या बिगड़ने का खतरा भी नहीं रहता है। इस डिवाइस को कोई भी डॉक्टर अपनी क्लीनिक पर रख सकता है। इसके लिए कागज पर कार्बन इलेक्ट्रोड चिप बनाई गई है, जिसकी लागत 15 से 20 रुपये है।

मलेरिया, डेंगू, टायफाइड की आसानी से जांच

आईआईटी कानपुर की शोध टीम के अनुसार यह डायग्नोस्टिक डिवाइस बायोसेन्सिंग तकनीक पर आधारित है। यानी यह शरीर के तरल पदार्थों में मौजूद बायोमार्कर्स की पहचान करके बीमारी का पता लगाती है। इसके चलते इसकी मदद से मलेरिया, डेंगू, टायफाइड जैसी संक्रामक बीमारियों के अलावा कई प्रकार के सूक्ष्म संक्रमण और प्रदूषक तत्वों की भी पहचान आसानी से और फटाफट की जा सकती है।

रिचार्जेबल डिवाइस का सोलर पैनल से भी संचालन

इस डिवाइस का इंटरफेस बेहद आसान है, इसके लिए किसी तकनीकी प्रशिक्षण की जरूरत नहीं पड़ती। बस सैंपल की एक बूंद डालते ही डिवाइस में लगे सेंसर सक्रिय हो जाते हैं और कुछ मिनटों में ही परिणाम उपलब्ध करा देते हैं। खास बात यह है कि यह डिवाइस रिचार्जेबल है और बिजली न होने की स्थिति में सोलर पैनल से भी संचालित की जा सकती है।

ग्रामीण भारत के लिए 'मेडिकल टेस्ट ऑन द स्पॉट'

स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार आईआईटी कानपुर द्वारा विकसित पोर्टेबल डायग्नोस्टिक डिवाइस तकनीक से ग्रामीण भारत में रोग पहचान की प्रक्रिया में क्रांतिकारी सुधार होगा, जहां पहले जांच के लिए सैंपल शहर भेजे जाते थे, वहीं अब 'मेडिकल टेस्ट ऑन द स्पॉट' संभव होगा। यही नहीं, पर्यावरणविद् भी इस नवाचार को लेकर खासे उत्साहित हैं, क्योंकि यह मिट्टी, पानी और खाद्य पदार्थों में प्रदूषण का विश्लेषण करके, उन्हें सुरक्षित रखने का एक सस्ता और तेज साधन बन सकती है।

तकनीक हस्तांतरण का काम अंतिम चरण में

आईआईटी कानपुर के बायो साइंस और इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर संतोष कुमार मिश्र ने बताया कि पोर्टेबल रीडआउट यूनिट फॉर केमिरसिस्टव सेंसर के जांच परिणाम सटीक पाए गए हैं। स्वास्थ्य क्षेत्र के अलावा इसकी मदद से खेतों की मिट्टी और पेय पदार्थों में मौजूद रसायनों की पहचान भी की जा सकती है। इससे दूध और शीतल पदार्थ की गुणवत्ता जांच भी संभव है। इस डिवाइस को बाजार में पहुंचाने के लिए तकनीक हस्तांतरण की दिशा में काम अंतिम चरण में है।

जॉब अलर्ट

पंजाब एंड सिंध बैंक

- पद का नाम : एमएसएमई रिलेशनशिप मैनेजर
- पदों की संख्या : 30
- योग्यता : स्नातक
- आयु सीमा : 25 से 33 वर्ष
- आवेदन की अंतिम तिथि : 26-11-2025
- आधिकारिक वेबसाइट : punjabandsind.bank.in

पंजाब नेशनल बैंक (PNB)

- पद का नाम : स्थानीय बैंक अधिकारी
- पदों की संख्या : 750
- वेतन मैट्रिक्स : रु. 48480-85920
- योग्यता : कोई भी स्नातक
- आयु सीमा : 20 से 30 वर्ष
- ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि : 23-11-2025
- आधिकारिक वेबसाइट : pnb.bank.in

प्रादेशिक सेना

- पद का नाम : सैनिक
- पदों की संख्या : 1529
- योग्यता : 12वीं, 10वीं, 8वीं
- आयु सीमा : 18 से 42 वर्ष
- आवेदन प्रारंभ तिथि : 15-11-2025
- आवेदन की अंतिम तिथि : 14-12-2025
- आधिकारिक वेबसाइट : regionalarmy.in

कैंपस में पहला दिन

'बड़े' होने की हुई शुरुआत

स्कूल से कॉलेज तक का सफर जैसे किसी बंद कमरे से खुली हवा में कदम रखना हो। स्कूल की ड्रेस, भारी बैग और रोज-रोज के होमवर्क से आजादी का एहसास अलग ही था। उस दिन सुबह जब आईने में खुद को देखा तो लगा- अब मैं बड़ा हो गया हूं। कॉलेज के पहले दिन दिल में उत्साह भी था और थोड़ी-सी घबराहट भी थी। नए माहौल, नए लोग और नए शिक्षक सब कुछ नया था। गेट पर खड़े होकर कुछ पल के लिए ठिठक गया, मानो कोई नया अध्याय शुरू होने से पहले दिल खुद को संभाल रहा हो। कैंपस में कदम रखते ही चारों ओर हंसी, बातें और परिचय का शोर। कोई अपने दोस्तों के साथ फोटो खिंचवा रहा था, तो कोई क्लास ढूंढने में व्यस्त। पहली क्लास में जब प्रोफेसर साहब ने 'वेलकम टू कॉलेज लाइफ' कहा, तो लगा जैसे किसी ने जिंदगी के अगले दरवाजे खोल दिए हों। यहां किताबों के साथ-साथ रिश्ते, अनुभव और आत्मविश्वास भी पढ़ना था। स्कूल की तरह सख्त अनुशासन नहीं, बल्कि सोचने और अपने विचार रखने की आजादी थी। ब्रेक के समय कैंटीन में समोसे और चाय के साथ नई दोस्ती की शुरुआत हुई। कुछ ही घंटों में अजनबी चेहरे अपनापन देने लगे। शाम को जब घर लौटा तो थकान नहीं, बल्कि चेहरे पर एक अलग-सी चमक थी। कुछ नया पाने की, कुछ बनने की। आज जब पीछे मुड़कर देखता हूं, तो एहसास होता है कि कॉलेज का पहला दिन ही असल में 'बड़े होने' की शुरुआत थी, जहां किताबों से ज्यादा जिंदगी सिखाई जाती है।

-शिव शंकर सोनी
शिक्षक, मवई, अयोध्या

नोटिस बोर्ड

- डॉ. अंबेडकर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी फॉर दिव्यांगजन (कानपुर) में पूर्व छात्र समागम आयोजित होगा। 8 नवंबर को होने वाले समारोह की तैयारियां संस्थान में चल रहीं है।
- नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत कौशल विकास व जीवन कौशल से संबंधित पाठ्यक्रमों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अंतर्गत नैसकॉम से स्किल प्रशिक्षण के लिए आगामी 12 नवंबर (बुधवार) को एमबीपीजी कॉलेज (हल्द्वानी) में कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है।
- एचडीएफसी बैंक और संभव फाउंडेशन के सीएसआर कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों के लिए सेल्स एग्जीक्यूटिव, रिटेल एग्जीक्यूटिव, होटल मैनेजमेंट ऑपरेशन्स आदि क्षेत्रों में रोजगार की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए एमबीपीजी कॉलेज (हल्द्वानी) के करियर काउंसलिंग सेल की ओर से 14 नवंबर को एकदिवसीय प्रशिक्षणात्मक कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है।

यूजीसी नेटः बेहतरीन करियर अवसरों की चाबी

यूजीसी नेट एक राष्ट्रीय स्तर की प्रतिष्ठित परीक्षा है, जिसे पास करने के बाद उम्मीदवारों के लिए करियर के अनेक द्वार खुल जाते हैं। खासतौर पर उन युवाओं के लिए यह परीक्षा बेहद महत्वपूर्ण है, जो शिक्षा और शोध के क्षेत्र में अपना भविष्य बनाना चाहते हैं। इस परीक्षा को सफलतापूर्वक पास करने के बाद आप उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ सकते हैं और एक सम्मानजनक करियर की शुरुआत कर सकते हैं। *-फीचर डेस्क*

असिस्टेंट प्रोफेसर बनने का मौका

यूजीसी नेट पास करने के बाद उम्मीदवार देश के किसी भी कॉलेज या विश्वविद्यालय में असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में नियुक्त हो सकते हैं। सरकारी कॉलेजों में असिस्टेंट प्रोफेसर की शुरुआती वेतनमान लगभग 57,700 रुपये प्रतिमाह होता है। इसके अलावा विभिन्न भत्ते भी मिलते हैं, जिसके चलते कुल वेतन 75,000 रुपये से लेकर 1 लाख रुपये प्रतिमाह तक पहुंच जाता है। उच्च शिक्षा में अध्यापन को भारत में अत्यंत सम्मानजनक पेशा माना जाता है।

रिसर्च संस्थानों में उज्ज्वल भविष्य

CSIR, ICAR, DRDO, ICMR जैसे देश के नामी शोध संस्थानों में भी NET या JRF धारकों को रिसर्च में काम करने का मौका मिलता है। यहां शुरुआती सैलरी लगभग 50,000 रुपये प्रतिमाह होती है। रिसर्च का क्षेत्र उन छात्रों के लिए आदर्श है, जो नए ज्ञान की खोज और नवाचार करना चाहते हैं।

टॉप कंपनियों में भी मिलता है अवसर

यूजीसी नेट स्कोर के आधार पर उम्मीदवारों को कई प्रतिष्ठित सरकारी कंपनियों में नौकरी पाने का अवसर भी मिलता है। इनमें ONGC, NTPC, BHEL, IOCL जैसी कंपनियां शामिल हैं। यहां HR, मार्केटिंग, फाइनेंस और रिसर्च विभागों में जॉब मिल सकती है। इन पदों पर शुरुआती सैलरी 50,000 रुपये से शुरू होती है, जो अनुभव के साथ 1.5 लाख रुपये प्रतिमाह तक पहुंच सकती है।

प्रमोशन और नेतृत्व का अवसर

असिस्टेंट प्रोफेसर से शुरुआत करने वाले उम्मीदवार समय के साथ प्रमोशन पाकर एसोसिएट प्रोफेसर, प्रोफेसर और आगे चलकर डीन या वाइस चांसलर जैसे पदों तक पहुंच सकते हैं। यह एक ऐसा करियर है, जिसमें न केवल वेतन और लाभ बढ़ते हैं, बल्कि सम्मान और प्रतिष्ठा भी निरंतर बढ़ती जाती है।

JRF के साथ रिसर्च में शानदार शुरुआत

यदि उम्मीदवार यूजीसी नेट के साथ जेनरल रिसर्च फैलोशिप (JRF) भी क्वालिफाई कर लेते हैं, तो उन्हें रिसर्च फील्ड में जाने का सुनहरा अवसर मिलता है। JRF के तहत रिसर्च करने वाले छात्रों को आकर्षक स्टाइपेंड भी प्रदान किया जाता है। पहले दो वर्षों में 37,000 रुपये प्रतिमाह और इसके बाद 42,000 रुपये प्रतिमाह तक स्टाइपेंड मिलता है। इसके साथ ही पीएचडी करने का अवसर भी स्वतः प्राप्त हो जाता है।

सौर विनिर्माण क्षमता 125 गीगावाट पार कर जाने की उम्मीद

नई दिल्ली। देश में सौर मॉड्यूल विनिर्माण क्षमता 2025 तक 125 गीगावाट को पार कर जाने की उम्मीद है। यह 40 गीगावाट की घरेलू मांग से तीन गुना से भी अधिक है। वैश्विक शोध और परामर्श कंपनी वुड मैकेंजी ने यह बात कही है। यह वृद्धि सरकार की उत्पादन-आधारित प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना का नतीजा है, जिसने विनिर्माण के तेजी से बढ़ाने में मदद की है। हालांकि, उद्योग को अब अत्यधिक क्षमता के जोखिम का सामना करना पड़ रहा है।

अमृत विचार

बरेली, गुरुवार, 6 नवंबर 2025

www.amritvichar.com

कारोबार

बरेली मंडी

वनस्पति तेल तिलहन : तुलसी 2565, राज श्री 1800, फ़ॉर्चून कि. 2240, रविन्द्रा 2470, फॉर्चुन 13 किग्रा 1970, जय जवान 1990, सचिन 2025, सूरज 1990, अवसर 1895, उजाला 1920, गृहणी 13 किग्रा 1930, क्लासिक (किग्रा) 2145, मोर 2185, चक्र टिन 2330, ब्लू 2160, आशीर्वाद मस्टर्ड 2360, स्वास्तिक 2520 निजामाबाद 17000, जीरा 24500, लाल मिर्च 14000-18000, धनिया 9000-11000, अजवायान 13500-20000, मेथी 6000-8000 सौंफ 9000-13000, सोंठ 31000, (प्रतिकि.) लौंग 800-1000, बादाम 780-1080, काजू 2 पीस 840, किसमिस पीली 300-400, मखाना 800-1100

चावल (प्रति कु.) : डबल चाबी सेला 9700, स्पाइस 6500, शरबती कच्ची 5050, शर्बती स्टीम 5200, मंसूरी 4000, महबूब सेला 4050, गौरी रॉयल 7400, राजभोग 6850, हरी पत्ती (1-5 किग्रा) 10100, हरी पत्ति नेचुरल 9100, जेनिथ 8100, गलैक्सी 7400, सूमो 4000, गोल्डन सेला 7900, मंसूरी पनघट 4350,लाडली 4000

दाल दलहन : मूंग दाल इंदौर 9800, मूंग धोवा 10000, राजमा चित्रा 12800-13500, राजमा भूटान नया 10100, मलका काली 7250-7450 मलका दाल 7550-8900, मलका छाँटी 7550, दाल उड़द बिलासपुर 8000-9000, मसूर दाल छोटी 9500-11200, दाल उड़द दिल्ली 10300, उड़द साबुत दिल्ली 9900, उड़द धोवा इंदौर 12800, उड़द धोवा 10000-11000,चना काला 7050, दाल चना 7450, दाल चना मोटी 7600, मलका विदेशी 7300, रूपकिशोर बेसन 8200, चना अकोला 7200, डबरा 7200-9200, सच्चा हीरा 8600, मोटा हीरा 10700, अरहर गोला मोटा 7800, अरहर पटका मोटा 8300, अरहर कोरा मोटा 8700, अरहर पटका छोटा 10000-10600, अरहर कोरी छोटी 11000

चीनी : पीलीभीत 4440, सितारगंज 4350,

एफटीए में डेयरी, एमएसएमई के हितों पर ध्यान : गोयल

केंद्रीय उद्योग मंत्री बोले- भारत और न्यूजीलैंड के बीच प्रस्तावित वार्ता में हुई है उल्लेखनीय प्रगति

- चार दिन की आधिकारिक यात्रा पर वेलिंगटन गए हैं केंद्रीय मंत्री

ऑकलैंड, एजेंसी

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने बुधवार को कहा कि भारत अपने मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) में डेयरी और सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यम (एमएसएमई) जैसे संवेदनशील क्षेत्रों के हितों की लगातार सुरक्षा करता है। गोयल ने कहा कि भारत और न्यूजीलैंड के बीच प्रस्तावित एफटीए पर जारी वार्ता में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। इस समय दोनों देशों के वरिष्ठ अधिकारी चौथे दौर की बातचीत कर रहे हैं।

उन्होंने कहा, भारत कभी भी डेयरी, किसानों और एमएसएमई के हितों से समझौता नहीं करता है। हम हमेशा इन संवेदनशील क्षेत्रों के हितों की सुरक्षा करते हैं। न्यूजीलैंड विश्व का प्रमुख डेयरी उत्पादक देश है, और ऐसे में इस क्षेत्र में बाजार पहुंच बढ़ाने की उसकी मांग को लेकर भारत की स्थिति महत्वपूर्ण मानी जा रही है। न्यूजीलैंड की चार दिन की आधिकारिक यात्रा पर वेलिंगटन पहुंचे गोयल ने कहा कि दोनों देशों ने व्यापार समझौते में एक-दूसरे की संवेदनशीलता का सम्मान करने पर सहमति जताई है। उन्होंने स्पष्ट किया कि भारत ने अब तक किसी भी व्यापार समझौते में डेयरी या कृषि क्षेत्र में साझेदार देश को शुल्क रियायत नहीं दी है।

उन्होंने कहा, हम ऐसे मुद्दों को नहीं छूते हैं। हम एक-दूसरे की संवेदनशीलता का सम्मान करते हैं। वार्ता के अगले चरणों को लेकर वाणिज्य मंत्री ने कहा, हो सकता है कि हमें बहुत अधिक चरणों की जरूरत न पड़े। इस दिशा में उल्लेखनीय प्रगति पहले ही हो चुकी है। व्यापार समझौते की दिशा में ठोस चर्चा चल रही है। हालांकि, उन्होंने संकेत दिया कि भारत कृषि प्रौद्योगिकी, खासकर डेयरी मशीनरी जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के अवसर देख सकता है। एक व्यापारिक प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई कर रहे गोयल ने कहा कि भारत और न्यूजीलैंड के बीच रक्षा, कृषि, अंतरिक्ष, शिक्षा और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में सहयोग की बड़ी संभावनाएं हैं।

ऑकलैंड में भारत-न्यूजीलैंड बिजनेस फोरम के दौरान अपने समकक्ष टॉड मैक्ले के साथ केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल व अन्य अधिकारी।

समझौते के लिए भारत-अमेरिका कर रहे चर्चा

पीयूष गोयल ने कहा कि भारत और अमेरिका प्रस्तावित द्विपक्षीय व्यापार समझौते के लिए लगातार चर्चा जारी है। बातचीत अच्छी चल रही है और लगातार जारी है, कई संवेदनाशील मुद्दे हैं, कई गंभीर मुद्दे हैं तो स्वाभाविक है कि थोड़ा समय लगेगा। अमेरिका और भारत के बीच द्विपक्षीय व्यापार समझौते के पहले चरण के लिए अब तक पांच दौर की वार्ता पूरी हो चुकी है। वाणिज्य सचिव राजेश अग्रवाल के नेतृत्व में भारतीय अधिकारियों का दल गत माह अपने अमेरिकी समकक्षों के साथ व्यापार वार्ता करने के लिए वॉशिंगटन गया था। तीन दिवसीय वार्ता 17 अक्टूबर को समाप्त हुई। फरवरी में भारत-अमेरिका के नेताओं ने अधिकारियों को द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) पर बातचीत का निर्देश दिया था। उन्होंने पहले चरण को 2025 की शरद ऋतु तक पूरा करने की समय सीमा तय की है। ये विचार-विमर्श महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ट्रंप प्रशासन द्वारा भारतीय वस्तुओं पर 50% का शुल्क लगाने के बाद से दोनों देशों के बीच संबंध काफी तनावपूर्ण हो गए हैं।

बैंकों का लाभ 9% बढ़कर 49,456 करोड़ पहुंचा

नई दिल्ली, एजेंसी

- एसबीआई को छोड़कर सभी 12 बैंकों ने सितंबर तिमाही में 45,547 करोड़ रुपये कमाए

भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) की अगुवाई में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों ने चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में सामूहिक रूप से रिकॉर्ड 49,456 करोड़ रुपये का मुनाफा कमाया है। यह दो बैंकों द्वारा लाभ में गिरावट दर्ज किए जाने के बावजूद सालाना आधार पर 9% की वृद्धि को दर्शाता है। सभी 12 बैंकों (पीएसबी) ने मिलकर वित्त वर्ष 2024-25 की जुलाई- सितंबर तिमाही में 45,547 करोड़ रुपये का लाभ कमाया था।

शेयर बाजारों के अनुसार, एसबीआई ने 49,456 करोड़ की कमाई में 40% का योगदान दिया। एसबीआई ने 2025-26 की दूसरी तिमाही में 20,160 करोड़ का लाभ दर्ज किया, जो गत वर्ष की समान अवधि की तुलना में 10% अधिक है। चेन्नई स्थित इंडियन ओवरसीज बैंक ने 58% की वृद्धि दर्ज की और 1,226 करोड़ का लाभ कमाया। सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने 33% की वृद्धि के साथ 1,213 करोड़ कमाया। बैंक ऑफ बड़ौदा और यूनियन बैंक ऑफ इंडिया को छोड़कर अन्य बैंक लाभ में रहे। बैंक ऑफ बड़ौदा का लाभ 8% घटकर 4,809 करोड़ रुपये रह गया। वहीं यूनियन बैंक ऑफ इंडिया का लाभ 10% घटकर 4,249 करोड़ रुपये रह गया। बैंक ऑफ महाराष्ट्र और पंजाब एंड सिंध बैंक ने 23% और केनरा बैंक, पंजाब नेशनल बैंक और इंडियन बैंक ने क्रमशः 19, 14 और 12% की वृद्धि दर्ज की।

नवंबर से घट सकता है रूसी तेल का आयात

नई दिल्ली, एजेंसी

- रूस की दो प्रमुख तेल कंपनियों पर 21 नवंबर से लागू होने वाले नए अमेरिकी प्रतिबंधों को लेकर भारत ले सकता है निर्णय

भारत नवंबर के अंत से रूसी कच्चे तेल की सीधी खरीद में कटौती करने जा रहा है। यह कदम रूस की दो प्रमुख तेल कंपनियों पर 21 नवंबर से लागू होने वाले नए अमेरिकी प्रतिबंधों के बाद उठाया जा रहा है। विश्लेषकों ने यह संभावना जताई है।

विश्लेषकों ने कहा कि देश के कुल रूसी तेल आयात में आधे से अधिक हिस्सा रखने वाली भारतीय रिफाइनरी इकाइयां नए अमेरिकी प्रतिबंधों के अनुपालन में रूसी तेल की प्रत्यक्ष खरीद में कटौती कर सकती हैं। इनमें रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल), मंगलौर रिफाइनरी एंड पेट्रोकेमिकल्स लिमिटेड (एमआरपीएल) और एचपीसीएल-मित्तल एनर्जी लिमिटेड (एचएमईएल) शामिल हैं। अमेरिका ने रूसी पेट्रोलियम कंपनियों- रोसनेफ्ट और ल्यूकऑयल पर 21 नवंबर से कड़े आर्थिक प्रतिबंध लगाने की घोषणा की है। इसके तहत इन कंपनियों की सभी अमेरिकी संपत्तियों और वित्तीय लेनदेन पर रोक लगा दी गई है।

इसके अलावा अन्य देशों की संस्थाएं भी अगर इनके साथ बड़े लेनदेन करती हैं तो उन पर भी द्वितीयक प्रतिबंध लगाए जा सकते हैं। रिलायंस का रोसनेफ्ट के साथ दीर्घकालिक आपूर्ति समझौता है, जबकि एमआरपीएल और एचएमईएल ने भी रूसी तेल की भविष्य की खेप स्थगित करने की घोषणा की है। वर्ष 2025 की पहली छमाही में भारत ने रूस से कुल 18 लाख बैरल प्रतिदिन कच्चे तेल का आयात किया जिसमें इन कंपनियों की आधे से अधिक हिस्सेदारी है। हालांकि, रोसनेफ्ट की आंशिक हिस्सेदारी वाली नायरा एनर्जी की वडिनार रिफाइनरी (गुजरात) अपने मौजूदा रूसी तेल खरीद तरीके को बनाए रखेगी। यह रिफाइनरी पहले से यूरोपीय संघ के प्रतिबंधों के दायरे में है और रूसी कच्चे तेल पर निर्भर है। नौवहन सूचना फर्म 'केप्लर' के प्रमुख शोध विश्लेषक सुमित रितोलिया ने कहा, रूसी कच्चे तेल की खेपों में गिरावट दिखेगी।

भारत के लिए व्यापक स्वर्ण नीति अपनाने का समय

नई दिल्ली, एजेंसी

एसबीआई ने जारी की एजः द ग्रेट ग्लोबल गोल्ड रश नामक रिपोर्ट

सोने की कीमतों के नई ऊंचाइयों पर पहुंचने के बीच इसके लिए एक व्यापक नीति की जरुरत है क्योंकि भारत दुनिया के सबसे बड़े सर्राफा बाजारों में से एक है जो पीली धातु के प्रति सांस्कृतिक लगाव व निवेश मांग से प्रभावित है। बुधवार को जारी एक अध्ययन में यह बात कही गई।

भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) के आर्थिक अनुसंधान विभाग द्वारा जारी 'कमिंग ऑफ (ए टर्बुलेंट) एजः द ग्रेट ग्लोबल गोल्ड रश' शीर्षक वाली रिपोर्ट में कहा गया कि भू-राजनीतिक तनाव, आर्थिक अनिश्चितता व कमजोर अमेरिकी डॉलर के कारण सोने की कीमत नई ऊंचाइयों पर पहुंच रही है। 2025 में अब तक की कीमतों में 50% से अधिक की वृद्धि हुई है। अक्टूबर में कुछ दिन के लिए कीमतें 4,000 डॉलर प्रति औंस से नीचे आ गईं, लेकिन नवंबर में फिर से 4,000 डॉलर प्रति औंस से पार चली गईं। सोने की घरेलू आपूर्ति भारत में कुल सोने की आपूर्ति का एक अंश है। विश्व स्वर्ण परिषद के अनुसार, 2024 में कुल आपूर्ति में आयात का योगदान 86% होगा। भारत सबसे बड़े स्वर्ण बाजारों में से एक है जो सोने के प्रति सांस्कृतिक आकर्षण, निवेश की मांग और मुद्रास्फीति से बचाव तथा सुरक्षित निवेश सहित अन्य आर्थिक कारकों से प्रभावित है।

भारत में सोने की कुल उपभोक्ता मांग 2024 में बढ़कर 802.8 टन हो गई जो वैश्विक स्वर्ण मांग का 26% है। इससे भारत, चीन के बाद दूसरे स्थान पर आ गया। चीन की उपभोक्ता मांग 815.4 टन थी। अध्ययन अनुसार चीन की सोने पर राष्ट्रीय नीति है, जिसका एक विशिष्ट उद्देश्य है। यह अंतरराष्ट्रीय वाणिज्य में सोने के व्यापार, भंडारण, मूल्यांकन और उपयोग के तरीके को नया रूप देने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण रखता है। यह कई आर्थिक एवं भू-राजनीतिक प्राथमिकताओं को साथ संबोधित करने के लिए समन्वित दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है। अमेरिका और जर्मनी जैसे देश कुल भंडार का 77% से अधिक सोने के रूप में रखते हैं।

डीएलसी के लिए लगेगा शिविर

एसबीआई ने पेंशनभोगियों के लिए डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र (डीएलसी) के लिए शिविर का आयोजन किया, जिसमें 500 प्रमाण पत्र जारी किए गए। इसका उद्घाटन राज्यमंत्री (कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन) जितेंद्र सिंह ने किया। इस मौके पर पेंशन और पेंशनभोगी कल्याण विभाग के सचिव वी श्रीनिवास, एसबीआई के डीएमडी (लेनदेन बैंकिंग और नई पहल) शमशेर सिंह और एसबीआई के सीजीएम (सरकारी व्यापार सेवा और समाधान इकाई) अमृतेश मोहन उपस्थिति थे।

ऋण मांग में 27% की वृद्धि : बजाज फिनसर्व

नई दिल्ली। बजाज फिनसर्व की इकाई बजाज फाइनेंस ने त्योहारों के दौरान रिकॉर्ड संख्या में उपभोक्ता ऋण वितरित की जानकारी दी। मात्रा के हिसाब से 27% और मूल्य के हिसाब से 29% की वृद्धि दर्ज की गई। बजाज फाइनेंस ने कहा कि यह सरकार के जीएसटी सुधारों और व्यक्तिगत आयकर में बदलावों के परिणाम को दर्शाता है, जिसका उद्देश्य उपभोक्ताओं की क्रय शक्ति बढ़ाना है। बजाज फाइनेंस ने अब तक 63 लाख ऋण बांटे हैं। कंपनी ने 23 लाख नए ग्राहक हासिल किए, जिनमें से 52% नए ऋण लेने वाले थे।

डीएलसी पेंशनधारकों के लिए सुरक्षा कवच

जीवन प्रमाण पत्र एक ऐसा दस्तावेज है जो यह प्रमाणित करता है कि कोई पेंशनधारी व्यक्ति जीवित है और उसे पेंशन मिलनी चाहिए। भारत सरकार ने इसकी प्रक्रिया को डिजिटल बना दिया है ताकि वरिष्ठ नागरिकों को इस योजना का लाभ मिल सके। डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र (डीएलसी) सरकार की ओर से संचालित जीवन प्रमाण पोर्टल या मोबाइल एप के माध्यम से आसानी से बनाया जा सकता है। यह प्रमाण पत्र मुख्यतः पेंशनभोगियों, सरकारी कर्मचारियों और सेवानिवृत्त सैनिकों के लिए बहुत उपयोगी है। यह योजना पेंशन वितरण में पारदर्शिता और बिचौलियों की भूमिका को समाप्त करती है। यूं कहां जाए तो गलत नहीं होगा कि जीवन प्रमाण पत्र पेंशनधारकों के लिए एक सुरक्षा कवच है। डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र ने इसे और आसान, पारदर्शी बना दिया है, जिससे लाखों वरिष्ठ नागरिकों को लाभ हो रहा है।

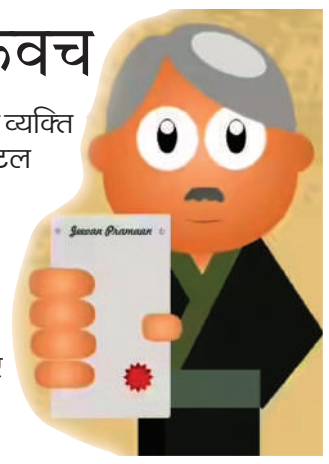

यह योजना

डीएलसी पेंशन पाने वाले के जीवित होने का प्रमाण होता है जो यह बात साबित करता है कि जिसको पेंशन मिल रहा है वह अभी जीवित है। यह प्रमाण पत्र हर साल पेंशनधारकों को देना होता है ताकि उनकी पेंशन जारी रहे। पहले इसे मैनुअली रूप से बैंक या कार्यालय जाकर बनवाना पड़ता था, लेकिन अब इसे बनवाने के लिए सरकार ने डिजिटल सुविधा मुहैया करा दी है।

कैसे बनवाएं और कहां जाएं

- डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र बनाने के लिए "जीवन प्रमाण एप या वेबसाइट पर जाएं।
- पेंशनधारी को अपना आधार, मोबाइल फोन नंबर और पेंशन आईडी देने की जरूरत।
- फिंगरप्रिंट या आईरिस स्कैन से बायोमेट्रिक सत्यापन।
- सत्यापन के बाद डीएलसी ऑनलाइन जनरेट हो जाता है, जिसे बैंक या संबंधित विभाग स्वतः देख सकते हैं।
- निकटतम बैंक शाखा, कॉमन सर्विस सेंटर, डाकघर या जीवन प्रमाण केंद्रों पर जाकर बनवाएं।
- डिजिटल माध्यम से यह कार्य घर बैठे किया जा सकता है यदि आपके पास बायोमेट्रिक डिवाइस हो।

वरिष्ठ नागरिकों के लिए बड़ी राहत

सरकार ने वरिष्ठ नागरिकों, पेंशनधारियों और सरकारी कर्मचारियों की परेशानी को समझते हुए जीवन प्रमाण पत्र को ऑनलाइन बनाने की पहल कर दी है। इससे उन्हें अब किसी बैंक या कार्यालय में जाने की जरूरत नहीं है। साथ ही बैंकों ने भी लोगों के जीवन प्रमाण पत्र बनाने शुरू कर दिए हैं। इसके लिए बैंक की शाखाओं और सरकारी कार्यालय में शिविरों का आयोजन किया जा रहा है।

मुख्य बातें

- हर वर्ष नवंबर में जीवन प्रमाण पत्र जमा करना होता है।
- यह प्रमाण पत्र 12 महीने तक वैध माना जाता है।
- डिजिटलीकरण से धोखाधड़ी घटी और पारदर्शिता बढ़ी।

संरचनात्मक चुनौतियों का सामना कर रहा एमएसएमई : डेलॉयट

नई दिल्ली। भारत में सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उद्यम (एमएसएमई) औपचारिक ऋण तक सीमित पहुंच जैसी संरचनात्मक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। इससे इनकी उत्पादकता प्रभावित हो रही है। हालांकि उनकी डिजिटल तैयारी एक उज्ज्वल बिंदु है। डेलॉयट इंडिया की एक रिपोर्ट में बुधवार को यह बात कही गई।

- एमएसएमई का जीडीपी में 30, निर्यात में 45% का योगदान और 24 करोड़ लोगों को दे रहे रोजगार

भारत में एमएसएमई सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 30 और निर्यात में 45 प्रतिशत का योगदान देते हैं। साथ ही 24 करोड़ से अधिक लोगों को रोजगार देते हैं। अध्ययन अनुसार, आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन (ओईसीडी) समकक्षों की तुलना में डिजिटल तत्परता के उच्च स्तर का प्रदर्शन करने के बावजूद भारतीय एमएसएमई बड़े उद्यमों की उत्पादकता के केवल 18% पर काम करते हैं, जबकि ओईसीडी अर्थव्यवस्थाओं में यह 45-70% है। यह अंतर वैश्विक समकक्षों की तुलना में उनकी प्रतिस्पर्धात्मकता को सीमित करता है।

डेलॉयट इंडिया की अर्थशास्त्री रुमकी मजूमदार ने कहा कि देश का एमएसएमई क्षेत्र कई संरचनात्मक व सतत चुनौतियों से जूझ रहा है, जिनमें औपचारिक ऋण तक सीमित पहुंच, पुरानी प्रौद्योगिकी, नियामकीय जटिलताएं और बुनियादी ढांचे की बाधाएं हैं। डेलॉयट के एमएसएमई चुनौती सूचकांक के अनुसार, सिले परिधान जैसे क्षेत्रों में एमएसएमई को ऋण संबंधी बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

जीएसटी में समाहित करों से राज्यों का राजस्व घटा

नई दिल्ली, एजेंसी

- पीआरएस लेजिस्लेटिव रिसर्च ने जारी की रिपोर्ट, पूर्वोत्तर राज्यों में कर व्यवस्था में दिखा सुधार

जीएसटी में समाहित करों से ज्यादातर मामले में राज्यों को प्राप्त राजस्व कम हुआ है, जबकि कुछ पूर्वोत्तर राज्यों में जीएसटी-पूर्व व्यवस्था की तुलना में उनके कर-जीएसडीपी अनुपात में सुधार देखा गया है। पीआरएस लेजिस्लेटिव रिसर्च के अनुसार, जीएसटी लागू होने के बाद से, इसमें शामिल करों से राज्यों का कुल राजस्व 2023-24 में घटकर सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) का 5.5% रहा। जबकि 2015-16 (जीएसटी-पूर्व व्यवस्था में) में यह जीडीपी का 6.5% था।

कर सुधार के रूप में 2017 में लागू माल एवं सेवा कर (जीएसटी) में केंद्र और राज्य स्तर पर कई कर और शुल्क समाहित हुए। इनमें मूल्य वर्धित कर (वैट), केंद्रीय बिक्री कर, उत्पाद शुल्क और प्रवेश कर शामिल हैं। जीएसटी के सात वर्षों में जीडीपी के प्रतिशत के रूप में औसत एसजीएसटी (2.6%) जीएसटी से पहले के चार पूर्ण वर्षों में सम्मिलित औसत करों से कम रहा है। राज्यों को पहले पांच वर्षों के दौरान एसजीएसटी राजस्व में 14% वार्षिक वृद्धि की गारंटी दी गई थी। जिन राज्यों के राजस्व में यह वृद्धि नहीं हो पाई, उन्हें जून, 2022 तक जीएसटी क्षतिपूर्ति उपकर से प्राप्त राजस्व के माध्यम से क्षतिपूर्ति दी गई। 2015-16 से पहले के चार वर्षों में, राज्यों को उन करों से जीडीपी का औसतन 2.8% प्राप्त हुआ, जिन्हें बाद में जीएसटी में समाहित किया गया। जीएसटी के पहले वर्ष में राजस्व घटकर 2.7% और 2020-21 में और घटकर 2.3% रह गया। 2024-25 में यह बढ़कर 2.8% हो गया।

मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, नगालैंड और सिक्किम जैसे कुछ पूर्वोत्तर राज्यों में जीएसटी-पूर्व व्यवस्था की तुलना में उनके कर-जीएसडीपी अनुपात में सुधार देखा गया है। इसकी तुलना में पंजाब, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, मध्य प्रदेश और ओडिशा जैसे अन्य राज्यों के जीएसडीपी के प्रतिशत के रूप में सम्मिलित करों से राजस्व में अपेक्षाकृत बड़ी गिरावट आई है।

रिलायंस रियल्टी की याचिका की रद्द

परिसमापन कम समय में पूरा हो : एनसीएलएटी

नई दिल्ली, एजेंसी

- न्यायाधिकरण से इंडिपेंडेंट टीवी से किराये और परिसंपत्तियों की वसूली का किया गया था अनुरोध

अपीलीय न्यायाधिकरण एनसीएलएटी ने कर्ज में डूबी रिलायंस कम्युनिकेशंस की अनुषंगी कंपनी रिलायंस रियल्टी की उस अपील को रद्द कर दिया, जिसमें 'इंडिपेंडेंट टीवी' से किराये और परिसंपत्तियों की वसूली का अनुरोध किया गया था। इंडिपेंडेंट टीवी, डीटीएच कारोबार में थी और अब परिसमापन का सामना कर रही है।

राष्ट्रीय कंपनी विधि अपीलीय न्यायाधिकरण (एनसीएलएटी) ने मुंबई पीठ द्वारा पारित पूर्व आदेश को बरकरार रखा है, जिसमें रिलायंस रियल्टी की याचिका को खारिज कर दिया गया था और कहा गया था कि इंडिपेंडेंट टीवी (जिसे औपचारिक रूप से रिलायंस बिग टीवी था) की परिसमापन प्रक्रिया को समयबद्ध तरीके से और यथासंभव कम समय में पूरा किया जाना चाहिए।

एनसीएलएटी की दो सदस्यीय पीठ ने कहा कि परिसमापन प्रक्रिया को अपीलकर्ता (रिलायंस रियल्टी) द्वारा बाधित नहीं किया जाना चाहिए, जिसने बिना किसी ठोस कारण के पट्टे पर दिए परिसर में स्थित परिसंपत्तियों के स्वामित्व के मुद्दे को कभी नहीं उठाया। एनसीएलएटी ने कहा, हमें उस आदेश में कमी नहीं दिखती जिसमें परिसमापक को पट्टे पर दिए परिसर में देनदार की संपत्तियों को हटाने की अनुमति है। इसका परिसमापन कम समय में किया जाए।

माइक्रोसॉफ्ट 15 देशों में 'कोपायलट' का स्थानीय डेटा प्रसंस्करण करेगी

नई दिल्ली। प्रौद्योगिकी कंपनी माइक्रोसॉफ्ट ने कहा कि वह अपने कृत्रिम मेधा (एआई) टूल 'माइक्रोसॉफ्ट 365 कोपायलट' के लिए 2026 तक भारत समेत 15 देशों में स्थानीय स्तर पर ही डेटा प्रोसेसिंग की सुविधा शुरू करेगी। इसका उद्देश्य उडेटा को देश की सीमाओं में सुरक्षित रखना व नियामकीय अनुपालन को मजबूत करना है।

कोपायलट माइक्रोसॉफ्ट के ऑफिस अनुप्रयोगों- वर्ड, एक्सेल, पावरपॉइंट, आउटलुक और टीम्स में एकीकृत है। यह सामग्री बनाने, डेटा विश्लेषण, ईमेल या रिपोर्ट लिखने और सारांश बनाने जैसे काम करता है। माइक्रोसॉफ्ट ने कहा कि भारत, ऑस्ट्रेलिया, जापान और ब्रिटेन में ग्राहकों को विकल्प मिलेगा कि कोपायलट टूल पर होने वाली बात और प्रतिक्रियाओं से संबंधित आंकड़े देश की सीमाओं के भीतर स्थित डेटा केंद्रों में ही प्रसंस्कृत किए जाएं।

विश्लेषण अक्टूबर में सेंसेक्स ने 3,671.09 अंक यानी 4.57% और निफ्टी ने 1,111 अंक यानी 4.51%की दर्ज की बढ़ोत्तरी

भविष्य में सकारात्मक रह सकती है शेयर बाजार की धारणा

नई दिल्ली, एजेंसी

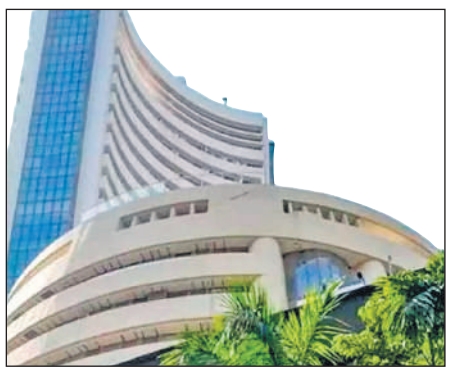

- विदेशी निवेशकों ने तीन महीने की निकासी के बाद गत माह से भारतीय बाजार में 14,610 करोड़ रुपये का किया निवेश

शेयर बाजार में गत तीन माह से जारी उतार चढ़ाव के बाद मासिक आधार पर हुई बढ़ोत्तरी को लेकर विश्लेषकों का कहना है कि घरेलू शेयर बाजार में निवेशक धारणा निकट भविष्य में सकारात्मक बनी रह सकती है। हालांकि, हाल के तेज उछाल के बाद सीमित मुनाफावसूली की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता है। अक्टूबर महीने में बीएसई सेंसेक्स में 3,671.09 अंक यानी 4.57 प्रतिशत की बढ़त दर्ज की गई जबकि एनएसई निफ्टी 1,111 अंक यानी 4.51 प्रतिशत बढ़ गया। दोनों सूचकांकों ने 23 अक्टूबर को 52-सप्ताह के अपने उच्चतम स्तर को भी छुआ।

स्वस्तिका इन्वेस्टमार्ट के वरिष्ठ तकनीकी विश्लेषक प्रवेश गौड़ ने कहा कि अक्टूबर में आया तेज उछाल मजबूत कॉरपोरेट आय, विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) की लगातार खरीद, वैश्विक बॉण्ड प्रतिफल में नरमी और 2025 में ब्याज दरों में कटौती की उम्मीद से प्रेरित रही। आगे भी धारणा सकारात्मक रहेगी लेकिन मौजूदा उच्च मूल्यांकन के चलते उतार-चढ़ाव और क्षेत्रवार बदलाव देखने को मिल सकता है। अक्टूबर में विदेशी निवेशकों ने तीन महीने की निकासी के बाद फिर से भारतीय बाजार में 14,610 करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश किया।

मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड में शोध प्रमुख (संपत्ति प्रबंधन) सिद्धार्थ खेमका ने कहा कि आगे बाजार सीमित दायरे में रह सकता है लेकिन झुकाव सकारात्मक रहेगा। घरेलू आर्थिक बुनियाद मजबूत हैं जिससे निवेशकों का भरोसा बना हुआ है। हालांकि, वैश्विक अनिश्चितताएं निकट अवधि की बढ़त को सीमित कर सकती हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि त्योहारी मांग, एफआईआई और घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) की सक्रिय खरीद और जीएसटी सुधारों ने अक्टूबर में बाजार के मनोबल को बढ़ाया।

जीएसटी दरों में किए गए सुधार ने बाजार की भावनाओं को तेजी प्रदान की

वीएसआरके कैपिटल के निदेशक स्वप्निल अग्रवाल ने कहा कि सेंसेक्स और निफ्टी में 4.5 प्रतिशत से अधिक की तेजी मुख्य रूप से सरकार द्वारा हाल में किए गए जीएसटी सुधारों और बाजार भावना में सुधार के कारण रही। वाहन क्षेत्र में भी मजबूत बिक्री दर्ज की गई। मारुति सुजुकी, महिंद्रा एंड महिंद्रा, टाटा मोटर्स पैसेंजर व्हीकल्स और किआ इंडिया ने अक्टूबर में रिकॉर्ड घरेलू बिक्री की। टोयोटा किर्लोस्कर और स्कोडा ऑटो इंडिया की बिक्री में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई। गौड़ ने कहा कि भारत की आर्थिक बुनियाद मजबूत है जिसे स्थिर जीडीपी वृद्धि, बेहतर कॉरपोरेट आय और बुनियादी ढांचा निवेश का समर्थन प्राप्त है। उन्होंने कहा कि सरकार का विनिर्माण, पूंजीगत व्यय और नीतिगत स्थिरता पर निरंतर ध्यान निवेशकों के भरोसे को बनाए रखेगा। ऐसे में वर्ष 2025 के अंत तक घरेलू बाजार के मजबूती से बंद होने की पूरी संभावना है।

वर्ल्ड ब्रीफ

जमैका में तूफान मेलिसा से 30 लोगों की मौत, 15 लाख प्रभावित

संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र ने कहा है कि जमैका और आसपास के इलाकों में आए भीषण चक्रवाती तूफान मेलिसा ने भारी तबाही मचाई है और इसके कारण 30 लोगों की मौत हो गई और 15 लाख से अधिक लोग प्रभावित हुए हैं। संयुक्त राष्ट्र महासचिव के उप प्रवक्ता फरहान हक ने बताया कि जमैका में सड़कें, बिजली और संचार व्यवस्था बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई हैं। लगभग एक सौ तीस सड़कें अवरुद्ध हैं और कई क्षेत्रों में बिजली तथा मोबाइल नेटवर्क ठप पड़े हैं। स्वास्थ्य सेवाओं पर भी इसका गंभीर असर पड़ा है क्योंकि कई अस्पताल और स्वास्थ्य केंद्र पूरी तरह नष्ट या क्षतिग्रस्त हो गए हैं। संयुक्त राष्ट्र के विश्व खाद्य कार्यक्रम का अनुमान है कि जमैका में लगभग साढ़े तीन लाख लोगों को खाद्य पदार्थों की सहायता की आवश्यकता पड़ सकती है।

अंतरिक्ष में गए चीन के चालक दल की वापसी सुरक्षा के लिए टाली

बीजिंग। चीन के अंतरिक्ष स्टेशन पर तैनात दल की बुधवार को निर्धारित वापसी को टाल दिया गया है। ऐसा संदेह है कि अंतरिक्ष यान पर सूक्ष्म अंतरिक्ष मलबे का प्रभाव पड़ा है। यह घोषणा 'चाइना मैन्ड स्पेस एजेंसी' (सीएमएसए) ने की। अंतरिक्ष एजेंसी ने कहा कि वापसी में देरी का निर्णय अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षा और मिशन की सफलता सुनिश्चित करने के लिए लिया गया है। चीन अपने अंतरिक्ष स्टेशन के दल को हर छह महीने में बदलता है। शनिवार को शेनझोउ-20 अंतरिक्ष यान ने शेनझोउ-21 दल के साथ कक्षा में कार्यभार हस्तांतरण पूरा किया था और उसका बुधवार को पृथ्वी पर लौटने का कार्यक्रम था। शेनझोउ-20 में वर्तमान अंतरिक्ष दल सवार है।

बोस्निया में एक इमारत में आग लगने से 10 की मौत, कई घायल

साराजेवा। बोस्निया के उत्तरपूर्वी शहर तुजला में एक आवासीय इमारत में आग लगने से मंगलवार को कम से कम 10 लोगों की मौत हो गयी। एक अधिकारी और बोस्निया मीडिया ने यह जानकारी दी। दैनिक समाचार पत्र 'दनेवनी अवाज' ने बताया कि इमारत की एक ऊपरी मंजिल पर आग लगने से कम से कम 10 लोगों की मौत हो गयी। अभी तक कम से कम 20 लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया तथा कई और लोगों के हताहत होने की आशंका है। कैंटोनल नेता इरफान हालिलागिक ने समाचारपत्र को दिए एक बयान में पुष्टि की कि मौतें हुई हैं लेकिन उन्होंने यह नहीं बताया कि कितने लोग मारे गए। हालिलागिक ने कहा, हम अब विचार कर रहे हैं कि निवासियों को कहां ठहराया जाए। अखबार और अन्य बोस्नियाई मीडिया संगठनों ने भीषण आग की खबरें पुलिस सूत्रों के हवाले से प्रकाशित की हैं।

उलानबटोर में फंसे 228 यात्री लेकर एअर इंडिया का विमान दिल्ली आया

नई दिल्ली, एजेंसी

- सैन फ्रांसिस्को से दिल्ली आ रहे विमान ने की थी आपात लैंडिंग

एअर इंडिया का एक विमान मंगोलिया की राजधानी उलानबटोर में फंसे 228 यात्रियों और चालक दल के 17 सदस्यों को लेकर बुधवार सुबह दिल्ली पहुंचा। तकनीकी समस्या के कारण सोमवार को सैन फ्रांसिस्को से दिल्ली आ रहे विमान का मार्ग परिवर्तित कर उसे मंगोलिया की राजधानी ले जाया गया, जिसके बाद यात्री वहां फंस गए थे।

एक अधिकारी ने बताया कि उलानबटोर से यात्रियों को लेकर एअर इंडिया का राहत विमान बुधवार सुबह करीब आठ बजकर 24 मिनट पर राष्ट्रीय राजधानी पहुंचा। राहत उड़ान संख्या एआई183 बोइंग 787 ड्रीमलाइनर के साथ संचालित की गई। घटनाक्रम से जुड़े एक सूत्र ने सोमवार को कहा था कि उलानबटोर ले जाए गए बोइंग 777 विमान में 228 यात्रियों और चालक दल के 17 सदस्यों सहित 245 लोग सवार थे। एयरलाइन ने बुधवार को एक बयान में कहा, एहतियाती तौर पर मार्ग परिवर्तन के बाद मंगोलिया के उलानबटोर में फंसे एआई174 के यात्रियों और चालक दल को लेकर राहत उड़ान सुबह दिल्ली में उतरी। संबंधित अधिकारियों के अलावा एअर इंडिया ने भी अपने यात्रियों को मार्ग परिवर्तन के दौरान उनके धैर्य और समझदारी के लिए धन्यवाद दिया।

भारतवंशियों की उपलब्धियां

दुनिया में भारत का परचम

अमेरिका के ताजा चुनाव में न्यूयॉर्क के मेयर चुने गए जोहर ममदानी, वर्जीनिया की लेफ्टिनेंट गवर्नर बनीं गजाला हाशमी और ओहायो के सिनसिनाटी शहर के मेयर पद के चुनाव में आफताब पुरेवैल की जीत ने दुनिया के सबसे शक्तिशाली देश में एक बार फिर भारतवंशियों का डंका बजा दिया है। हालांकि यह पहली बार नहीं है, जब भारतीय मूल के लोगों ने दूसरे देशों में राजनीतिक के शीर्ष पदों पर कब्जा जमाया है। इतिहास उठाकर देखें तो पता चलता है कि दुनिया के लगभग 29 देशों में भारतीय मूल के लोग राजनीति के शीर्ष पदों पर रह चुके हैं या अब भी हैं, इनमें से आठ से ज्यादा देशों के राष्ट्राध्यक्ष भी शामिल हैं। इनमें ब्रिटेन, मॉरीशस, गुयाना, सिंगापुर और आयरलैंड शामिल हैं। भारतवंशियों ने दूसरे देशों में राजनीति के अलावा व्यवसाय, विज्ञान और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में भी अपनी प्रतिभा की दम पर धाक जमाई है।

दूसरे देशों का नेतृत्व

- भारतीय मूल के ऋषि सुनक को वर्ष 2022 में यूनाइटेड किंगडम का प्रधानमंत्री चुना गया था।
- लियो वराडकर ने 2017 से 2020 और 2022 से 2024 आयरलैंड के प्रधानमंत्री का पद संभाला।
- मॉरीशस में अनिरुद्ध जगन्नाथ, नवीन रामगुलाम, प्रविंद जगन्नाथ कई बार प्रधानमंत्री चुने गए।
- त्रिनिदाद और टोबैगो में कमला प्रसाद-बिस्सेसर वर्ष 2010 से 2015 के बीच प्रधानमंत्री चुने गए।
- गुयाना में 1990 से अब तक चेदी जगन, बर्रत जगदेओ, इरफान अली भारतीय मूल के राष्ट्रपति।
- सूरीनाम में वर्ष 2020 में भारतीय मूल के चंद्रिका प्रसाद संतोखी राष्ट्रपति पद संभालने का मौका।
- सेशेल्स में वेवेल रामकलावन, फिजी में महेंद्र चौधरी और सिंगापुर में श्रीनाथन ने भी नेतृत्व किया।

लोकप्रियता में भी आगे

- फिजी में महेंद्र चौधरी जातीय संघर्ष में अपने दृढ़ रुख के कारण पहले भारतीय मूल के प्रधानमंत्री बने।
- आयरलैंड में लियो वराडकर पश्चिमी यूरोप के पहले खुले तौर पर समलैंगिक भारतवंशी प्रधानमंत्री।
- गुयाना का नेतृत्व करने वाले भारतवंशी चेदी जगन को स्वतंत्रता आंदोलन के महानायक माना जाता है।
- मॉरीशस में प्रविंद जगन्नाथ भारतीय मूल के सबसे लंबे समय तक सत्ता में रहने वाले नेताओं में एक थे।

भारत को क्या लाभ

- वैश्विक पहचान और मजबूत छवि, ऋषि सुनक, प्रविंद जगन्नाथ जैसे नेता भारत हितैषी नीति के लिए जाने जाते हैं।
- उद्यमी विदेश में भारत में निवेश के सेतु, सिलिकॉन वैली में भारतीय निवेशक भारत के स्टार्टअप्स को फंड देते हैं।
- सांस्कृतिक प्रभाव बढ़ा है। दिवाली और होली जैसे भारतीय त्योहारों को कई देशों में आधिकारिक मान्यता मिली है।
- भारतीय प्रवासी समुदाय दूसरे देशों में भारत की नीतियों के समर्थन में लॉबिंग करता है, अंतर्राष्ट्रीय लाभ प्राप्त होते हैं।

दुनिया के दूसरे देशों में भारतवंशियों की स्वीकार्यता

- अमेरिका, कनाडा, यूके जैसे उच्च आय वाले देशों में भारतीय मूल के लोगों को सफल, शिक्षित और भरोसेमंद समुदाय माना जाता है।
- कैरेबियाई और अफ्रीकी देशों में शुरू में भेदभाव था, अब भारतीय समुदाय स्थानीय राजनीति व अर्थव्यवस्था में मुख्यधारा में आया है।
- मध्य पूर्व में भारतीय मूल के लोग मुख्यत: श्रमिक और तकनीकी कामगार हैं, और वहां उनका प्रभाव सीमित है, लेकिन वे सम्मानित हैं।

यहां भी आगे : राजनीति के अलावा भारतवंशी कई अन्य क्षेत्रों में भी अगुवाई कर रहे हैं। सुंदर पिचाई गूगल के सीईओ हैं और सत्य नडेला माइक्रोसॉफ्ट के सीईओ। यूएस की टेक पॉलिसी में अर्जुन रामपाल, वेंचर कैपिटल में विनोद खोसला का नाम आता है। साइंस एंड रिसर्च में नोबल पुरस्कार विजेता वेंकटरमण रामकृष्णन, व्यापार और वित्त में लक्ष्मी मित्तल का नाम आता है।

न्यूयॉर्क का मेयर बनते ही ममदानी ने ट्रंप को आव्रजन के मुद्दे पर दी चुनौती

चुनाव जीतने के बाद नेहरू को किया याद, कहा- पुराने से नए युग में रखेंगे कदम

न्यूयॉर्क, एजेंसी

ममदानी की विजय के बाद उनके समर्थक जश्न मनाने न्यूयॉर्क की सड़कों पर उतर आए।

न्यूयॉर्क सिटी के मेयर चुने गए जोहरान ममदानी ने अपने तेजतर्रार विजयी भाषण में अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को आव्रजन के मुद्दे पर चुनौती दी, 'राजनीतिक वंशवाद' को खत्म करने की बात कही और पूर्व भारतीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के शब्दों का उल्लेख करते हुए कहा कि शहर पुराने से नए युग की ओर बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि उनकी जीत अत्याचार और मुनाफाखोरी के खिलाफ उम्मीद का प्रतीक है।

भारतीय मूल के ममदानी ने मंगलवार को चुनावों में निर्णायक एवं ऐतिहासिक जीत हासिल की। उन्होंने रिपब्लिकन उम्मीदवार कर्टिस स्लिवा तथा दिग्गज नेता एवं न्यूयॉर्क के पूर्व गवर्नर एंड्रयू कुओमो को हराया, जो निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ रहे थे। कुओमो को चुनाव की पूर्व संध्या पर ही अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का समर्थन प्राप्त हुआ था। इस जीत के साथ ही ममदानी अमेरिका के सबसे बड़े शहर में मेयर बनने वाले पहले दक्षिण एशियाई और मुस्लिम व्यक्ति बन गए।

ममदानी ने आधी रात के आसपास डाउनटाउन ब्रुकलिन के एक संगीत स्थल 'ब्रुकलिन पैरामाउंट' में अपने हज़ारों समर्थकों के सामने जोशीले विजयी भाषण में कहा, भविष्य हमारे हाथों में है। दोस्तों, हमने एक राजनीतिक वंश को उखाड़ फेंका है। उन्होंने तालियों की गड़गड़ाहट और अपने समर्थकों के नारों के बीच कहा, न्यूयॉर्क, आज रात आपने कर दिखाया, यह बदलाव का जनादेश है। एक नई राजनीति का जनादेश। एक ऐसे शहर का जनादेश, जहां रहने का खर्चा हम वहन कर सकते हैं। और एक ऐसी सरकार का जनादेश जो बिल्कुल यही करती है।

ममदानी ने न्यूयॉर्क की राजनीति में एक नए युग की शुरुआत की बात करते हुए भारत के प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू का उल्लेख किया। उन्होंने कहा, आपके सामने खड़े होकर मुझे जवाहरलाल नेहरू के शब्द याद आते हैं। इतिहास में कभी-कभी ऐसा क्षण आता है जब हम पुराने से नए युग में कदम रखते हैं, जब एक युग समाप्त होता है और जब किसी राष्ट्र की लंबे समय से दबाई गई आत्मा को अभिव्यक्ति मिलती है। उन्होंने कहा... तो आइए अब हम स्पष्टता और दृढ़ विश्वास के साथ इस बारे में बात करें कि यह नया युग क्या लाएगा और किसके लिए लाएगा।

ट्रंप पर वार... अब आव्रजक ही चलाएंगे न्यूयॉर्क

ममदानी ने अपने विजय भाषण में ट्रंप को चुनौती दी, जिन्होंने राष्ट्रपति के रूप में अपने दूसरे कार्यकाल में आव्रजन पर कड़ी कार्रवाई शुरू की है। उन्होंने कहा कि न्यूयॉर्क को आव्रजकों द्वारा चलाया जाएगा और उनकी ऐतिहासिक जीत के बाद इसका नेतृत्व भी एक आव्रजक द्वारा किया जाएगा। अपने माता-पिता और पत्नी रमा दुवाजी के साथ ममदानी का लगभग 25 मिनट का भाषण बॉलीवुड फिल्म 'धूम' के लोकप्रिय भारतीय गीत 'धूम मचाले' के साथ समाप्त हुआ। उन्होंने कहा, मेरे मां और बाबा, आज मैं जो कुछ हूं, आपकी वजह से हूं। मुझे आपका बेटा होने पर बहुत गर्व है। और मेरी अद्भुत पत्नी रमा, मेरी जिंदगी : इस पल और हर पल, आपके सिवा मैं किसी और को अपने साथ नहीं देखना चाहता।

मेरे चुनाव प्रचार में न उतरने और शटडाउन के कारण हारे : ट्रंप

वाशिंगटन। ट्रंप ने बुधवार को सोशल मीडिया मंच 'ट्रुथ' पर पोस्ट में कहा कि चुनाव प्रचार से उनकी अनुपस्थिति और शटडाउन के कारण रिपब्लिकन पार्टी मेयर चुनाव हार गई। एक अन्य पोस्ट में ट्रंप ने मतदाता सुधारों का आह्वान किया। उन्होंने लिखा, रिपब्लिकन 'फिलिबस्टर' को समाप्त करें। कानून पारित कराने और मतदाता सुधार पर ध्यान केंद्रित करें। फिलिबस्टर एक संसदीय प्रक्रिया है, जिसमें विधायी निकाय के एक या अधिक सदस्य प्रस्तावित कानून पर बहस को इतना लंबा खींचते हैं कि निर्णय में देरी हो जाती है या उसे पूरी तरह से रोका जा सकता है।

डेमोक्रेटिक पार्टी ने जीत का जश्न मनाया

वाशिंगटन। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन और बराक ओबामा ने ममदानी और अन्य पार्टी नेताओं को चुनावी सफलता की बधाई दी। क्लिंटन ने लिखा, न्यूयॉर्क के अगले मेयर के रूप में चयन पर जोहरान ममदानी को बधाई। आपकी सफलता की कामना करता हूं, जब आप अपने चुनाव अभियान के जोश को एक बेहतर, न्यायसंगत और अधिक किफायती न्यूयॉर्क बनाने के प्रयास में बदलने के लिए काम करेंगे। ओबामा ने कहा, यह हमें याद दिलाता है कि जब हम मजबूत और दूरदर्शी नेताओं के साथ एकजुट होते हैं, जो महत्वपूर्ण मुद्दों को ध्यान में रखते हैं, तो हम जीत सकते हैं।

अमेरिका के केंटुकी में विमान दुर्घटना, नौ की मौत, आसपास के इलाकों तक फैली आग

- कार्गो विमान में था 38000 गैलन जेट ईंधन, प्रशासन ने मृतकों की संख्या बढ़ने की आशंका जताई

न्यूयॉर्क, एजेंसी

कार्गो विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद ऊपर उठता घना काला धुआं।

अमेरिका के केंटुकी में लुइसविले अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के निकट मंगलवार को एक कार्गो विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया जिसमें मरने वालों की संख्या बढ़कर सात हो गई है। इस घटना में विमान में आग लग गई जो विमान के गिरने के साथ ही एक बड़े क्षेत्र में फैल गई।

संघीय उड्डयन प्रशासन (एफएए) ने बताया कि यूपीएस के विमान 2976 में 38,000 गैलन जेट ईंधन और चालक दल के तीन सदस्य सवार थे। यह विमान लुइसविले के मुहम्मद अली अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से उड़ान भरने के कुछ ही देर बाद स्थानीय समयानुसार शाम लगभग सवा पांच बजे दुर्घटनाग्रस्त हो गया।

गवर्नर एंडी बेशियर ने कहा कि इस विनाशकारी दुर्घटना में कम से कम सात लोगों की मौत हो गई और 11 लोग घायल हो गए।

उन्होंने कहा कि यह संख्या बढ़ने की आशंका है। उन्होंने बताया कि विमान हवाई अड्डे के पास दुर्घटनाग्रस्त हुआ, जिससे दो व्यावसायिक प्रतिष्ठान प्रभावित हुए और क्षेत्र के अन्य व्यवसाय भी प्रभावित हुए। घटनास्थल से प्राप्त वीडियो में भीषण आग और दुर्घटनास्थल से काले धुएं का घना गुबार उठता दिखाई दिया। लुइसविले के अग्निशमन प्रमुख ब्रायन ओ'नील ने कहा कि सैकड़ों अग्निशमन कर्मियों ने आग पर लगभग काबू पा लिया है और संभावित पीड़ितों की तलाश में पूरे इलाके में ग्रिड दर ग्रिड तलाशी अभियान चला रहे हैं।

अमेरिका में सबसे लंबा 36 दिन का शटडाउन

वाशिंगटन। अमेरिका में एक अक्टूबर से शुरू हुआ शटडाउन बुधवार को 36वें दिन में प्रवेश कर गया। यह अमेरिका के इतिहास का सबसे लंबा शटडाउन है। इससे पहले राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के पहले कार्यकाल के दौरान 2018 में 35 दिनों तक सरकारी कामकाज ठप रहा था। इस शटडाउन की वजह से 4.2 करोड़ गरीब अमेरिकियों की खाद्य सहायता (फूड स्टैंप) रुक गई है।

पुतिन ने जारी किया परमाणु परीक्षण फिर से शुरू करने की योजना पेश करने का आदेश

मॉस्को, एजेंसी

- ट्रंप की घोषणा के जवाब में रूसी राष्ट्रपति ने उठाया कदम

रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने बुधवार को अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे परमाणु परीक्षणों को फिर से शुरू करने की संभावनाओं पर प्रस्ताव तैयार करें। यह कदम अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के पिछले सप्ताह दिए गए उन बयानों के जवाब में उठाया गया है, जिनमें उन्होंने संकेत दिया था कि अमेरिका अपने परमाणु परीक्षण फिर से शुरू कर सकता है।

राष्ट्रपति सुरक्षा परिषद की बैठक को संबोधित करते हुए पुतिन ने अपने पहले दिए गए उस बयान को दोहराया कि मॉस्को केवल तभी परमाणु परीक्षण दोबारा शुरू करेगा, जब अमेरिका ऐसा कदम उठाएगा। हालांकि, उन्होंने रक्षा मंत्रालय, विदेश मंत्रालय और अन्य सरकारी एजेंसियों को निर्देश दिया कि वे वॉशिंगटन के इरादों का विश्लेषण करें और परमाणु हथियार परीक्षण फिर से शुरू करने के संभावित प्रस्ताव तैयार करें। डोनाल्ड ट्रंप ने 30 अक्तूबर को कहा था कि अमेरिका करीब तीन दशकों में पहली बार परमाणु हथियारों का परीक्षण फिर से शुरू कर सकता है।

अमेरिकी आयात पर 24% टैरिफ एक साल को स्थगित करेगा चीन

बीजिंग। चीनी वित्त मंत्रालय ने कहा है कि चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच हाल ही में हुई व्यापार वार्ता के अनुरूप चीन 10 नवंबर से एक वर्ष के लिए अमेरिकी वस्तुओं पर अतिरिक्त 24 प्रतिशत आयात शुल्क को स्थगित करेगा। मंत्रालय के मुताबिक चीन-अमेरिका व्यापार वार्ता के दौरान बनी सहमति को लागू करने के लिए आयात शुल्क कानून, सीमा शुल्क कानून, विदेश व्यापार कानून और अन्य प्रासंगिक कानूनों तथा विनियमों तथा अंतर्राष्ट्रीय कानून के मूल सिद्धांतों के अनुसार यह निर्णय लिया गया है।

पाकिस्तान ने गुरु नानक जयंती मनाने सिख जत्थे के साथ जा रहे हिंदुओं को रोका

अमृतसर, एजेंसी

गुरु नानक देव की जयंती समारोह में भाग लेने भारतीय सिख तीर्थयात्रियों का पहला जत्था मंगलवार को अटारी-वाघा सीमा पार कर पाकिस्तान पहुंचा, लेकिन तीर्थयात्रियों की खुशी वाघा सीमा पर उस समय फीकी पड़ गई, जबएक बड़े सिख प्रतिनिधिमंडल के साथ पाकिस्तान में प्रवेश कर रहे 12 हिंदू तीर्थयात्रियों के एक समूह को सभी औपचारिकताएं पूरी करने के बावजूद अचानक आगे बढ़ने से रोक दिया गया। पाकिस्तानी अधिकारियों ने कहा कि वे हिंदू होने के कारण आगे नहीं बढ़ सकते।

इन हिंदू तीर्थयात्रियों को भारत लौटना पड़ा। भारतीय अधिकारियों और संगठनों ने इस कार्रवाई की व्यापक रूप से निंदा की और इसे भेदभावपूर्ण बताया। हिंदू तीर्थयात्रियों के पास वैध वीजा थे और उन्होंने सभी आव्रजन और यात्रा प्रक्रियाएं पूरी कर ली थीं। पाकिस्तानी अधिकारियों ने उन्हें ननकाना साहिब जाने वाली बस में चढ़ने से रोक दिया और कहा कि केवल सिखों के रूप में सूचीबद्ध लोगों को ही यात्रा करने की अनुमति होगी। इसके बाद तीर्थयात्रियों को भारत वापस भेज दिया गया, और उनमें से एक ने इस घटना पर अपना अपमान और दुख व्यक्त किया।

गुरु पर्व मनाने पहुंचे पहले सिख जत्थे का स्वागत करते पाकिस्तानी अधिकारी।

भारत सरकार दे मुंहतोड़ जवाब : प्रो. चावला ने कहा कि जत्थेदार कुलदीप सिंह गड़गज भी पाकिस्तान पहुंचे हैं। यह उनसे आशा की जाती है कि वे इस अन्याय को रोकते और पाकिस्तान की चाल का मुंह तोड़ जवाब देते। अफसोस ऐसा नहीं हो सका। उन्होंने कहा कि अब भारत सरकार को चाहिए कि वे पाकिस्तान को उसी की भाषा में जवाब दे और पाकिस्तान के केवल हिंदू श्रद्धालुओं को ही भारत यात्रा की आज्ञा दे।

हिंदू-सिखों में फूट डालने की नापाक चाल

ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तान जाने वाला यह पहला जत्था था और इस घटना को हिंदू और सिख समुदायों के बीच विभाजन पैदा करने के एक जानबूझकर किया गया कृत्य माना जा रहा है। पंजाब की पूर्व स्वास्थ्य मंत्री प्रो. लक्ष्मीकांत चावला ने घटना की निंदा करते हुए कहा है कि पाकिस्तान में हिंदू श्रद्धालुओं को गुरुद्वारा दर्शन के लिए न जाने देना भारत में लोगों में फूट डालने का घृणित प्रयास है, जिसका केंद्र सरकार शीघ्र ही गंभीर नोटिस लेना चाहिए। पूर्व मंत्री ने कहा कि हिंदू और सिख जो एक ही मां के दो बेटे हैं, एक ही परंपरा से पैदा हुए हैं और जिनका परिवार भी एक है उनको बांटने के लिए पहले अंग्रेजों ने प्रयास किया। 1882 में पहले अंग्रेजों का थोपा हुआ प्रिंसिपल मैकालिफ इस काम को आगे बढ़ाता रहा और इसके बाद अपने ही देश के कुछ नेताओं ने समाज को बांटने की कमान संभाल ली। उन्होंने कहा कि हिंदुस्तान के सभी प्रमुख गुरुद्वारों में विशेषकर अमृतसर श्री हरिमंदिर में अगर रोज के श्रद्धालुओं की संख्या देखी जाए तो हिंदू श्रद्धालु ज्यादा हैं, जो देश से भी आते हैं, विदेश से भी आते हैं। प्रो. चावला ने कहा कि वैसे तो हिंदू और सिख दो लिखने में ही कष्ट होता है, पर अगर राजनीतिक हितों ने उन्हें दो पक्ष बना ही दिया है तो पाकिस्तान को यह छूट नहीं दी जा सकती कि वह भारत से गए हिंदू श्रद्धालुओं को गुरु घर के दर्शन करने न जाने दे।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 6 नवंबर, गुरुवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास- मार्गशीर्ष, पक्ष-कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा 14 .54 तक तत्पश्चात द्वितीया।

आज का पंचांग

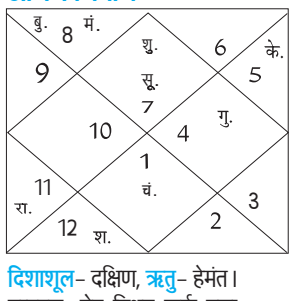

दिशाशूल- दक्षिण, ऋतु- हेमंत। चन्द्रबल- मेष, मिथुन, कर्क, तुला, वृश्चिक, कुंभ।
ताराबल- अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, आर्द्रा, पुष्य, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, शतभिषा, उत्तराभाद्रपद।
नक्षत्र- भरणी 06 .34 तक तत्पश्चात कृत्तिका 7 नवंबर 03 .28 तक तत्पश्चात रोहिणी।

मेष आज का दिन नई साझेदारियों के लिए शुभ है। कार्यक्षेत्र में दूसरों पर निर्भरता बढ़ सकती है। आपकी कार्यकुशलता में वृद्धि होगी। पड़ोसियों से अपने संबंध अच्छे रखें। प्रेम संबंधों को लेकर पारिवारिक सहमति मिल सकती है।

वृष आज समाज में आपको उचित मान-सम्मान मिलेगा। रुका हुआ कार्य बनने से मानसिक अशांति दूर होगी। दांपत्य संबंधों की कड़वाहट दूर हो सकती है। ससुराल पक्ष से अपने संबंध अच्छे रखें। परिवार में उत्सव का वातावरण रहेगा।

मिथुन आज अपनी उपलब्धियों का दिखावा करने से बचें। वाहन चलाते समय चोट लग सकती है। जीवनसाथी के साथ आप अच्छा समय बिताएंगे। आपके ऊपर काम का दबाव बढ़ सकता है। गृहस्थ जीवन में शांति रहेगी। बच्चों के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी।

कर्क आज कारोबार में नई शुरुआत कर सकते हैं। नौकरी कर रहे लोगों के ऊपर से काम का दबाव कम होगा। प्रेमीजन से विवाह को लेकर चर्चा कर सकते हैं। मित्रों और सहयोगियों की सहायता करने से आत्मिक संतुष्टि होगी।

सिंह आज अपनी जिम्मेदारियों को लेकर थोड़े परेशान रहेंगे। आप अत्यंत ऊर्जावान महसूस करेंगे। किसी राजनीतिक चर्चा में सम्मिलित हो सकते हैं। अपनी दिनचर्या को अनुशासित रखें। प्रेमी जन से कोई वादा न करें।

कन्या आज कानूनी मामले उलझ सकते हैं। विद्यार्थियों के लिए दिन बहुत अच्छा है। उच्च शिक्षा में परेशानियां बढ़ सकती हैं। घर के छूटे कार्यों को लेकर तनाव हो सकता है। आर्थिक नुकसान होने की संभावना बन रही है।

तुला आज कोई भी बड़ा निर्णय सोच-समझकर ही लें। अनावश्यक चर्चाओं से दूरी बनाकर रखें। दांपत्य संबंधों में संवादहीनता जैसी परिस्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं। नजदीकी लोगों की सलाह को अनसुना करना नुकसानदेह हो सकता है।

वृश्चिक आज व्यवसाय में आपको बड़ा धन लाभ हो सकता है। पिछले काफी समय से चली आ रही उलझनों से राहत मिलेगी। ननिहाल पक्ष से शुभ समाचार मिल सकते हैं। वैवाहिक जीवन काफी रोमांटिक रहेगा। गले में कफ की शिकायत हो सकती है।

धनु आज आपकी कार्यक्षमता प्रभावित हो सकती है। अचानक नए कार्यों की शुरुआत न करें। आपको सभी कार्य समय पर करने चाहिए। अटका हुआ धन वापस मिलेगा। अपने स्वभाव में लचीलापन रखना आवश्यक है। प्रेम संबंधों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी।

मकर आज निवेश के दौरान सावधानी रखें। दार्शनिक विचारों के प्रभाव में रहेंगे। जल्दबाजी में लिए गए निर्णयों से नुकसान होगा। उच्च रक्तचाप के कारण समस्या होगी। अधिकारी वर्ग के साथ तनाव हो सकता है। नए प्रेम संबंधों को लेकर समस्या होगी।

कुंभ आज अपनी गलतियों को छिपाने के बजाय उन्हें दूर करने का प्रयास करें। रियल एस्टेट से जुड़े लोग नए सौदों को जांच-परख कर ही करें। जाने-अनजाने में आपसे कुछ त्रुटियां हो सकती हैं। आपको सिरदर्द और वायरल बुखार की समस्या हो सकती है।

मीन आज आपकी बातों से लोग प्रभावित होंगे। जॉब में स्थायित्व की भावना बढ़ेगी। जीवनसाथी के साथ संबंध मधुर होंगे। आपके नए मित्र बन सकते हैं। आपको मेहनत का सार्थक परिणाम मिलेगा। आपको अधिकारियों से सहायता लेनी चाहिए।

सुडोकू-152

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

		1				2	3	
	2	4						
			2	6	7			
5			3	7				
7								8
3				9	4			
			8	5	1			
	3					7	2	
	6	5				9		

सुडोकू - 151 का हल

9	1	5	6	2	8	3	4	7
3	4	8	5	1	7	6	9	2
6	7	2	3	4	9	8	5	1
2	6	4	9	7	3	1	8	5
8	3	1	4	5	2	7	6	9
5	9	7	8	6	1	2	3	4
1	5	6	7	3	4	9	2	8
7	8	3	2	9	5	4	1	6
4	2	9	1	8	6	5	7	3

अर्शदीप सिंह विश्वस्तरीय गेंदबाज हैं। उन्होंने पावरप्ले में अधिकतर विकेट लिए हैं। हम बस उनसे यही कहते हैं कि वे कड़ी मेहनत करें और जब भी उन्हें मौका मिले, उसके लिए तैयार रहें।
–मोर्ने मोर्कल

स्टेडियम

बरेली, गुरुवार 6 नवंबर 2025

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

सऊदी अरब के रियाद में डब्ल्यूटीए टेनिस फाइनल्स के महिला एकल मैच के दौरान कजाकिस्तान की एलेना रयबाकिना रूस की एकातेरिना एलेक्जेंड्रोवा के शॉट को रोकती हुई।

रिचा घोष को सोने की परत वाली गेंद और बल्ला देगा कैब

कोलकाता : बंगाल क्रिकेट संघ (कैब) भारत की विकेटकीपर बल्लेबाज रिचा घोष को महिला विश्व कप में शानदार प्रदर्शन के लिये यहां शनिवार को ईडन गार्डस पर एक भव्य सम्मान समारोह में खास तौर से बनाए गए सोने की परत चढा बल्ला और गेंद प्रदान करेगा। भारत की ऐतिहासिक खिताबी जीत की शिल्पकारों में से एक रिचा ने आठ पारियों में 133.52 की स्ट्राइक रेट से 235 रन बनाए। वह टीम के लिये सर्वाधिक रन बनाने वाली पांच बल्लेबाजों में से थी। भारत के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली और महान तेज गेंदबाज झूलन गोस्वामी के हस्ताक्षर वाला बल्ला उन्हें भारतीय क्रिकेट में अतुलनीय योगदान के लिये प्रदान किया जाएगा।

दिप्तायन ने किया विश्व शतरंज में उलटफेर

पणजी : ग्रैंडमास्टर दिप्तायन घोष ने विश्व शतरंज कप में सबसे बड़ा उलटफेर करते हुए पूर्व विश्व चैंपियनशिप चैलेंजर रूस के इयान नेपोम्नियाची को दूसरे दौर के दूसरे गेम में हरा दिया। एकतरफा मुकाबले में घोष ने उन्हें कोई मौका ही नहीं दिया। जीत के बाद उन्होंने कहा यह मेरे शतरंज कैरियर की सबसे बड़ी जीत है।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चौथा टी-20 मुकाबला आज, भारत का पड़ला भारी

शुभमन गिल की निगाह बड़े स्कोर पर

कैरारा (गोल्ड कोस्ट), एजेंसी

अभी तक अपेक्षित प्रदर्शन नहीं कर पाने वाले शुभमन गिल ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ गुरुवार को यहां होने वाले चौथे टी-20 अंतर्राष्ट्रीय मैच में बड़ा स्कोर बनाने की कोशिश करेंगे जिसमें भारतीय टीम जीत के प्रबल दावेदार के रूप में शुरुआत करेगी। तीन मैचों के बाद शृंखला 1-1 से बराबर है, लेकिन ऑस्ट्रेलिया की टीम कुछ प्रमुख खिलाड़ियों की अनुपस्थिति में थोड़ा कमजोर नजर आ रही है। पिछले मैच में जोश हेजलवुड की अनुपस्थिति से स्पष्ट अंतर नजर आया था, जब भारत 186 रन के लक्ष्य को हासिल करके शृंखला बराबर करने में सफल रहा था। चौथे मैच में ऑस्ट्रेलिया को ट्रेविस हेड की भी कमी खलेगी क्योंकि सलामी बल्लेबाज को एशेज की तैयारी के लिए शेफील्ड शील्ड में खेलना है। ऑस्ट्रेलिया की टीम के इन दोनों प्रमुख खिलाड़ियों की अनुपस्थिति में भारत के पास गाबा में अंतिम मैच से पहले 2-1 की बढ़त हासिल करने का यह सबसे अच्छा मौका है। हालांकि, भारतीय टीम प्रबंधन को टेस्ट और वनडे कप्तान शुभमन गिल की फॉर्म थोड़ी परेशान कर सकती है, क्योंकि उन्होंने अब तक ऑस्ट्रेलिया के वर्तमान दौरे में छह मैच खेले हैं और एक भी अर्धशतक नहीं लगाया है। एकदिवसीय एजेंसी की शुरुआत से अब तक उनके स्कोर का क्रम 10, 9, 24, नाबाद 37, 5 और 15 है। अभी तक केवल एक बार वह अच्छी फॉर्म में दिखे थे। वह कैनबरा में था जब उन्होंने कप्तान सूर्यकुमार यादव के साथ अच्छी साझेदारी की थी। बारिश के कारण यह मैच रद्द कर दिया गया था। गिल को फुल लेंथ की गेंदों से परेशानी हो रही है, जिनमें मूवमेंट की झलक दिख रही है। चिंता की बात यह है कि गिल अभी तक अपनी चिर परिचित लय में नहीं दिखे हैं। भारत के लिए अच्छी बात यह है कि अभिषेक शर्मा ने विश्व के नंबर एक टी20 बल्लेबाज की अपनी ख्याति के अनुरूप प्रदर्शन किया है और टीम को उनसे एक बार फिर एक और जोरदार पारी की उम्मीद होगी। गिल को एक सप्ताह के भीतर लाल गेंद से खेलना शुरू करना होगा और अगर वह किसी भी प्रारूप में खेल रहे हों तो कुछ रन बनाने से उनका आत्मविश्वास काफी बढ़ेगा। कप्तान सूर्यकुमार यादव ने पहले और तीसरे मैच में अच्छी शुरुआत के साथ अपनी पुरानी फॉर्म की झलक दिखाई है लेकिन अब वह बड़ा स्कोर बनाना चाहेंगे क्योंकि दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अगली सीरीज से पहले उन्हें एक महीने का ब्रेक मिलेगा। इस बीच, उम्मीद की जा रही है कि सूर्यकुमार पुडुचेरी के खिलाफ मुंबई की ओर से रणजी ट्रॉफी मैच खेलेंगे। अर्शदीप सिंह के शामिल होने से गेंदबाजी विभाग अधिक मजबूत दिखता है, जबकि कुलदीप यादव को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टेस्ट सीरीज की तैयारी के लिए वापस भेज दिया गया है।

समय दोपहर 1:45 बजे से

शुभमन गिल व अभिषेक शर्मा।

स्पिन का सामना करने के लिए अच्छी तैयारी जरूरी : मैथ्यू शॉर्ट

गोल्ड कोस्ट : ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज मैथ्यू शॉर्ट मौजूदा टी-20 शृंखला में भारतीय गेंदबाजों का सामना करने के अवसर का आनंद ले रहे हैं, लेकिन उन्होंने स्वीकार किया कि अगले साल होने वाले टी-20 विश्व कप की तैयारी के लिए उपमहाद्वीपीय परिस्थितियों में स्पिन के अनुकूल ढलना महत्वपूर्ण होगा। शॉर्ट मौजूदा सीमित ओवरों की शृंखला का अभिन्न हिस्सा रहे हैं क्योंकि ऑस्ट्रेलिया अगले साल फरवरी से मार्च के दौरान भारत और श्रीलंका में होने वाले टी 20 विश्व कप के लिए अपनी टीम को अंतिम रूप देने की कोशिश कर रहा है। शॉर्ट ने चौथे टी-20 मैच से पहले कहा सुधार करने के अपने अलग-अलग तरीके होते हैं। विश्व कप भारत और श्रीलंका में खेला जाना है और इसे देखते हुए स्पिन के खिलाफ खेलना मेरे लिए अच्छी बात है। मुझे लगता है कि इसमें थोड़ी और मेहनत करने की जरूरत है।

टीम

भारत : सूर्यकुमार यादव (कप्तान), अभिषेक शर्मा, शुभमन गिल (उपकप्तान), तिलक वर्मा, नितीश कुमार रेड्डी, शिवम दुबे, अक्षर पटेल, जितेश शर्मा (विकेटकीपर), वरुण चक्रवर्ती, जसप्रीत बुमराह, अर्शदीप सिंह, हर्षित राणा, संजू सैमसन (विकेटकीपर), रिंकू सिंह, वॉशिंगटन सुंदर।

ऑस्ट्रेलिया : मिशेल मार्श (कप्तान), मैथ्यू शॉर्ट, जोश इंग्लिस (विकेट कीपर), जोश फिलिप (विकेट कीपर), मिशेल ओवेन, ग्लेन मैक्सवेल, मैट कुहनेमन, एडम ज़म्पा, महली बियर्डमैन, बेन ड्वार्शिस, जेवियर बार्टलेट, नाथन एलिस, मार्कस स्टोइनिस।

टीम प्रबंधन का मुख्य मुद्दा हमेशा से यह रहा है कि कुलदीप व अर्शदीप दोनों को एक साथ नहीं खिलाया जा सकता। पर फिलहाल ऐसी कोई समस्या नजर नहीं आती है। वाशिंगटन सुंदर की मौजूदगी में भारतीय बल्लेबाजी मजबूत नजर आती है। वाशिंगटन ने पिछले मैच में 23 गेंद पर नाबाद 49 रन बनाकर भारत को जीत दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। ऑस्ट्रेलियाई टीम अपनी आक्रामक बल्लेबाजी के लिए कप्तान मिशेल मार्श और टिम डेविड पर काफी हद तक निर्भर रहेगी। हेड की अनुपस्थिति में मार्श मैथ्यू शॉर्ट को अपना सलामी जोड़ीदार बना सकते हैं। ऑस्ट्रेलिया को हालांकि अपने गेंदबाजी विभाग में बदलाव करने पड़ सकते हैं क्योंकि सीन एबॉट अपेक्षित प्रदर्शन नहीं कर पाए हैं और बेन ड्वार्शुइस या महली बियर्डमैन में से किसी एक को उनकी जगह पर लाया जा सकता है।

ऑस्ट्रेलिया में सीरीज के एक मैच के दौरान विकेट लेने के बाद जश्न मानते अर्शदीप सिंह।

अर्शदीप सिंह जानते हैं हमारी योजना : मोर्कल

कैरारा (गोल्ड कोस्ट), एजेंसी

- भारत के गेंदबाजी कोच मोर्ने मोर्कल बोले- हम आजमा रहे हैं अलग-अलग संयोजन

भारत के गेंदबाजी कोच मोर्ने मोर्कल ने बुधवार को कहा कि अर्शदीप सिंह को चयन मामलों में भले ही परेशानी का सामना करना पड़ा हो, लेकिन यह तेज गेंदबाज इस बात को अच्छी तरह से समझता है कि टीम प्रबंधन बड़ी तस्वीर को देखते हुए अलग-अलग संयोजन आजमा रहा है। अर्शदीप को होबार्ट में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीसरे टी-20 अंतर्राष्ट्रीय मैच में अंतिम एकादश में शामिल किया गया था।

उन्होंने शानदार वापसी की और वह मैच के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुने गए थे। उन्हें पहले दो मैचों में अंतिम एकादश में नहीं चुना गया, क्योंकि उन्हें और कुलदीप यादव को एक साथ नहीं खिलाया जा सकता और दुबई की परिस्थितियों के कारण सितंबर में एशिया कप में भी वे पहली पसंद नहीं थे। गौरतलब है कि अर्शदीप टी-20 अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में 100 से अधिक विकेट लेने वाले एकमात्र भारतीय गेंदबाज़ हैं।

मोर्कल ने गुरुवार को यहां होने वाले चौथे टी-20 अंतर्राष्ट्रीय मैच से पहले संवाददाताओं से कहा अर्शदीप अनुभवी हैं और उन्हें पता है कि हम बड़ी तस्वीर को देख रहे हैं और अलग-अलग संयोजनों को आजमा रहे हैं। उन्हें पता है कि वह विश्वस्तरीय गेंदबाज हैं और उन्होंने पावरप्ले में अधिकतर विकेट लिए हैं। उन्होंने कहा हम जानते हैं कि वह टीम के लिए कितने अमूल्य खिलाड़ी है, लेकिन हमें अन्य संयोजनों पर भी गौर करने की जरूरत है और वह इस बात को समझते हैं। मोर्कल ने हालांकि स्वीकार किया कि अर्शदीप जैसी क्षमता वाले गेंदबाज के लिए यह आसान नहीं रहा है। उन्होंने कहा यह आसान काम नहीं है लेकिन कभी-कभी कड़े फैसले करने पड़ते हैं। हम बस उनसे यही कहते हैं कि वे कड़ी मेहनत करें और जब भी उन्हें मौका मिले, उसके लिए तैयार रहें। टी20 विश्व कप से पहले अब सीमित मैच ही बचे हैं। मोर्कल ने कहा इसलिए, हमारे लिए यह देखना ज़रूरी है कि दबाव की परिस्थितियों में खिलाड़ी कैसा प्रदर्शन करते हैं।

फिटनेस साबित करने के बाद पंत की वापसी

नई दिल्ली, एजेंसी

- दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टेस्ट सीरीज के लिए भारतीय टीम घोषित, शमी को नहीं मिली जगह

स्टार विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत ने पैर के फ्रेक्चर से उबरकर दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ आगामी दो मैचों की घरेलू श्रृंखला के लिये भारतीय टेस्ट टीम में वापसी की जबकि तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी एक बार फिर टीम में जगह बनाने में नाकाम रहे।

पंत को जुलाई में मैनचेस्टर में इंग्लैंड के खिलाफ चौथे टेस्ट के दौरान चोट लगी थी और वह वेस्टइंडीज के खिलाफ अगली श्रृंखला नहीं खेल सके थे। उन्होंने हाल ही में बेंगलुरु में दक्षिण अफ्रीका ए के खिलाफ भारत ए टीम की कप्तानी की और दूसरी पारी में 90 रन बनाए। शुभमन गिल की कप्तानी वाली भारतीय टीम में उन्होंने एन जगदीशन की जगह ली। बंगाल के लिये तीन रणजी मैचों में अच्छा प्रदर्शन करने वाले शमी को टीम में जगह नहीं मिल सकी है। पैतीस वर्ष के शमी ने उत्तराखंड और गुजरात के खिलाफ बंगाल की जीत में अहम भूमिका निभाते हुए तीन मैचों में 93 ओवर डालकर 15 से अधिक विकेट लिए।

टेस्ट टीम

शुभमन गिल (कप्तान), ऋषभ पंत, यशस्वी जायसवाल, केएल राहुल, साइ सुदर्शन, देवदत्त पडिक्कल, ध्रुव जुरेल, रविंद्र जडेजा, वॉशिंगटन सुंदर, जसप्रीत बुमराह, अक्षर पटेल, नीतिश कुमार रेड्डी, मोहम्मद सिराज, कुलदीप यादव और आकाश दीप।

भारत ए वनडे टीम

तिलक वर्मा (कप्तान), रूतुराज गायकवाड़, अभिषेक शर्मा, रियान पराग, ईशान किशन, आयुष बडोनी, निशांत सिंधु, विपराज निगम, मानव सुतार, हर्षित राणा, अर्शदीप सिंह, प्रसिद्ध कृष्णा, खलील अहमद, प्रभसिमरन सिंह।

पहला टेस्ट कोलकाता में 14 नवंबर से
दूसरा टेस्ट गुवाहाटी में 22 नवंबर से

चयनकर्ताओं को शायद लगा होगा कि अब वह टेस्ट क्रिकेट में लंबे स्पैल नहीं डाल सकेंगे चूंकि घरेलू क्रिकेट में भी स्पैल के बीच उन्होंने ब्रेक लिए।

दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टेस्ट सीरीज के बाद अगले छह महीने भारत को टेस्ट क्रिकेट नहीं खेलना है जिसे देखकर लगता है कि शमी के लिये दरवाजे बंद हो चुके हैं। बंगाल के तेज गेंदबाज आकाश दीप ने भी कंधे की चोट से उबरकर वापसी की है। वह भारत ए टीम का भी हिस्सा हैं। भारत के पास तेज गेंदबाजों में जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद सिराज हैं जबकि स्पिन की कमान रविंद्र जडेजा, अक्षर पटेल, कुलदीप यादव और हरफनमौला वॉशिंगटन सुंदर के पास होगी।

चयनकर्ताओं ने दक्षिण अफ्रीका ए के खिलाफ तीन मैचों की सीरीज के लिए भारत ए वनडे टीम की भी घोषणा की है जिसमे तिलक वर्मा को कप्तान बनाया गया है। ये मैच 13, 16 और 19 नवंबर को राजकोट में होंगे।

स्टार विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत। एजेंसी

दक्षिण अफ्रीका के पास सीरीज जीतने का बड़ा मौका : बावुमा

बेंगलुरु : दक्षिण अफ्रीका के कप्तान तेम्बा बावुमा का मानना है कि विराट कोहली और रोहित शर्मा के संन्यास के बावजूद भारत के खिलाफ आगामी टेस्ट सीरीज आसान नहीं होगी लेकिन उन्होंने कहा कि अपने बेहतरीन स्पिन आक्रमण के दम पर उनकी टीम के पास 25 साल बाद भारत में सीरीज जीतने का सुनहरा मौका है। दक्षिण अफ्रीका ने आखिरी बार 1999-2000 में दिवंगत हैंसी क्रोन्ये की कप्तानी में भारत में पहली टेस्ट शृंखला जीती थी। दो मैचों की शृंखला का दूसरा मैच 14 नवंबर से कोलकाता में खेला जाएगा। बावुमा ने कहा दक्षिण आफ्रीका टीम ने लंबे समय से भारत में टेस्ट शृंखला नहीं जीती है। इस बार हमारे पास सुनहरा मौका है। उन्होंने भारत ए और दक्षिण आफ्रीका ए के बीच दूसरे चार दिवसीय मैच से पहले चुनिंदा मीडिया से बातचीत में कहा विश्व चैम्पियन होने के नाते हमसे काफी अपेक्षाएं हैं। भारत में खेलना हमेशा कठिन होता है। भारत के पास बेहतरीन युवा खिलाड़ी हैं। बावुमा ने कहा विराट और रोहित ने लंबे समय तक भारत के लिए खेला और भारत को वहां पहुंचाया, जहां टीम आज है। युवा खिलाड़ी उनकी जगह लेने की कोशिश कर रहे हैं। यह हालांकि बहुत बड़ी चुनौती है। जहां तक हमारी बात है तो हम पूरी तैयारी के साथ आये हैं और हमें यहां मिलने वाली चुनौती का अहसास है। हम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे। बावुमा की नजरें अच्छे स्पिन आक्रमण के खिलाफ भारतीय बल्लेबाजों की कमी का फायदा उठाने पर भी लगी हैं। न्यूजीलैंड के स्पिनरों के खिलाफ भारतीय बल्लेबाजों को हुई परेशानी उनकी नजरों से बच नहीं सकी है। बावुमा ने कहा गेंदबाजी हमेशा से हमारी ताकत रही है। हम इस बार बेहतर स्पिन आक्रमण के साथ आये हैं।

शर्मा और चक्रवर्ती पुरुष टी-20 रैंकिंग में शीर्ष पर

दुबई : सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा और स्पिनर वरुण चक्रवर्ती ने आईसीसी पुरुष टी-20 खिलाड़ियों की बुधवार को जारी रैंकिंग में बल्लेबाजों और गेंदबाजों में शीर्ष स्थान कायम रखा है।

अभिषेक बल्लेबाजों की रैंकिंग में 925 रेटिंग अंक लेकर शीर्ष पर है जबकि इंग्लैंड के फिल साल्ट और भारत के तिलक वर्मा उनके बाद हैं। भारत के टी20 कप्तान सूर्यकुमार यादव आठवें स्थान पर हैं। गेंदबाजों में चक्रवर्ती शीर्ष पर हैं जबकि आस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड दसवें स्थान पर आ गए हैं। वेस्टइंडीज के अकील हुसैन दूसरे और अफगानिस्तान के राशिद खान तीसरे स्थान पर हैं।

भारत का कोई अन्य गेंदबाज शीर्ष दस में नहीं है। हरफनमौलाओं की सूची में भारत के हार्दिक पंड्या चौथे स्थान पर हैं। पाकिस्तान के सईम अयूब शीर्ष पर, जिम्बाब्वे के सिकंदर रजा दूसरे और वेस्टइंडीज के रोस्टन चेस तीसरे स्थान पर हैं।

कुलदीप, सिराज और राहुल की नजर अच्छी तैयारी पर

बेंगलुरु, एजेंसी

- भारत ए और दक्षिण अफ्रीका ए का मुकाबला आज से

भारत ए के कप्तान ऋषभ पंत पहले मैच की तरह अपनी फॉर्म और फिटनेस बरकरार रखने के इरादे से मैदान पर उतरेंगे जबकि मोहम्मद सिराज और कुलदीप यादव जैसे खिलाड़ी गुरुवार से यहां तेम्बा बावुमा की अगुवाई वाली दक्षिण अफ्रीका ए के खिलाफ होने वाले दूसरे चार दिवसीय मैच में लाल गेंद से महत्वपूर्ण मैच अभ्यास हासिल करने की कोशिश करेंगे।

पंत ने बीसीसीआई सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के इसी मैदान पर पिछले सप्ताह खेले गए पहले मैच में विकेटकीपर के रूप में 139.3 ओवर बिना किसी परेशानी के खेले और साथ ही बल्लेबाज के रूप में 133 गेंदें खेली। उन्होंने दूसरी पारी में 90 रन बनाकर अपनी बल्लेबाजी फॉर्म का भी अच्छा परिचय दिया। फिटनेस की चिंता पूरी तरह से पीछे छूट जाने के बाद बाएं हाथ का यह बल्लेबाज अब 14 नवंबर से दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ शुरू हो रही दो मैचों की टेस्ट शृंखला से पहले एक बार फिर अपने खेल के चरम पर पहुंचने की कोशिश करेगा।

सिराज, केएल राहुल और कुलदीप स्वदेश लौटने से पहले भारत के ऑस्ट्रेलिया के मौजूदा सफेद गेंद के दौरे का हिस्सा थे और अब वे दक्षिण अफ्रीका ए जैसी प्रतिस्पर्धी टीम के खिलाफ अपने लाल गेंद के कौशल को निखार सकते हैं।

स्मृति, जेमिमा हरमनप्रीत टीम की नई ब्रांड : घावरी

मुंबई : भारत के पूर्व तेज गेंदबाज करसन घावरी ने महिला वनडे विश्व कप विजेता भारतीय टीम की जमकर प्रशंसा करते हुए बुधवार को हरमनप्रीत कौर, जेमिमा रोड्रिग्स और स्मृति मंधाना को भारतीय क्रिकेट का नया ब्रांड करार दिया।

भारतीय महिला टीम ने रविवार को नवी मुंबई में खेले गए फाइनल में दक्षिण अफ्रीका को 52 रन से हराकर पहली बार अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद का कोई टूर्नामेंट जीता। घावरी ने कहा भारतीय महिला टीम की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है। उन्होंने पूरे विश्व कप में अच्छा प्रदर्शन किया विशेष कर ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ आखिरी दो मैच में उनका प्रदर्शन शानदार रहा। वह विश्व कप जीतने की असली हकदार थी।

ओलंपिक की तैयारी | अंतर्राष्ट्रीय भारोत्तोलन महासंघ ने लॉस एंजेलिस 2028 के लिए ओलंपिक भार वर्गों का किया पुनर्गठन

मीराबाई चानू अपना भार वर्ग बदलने को तैयार

नई दिल्ली, एजेंसी

अंतर्राष्ट्रीय भारोत्तोलन महासंघ (आईडब्ल्यूएफ) द्वारा सोमवार को घोषित लॉस एंजेलिस 2028 के लिए ओलंपिक भार वर्गों के पुनर्गठन के बाद भारतीय स्टार मीराबाई चानू को एक वर्ग ऊपर जाने के लिए मजबूर होना पड़ेगा।

टोक्यो 2020 में महिलाओं के 49 किग्रा वर्ग में रजत पदक जीतने वाली और पेरिस 2024 में इसी वर्ग में चौथे स्थान पर रहने वाली मीराबाई चानू अब लॉस एंजेलिस में इस वर्ग में भाग नहीं ले पाएंगी। लॉस एंजेलिस 2028 ओलंपिक में भारोत्तोलन के लिए महिलाओं की न्यूनतम श्रेणी अब 53 किग्रा होगी। आईडब्ल्यूएफ ने लॉस एंजेलिस 2028 में 12 नए वर्गों की पुष्टि की है- पुरुषों और महिलाओं के लिए छह-छह। पेरिस 2024 में प्रत्येक लिंग के लिए पांच वर्ग थे।

लॉस एंजेलिस 2028 ओलंपिक भारोत्तोलन भार वर्ग पुरुषः 65 किग्रा, 75 किग्रा, 85 किग्रा, 95 किग्रा, 110 किग्रा, 110 किग्रा महिलाः 53 किग्रा, 61 किग्रा, 69 किग्रा, 77 किग्रा, 86 किग्रा, 86 किग्रा पेरिस 2024 में, पुरुषों के लिए 61 किग्रा, 73 किग्रा, 89 किग्रा, 102 किग्रा और 102 किग्रा और महिलाओं के लिए 49 किग्रा, 59 किग्रा, 71 किग्रा, 81 किग्रा और 81 किग्रा थे। आईडब्ल्यूएफ ने अब एक साल से भी कम समय में दो बार भार वर्ग बदले हैं। भारत के मुख्य राष्ट्रीय कोच विजय शर्मा का मानना है कि यह बदलाव मीराबाई के पक्ष में काम कर सकता है। शर्मा ने कहा यह (49 किग्रा हटाना) मीराबाई के लिए अच्छी बात है क्योंकि 48 किग्रा तक अपना वजन कम करना एक कठिन प्रक्रिया थी। 31 वर्षीय मीराबाई ने इस साल 48 किग्रा वर्ग में राष्ट्रमंडल चैंपियनशिप में स्वर्ण और विश्व चैंपियनशिप में रजत पदक जीता।

ओलंपिक कार्यक्रम से हटा 49 किग्रा वर्ग

इस साल की शुरुआत में, आईडब्ल्यूएफ द्वारा ओलंपिक कार्यक्रम से 49 किग्रा वर्ग को हटाने के बाद, चानू 48 किग्रा वर्ग में आ गईं। 49 किग्रा वर्ग को तब से आईडब्ल्यूएफ के विश्व चैंपियनशिप जैसे आयोजनों में बहाल कर दिया गया है, लेकिन इसे ओलंपिक में शामिल नहीं किया जाएगा। मीराबाई चानू की सभी प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय उपलब्धियां – जिनमें तीन विश्व भारोत्तोलन चैंपियनशिप पदक और तीन राष्ट्रमंडल खेल पदक शामिल हैं – 50 किग्रा से कम भार वर्ग में ही आई हैं।